हिन्दी संस्करण नं0 85

एक्ट्स

परमेश्वर के उत्तराधिकारी:

आपका आत्मिक लेपालकपन एवम् स्वर्गीय नागरिकता

एक्ट्स

परमेश्वर के उत्तराधिकारी:
आपका आत्मिक लेपालकपन
एवम् स्वर्गीय नागरिकता

WORLD MAP ACTS INDIA
Post Box No. 1037
67, Beracah Road
Kilpauk, Chennai - 600 010

ACTS HINDI EDITION

HEIRS OF GOD:

YOUR SPIRITUAL ADOPTION & HEAVENLY CITIZENSHIP

English Acts, Vol. 29 / No. 1

Founder : Ralph Mahoney
International Editors : Frank and Wendy Parrish
Managing Editor, India : Mr. E. Velayutham

Hindi Translation ACTS HI-85
HI-85 / 2010

© 2010

WORLD MAP ACTS INDIA
Post Box No. 1037
67, Beracah Road
Kilpauk, Chennai - 600 010

लेपालकपन : परमेश्वर के उत्तराधिकारी!

द्वारा – रेव्ह. फ्रेंक आर. पैरिश

आत्मिक लेपालकपन की बाइबल आधारित शिक्षा का अध्ययन विस्तारपूर्वक नहीं किया गया है, ना ही इसे अच्छी तरह समझा गया है। फिर भी ये आत्मिक सिद्धान्त महत्वपूर्ण और बड़े सत्य के विषय हमारे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध को प्रगट करता है।

मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप प्रार्थनामय होकर इस आत्मिक लेपालकपन की बाइबल आधारित शिक्षा का अध्ययन करें। जैसे आप अध्ययन करते हैं ईमानदारी से पवित्र आत्मा से मांगें कि वह इस सत्य को समझने और हृदय से स्वीकार करने में आपकी सहायता करें। यदि आप इन चीज़ों को करते हो, तो लेपालकपन का आत्मिक सत्य आपके साथ जीवित प्रभु के व्यक्तिगत सम्बंध को बदल देगा और सेवकाई की सेवा को पुनः रूप देगा जो आप उसको और कलीसिया को देते हैं।

परिचय

लेपालकपन का विचार जैसा आज संसार में व्यवहार में लाया जाता है ये वो है जिससे हम सब परिचित हैं। ये साधारणतः जब एक दयालु ह्रदय का जवान अनचाहे या अनाथ बच्चे को लेता है और उस बच्चे को उनके परिवार का हिस्सा बनाता है। इस प्रकार का लेपालकपन अधिकतर संसार में इसी विधि से किया जाता है और हजारों वर्षों से किया जाता रहा है।

बाइबल को भी लेपालकपन के लिये बहुत कुछ कहना है। फिर भी जब धर्मशास्त्र लेपालकपन का संदर्भ देता है, ये शब्द किसी अनाथ के विषय लेने की अपेक्षा अधिक प्रस्तुत करता है।

पवित्र आत्मा क्या चाहता है कि हम लेपालकपन की विचारधारा के विषय जानें? उसने पौलुस प्रेरित को प्रेरित किया कि लिखेः *"क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु **लेपालकपन** की आत्मा मिली है जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं"* (रोमियों 8:15)। *"और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से उदाहरण, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके **लेपालक** पुत्र हों"* (इफिसियों 1:5)। *"परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को **लेपालक** होने का पद मिले"* (गलातियों 4:4–5)।

परमेश्वर ने दैवीय रूप से बहुमूल्य सत्य को प्रगट किया अपने सेवक के बाइबल आधारित लिखावट प्रगट करते हैं कि वह चाहता है कि हम जानें और उसे अपना लें। हमारे लेपालकपन के आधुनिक दिन की विचारधारा अवश्य ही स्वर्गीय पिता के द्वारा *आत्मिक लेपालकपन* का अभिप्राय है। 🕮

भाग I

लेपालकपन का प्रयोग

नये नियम में पौलुस के लेपालकपन के संदर्भ को बेहतर तरीके से समझना, इसे और भी करीबी से देखना उपयोगी होगा कि उसके दिनों में संस्कृति में लेपालकपन की रीति कैसे मनाई जाती है।

क. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

1. यहूदी व मध्यपूर्व की संस्कृतियां

बहुत सी पूर्वी संस्कृतियां किसी न किसी रूप से लेपालकपन को मानती हैं। प्राचीन ऐतिहासिक लेख प्रगट करता है कि बाबुल के लोग, नूजी, यूगेरित, और दूसरे लोग जो इस्राएलियों के समकालीन हैं सभी लेपालकपन का अभ्यास करते थे।

"लेपालकपन" के लिये वास्तविक इब्रानी शब्द पुराने नियम में देखने में नहीं आता फिर भी, पर एक बच्चा सुविधाओं को प्राप्त करता है, नाम और दूसरे परिवार के लाभ पुराने नियम के हिस्सों में देखे गये हैं:

- अब्राम ने अपने परिवार का वारिस होने के लिये अपने सेवक का प्रस्ताव रखा (उत्पत्ति 15:1–4)।
- अब्राम और सारा ने हाज़रा के पुत्र को अब्राम का उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार करने की इच्छा प्रगट की (उत्पत्ति 16:1–3)।

- यूसुफ के दो पुत्रों को लेपालकपन जैसे याकूब के दो पुत्र (उत्पत्ति 48:5)।
- मूसा का गोद लिया जाना फिरौन की बेटी के द्वारा (निर्गमन 2:10)।
- गनूबत जो फिरौन के महल में उसके एक पुत्र की तरह पाला गया था (1 राजा 11:19–20)।
- मोर्दकै द्वारा ऐस्तर का लेपालकपन (एस्तेर 2:7,15)।

लेपालकपन का विचार इस्राएल के साहित्य में उपस्थित है। (देखें नीतिवचन 17:2, 29:21)। ये संदर्भ दासों के लेपालकपन एवं स्वतंत्र पिता के द्वारा दास माता से उत्पन्न बच्चे के लिये नया तरीका दिया गया कि सम्पत्ति का वारिस है (उत्पत्ति 21:1–10; 30:1–13)।

परमेश्वर के द्वारा लेपालक बनाया गया

पुराने नियम में लेपालकपन की सबसे महत्वपूर्ण तस्वीर ये है कि परमेश्वर का इस्राएल को अपने बालक की तरह गोद ले लिया जाना।

इस्राएल के लोगों को परमेश्वर के पुत्रों या सन्तान होने का संदर्भ दिया जाता है जब वे अपनी मिस्र की दासत्वता से छुड़ाये गये (निर्गमन 4:22, 14:2, 32:5, 18–20)। यहां तक कि जब परमेश्वर न्याय में आया और इस्राएल के साथ अपनी अप्रसन्नता की घोषणा की, उसने अभी भी इस्राएल को अपना पुत्र कहा (यशायाह 1:2–4, यिर्मयाह 3:19; होशै 1:10, 11:1–2)।

लेपालकपन की विचारधारा पुराने नियम में बहुत पाई जाती है। इस प्रकार ये भी यहूदियों की संस्कृति और धार्मिक प्रशिक्षण में मौजूद है, जिसमें प्रेरित पौलुस के जीवन के दौरान है।

2. रोमी और यूनानी संस्कृतियां

स्पष्ट रूप से पौलुस आत्मिक लेपालकपन का वर्णन करता है जिसमें विचार और मिस्र से इस्राएल के विकास की तस्वीर शामिल है, पर पौलुस भी अपने समय में रोमी संस्कृति में बढ़ाया गया था। ये रोमी लोग थे जिन्होंने लेपालकपन का वर्णन है जिसमें विचार और मिस्र से इस्राएल के निकास की तस्वीर शामिल है, पर पौलुस भी अपने समय में रोमी संस्कृति में बढ़ाया गया था। ये रोमी लोग थे जिन्होंने लेपालकपन की संस्कृति को पूरी रीति से विकसित किया। इसने दोनों सार्वजनिक कार्यों और कानूनी संस्था की सेवा करते हैं।

इस प्रकार पौलुस हमारे आत्मिक लेपालकपन के विषय में वर्णन करता है। वह बड़ी कल्पना और दोनों संस्कृतियों को मिलता है . . .

- यहूदी लोगों का इतिहास और
- रोमी संस्कृति की लेपालकपन की प्रथा एवं नियम जिसमें पौलुस का पालन पोषण हुआ था।

ये दिमाग में रखें कि ये दो सांस्कृतिक प्रथाएं हमें उस विचारधारा को समझने में सहायता करेगी कि जो पौलुस ने आत्मिक लेपालकपन के लिये लिखा।

रोमी लेपालकपन

एक विशेष रोमी परिवार में पिता ही पूर्ण शासक होता था। परिवार के सभी खून सम्बंधी व्यक्ति उसके ही आधीन होते थे। ये उनके लिये भी सच था कि जो कानूनी तौर से अपने परिवार में लेपालकपन के द्वारा जोड़े गये थे।

रोमियों की लेपालकपन की प्रक्रिया *"सेरेमनी ऑफ कनवेयन्स"* के द्वारा पूर्ण होता है। ये विधि या जश्न रोमी न्याय के अदालत

में उस व्यक्ति को जो गोद लिया गया लाया जाता और जिस परिवार ने उसे स्वीकार किया उसमें उसे **स्थानान्तरित** कर दिया जाता है। इस स्थानान्तरित की गवाही एक दूसरा व्यक्ति भी देता है। ये लेपालकपन किसी भी उम्र में किया जा सकता है।

रोमी समाज के लेपालकपन की प्रक्रिया को समझने की मुख्य बातें ये हैं: **(क) गोद लेने वाले पिता का अधिकार; (ख) लेपालकपन का पूर्ण परिवर्तन जो व्यक्ति गोद लिया गया है उसके जीवन में होता है।**

लेपालकपन में व्यक्ति जो लेपालक बनाया गया उसमें बहुत से परिवर्तन शामिल हैं जैसेः

- पूर्व की स्वामिभक्ति या सम्बन्ध सब समाप्त हो जाते।
- पूर्व के सब कर्ज या बंधन सब समाप्त हो जाते या नये परिवार द्वारा अदा कर दिये जाते हैं।
- लेपालक बनाया गया व्यक्ति पिता की सम्पत्ति का वारिस बना दिया जाता है।
- लेपालक बनाया व्यक्ति लेपालक पिता और नये परिवार के साथ और अधिक संबंध रखता है, जो लेपालक व्यक्ति के स्वरूप और दृष्टिकोण स्वयं के जीवन के लिये व संसार के सन्मुख प्रगट/स्पष्ट करता है।

लेपालक पुत्र अपने नये पिता के पूर्ण अधिकार के अन्दर होता है, जिसका मतलब नया पिताः

- लेपालक व्यक्ति के धन सम्पत्ति, जीवन का स्वामी समझा जाता है।
- लेपालक व्यक्ति के व्यवहार को अनुशासित करने का अधिकार होता है।
- लेपालक व्यक्ति की हर हरकत का जिम्मेवार हो जाता है।

लेपालकपन की कार्यवाही का अर्थ ये है कि दोनों पार्टियां एक दूसरे की सहायता व सम्बन्ध बनाये रखने के लिये समर्पित हैं। पिता लेपालक व्यक्ति की देखभाल करेगा व सहारा देगा वैसे ही लेपालक व्यक्ति नये परिवार में अपना पूरा योगदान नये परिवार में देने की समर्पित होगा।

लेपालकपन ने बहुत से महत्वपूर्ण अधिकार और सुविधायें नये वारिस को दी हैं। फिर भी लेपालक व्यक्ति को अपनी जिम्मेवारियां और कर्तव्य निभाने होंगे।

अपने नये पिता के प्रति दत्तक पुत्र की आज्ञाकारिता और समर्पण को न्यायिक रूप से स्वीकार किया गया है। लेपालक व्यक्ति को अपने नये परिवार और पिता पर शर्म और अनादर नहीं लाना है, बल्कि उसे इस तरह से जीना है कि जो उसके प्रभाव और पिता तथा परिवार के सम्मान में जोड़े। 🕮

भाग II

धर्मशास्त्र से लेपालकपन के सिद्धान्त

नये नियम में "लेपालकपन" के लिये यूनानी शब्द *"हुयोथेसिया"* जो "पुत्र" और "रखने" के लिये है। ये एक *बच्चे* को रखने से अधिक है – ये *पुत्र* के स्थान में रखना है। इसका महत्व इस शिक्षा में बाद में अध्ययन किया जायेगा।

क. पौलुस का लेपालकपन को इस्तेमाल करना

केवल पौलुस ही अकेला नये नियम का लेखक है जिसने इस शब्द "लेपालकपन" शब्द का इस्तेमाल किया है। पौलुस ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर इस "शब्द–तस्वीर" पांच बार नये नियम में इस्तेमाल किया।

शब्द **"लेपालकपन"** एक बार इस्राएल के संदर्भ में किया गया (रोमियों 9:4)। ये तीन बार नये जन्में विश्वासी के जीवन के विषय इस्तेमाल किया गया (रोमियों 8:12–17; गलातियों 4:1–5; इफिसियों 1:3–6)। और अन्त में, पौलुस "लेपालकपन" को हमारी भविष्य की आशा के लिये इस्तेमाल करता है जब हम मसीह के दुबारा वापस आने पर अपने विश्वास की पूर्ति का अनुभव करेंगे (रोमियों 8:22,23)।

1. लेपालकपन को बताना

इससे पहले कि हम लेपालकपन का अध्ययन करें, ये महत्वपूर्ण

है कि संक्षिप्त में दूसरा बाइबल आधारित सत्य को प्रस्तुत करना जो हमारी समझ में जोड़ देते हैं। जब बाइबल ये शब्द पुत्र इस्तेमाल करे "तो मसीह के अनुयायी के संदर्भ में, ये शब्द दोनों पुरुष और स्त्री को शामिल करता है। इस प्रकार इस शिक्षण में हम बाइबल आधारित शब्द "पुत्र" इस्तेमाल करेंगे जब लेपालक पुत्र का संदर्भ देते हैं जिसका मतलब या तो पुरुष या स्त्री हो सकता है।

ये "पुत्रत्व" **दोनों पुरुष और महिला** विश्वासियों के लिये है जिसका मतलब है परमेश्वर की ओर से पूर्ण मीरास हर व्यक्ति द्वारा स्वीकार की जाती जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं (देखें गलातियों 3:26–28 और कुलुस्सियों 3:11)। पुरुष और महिला उत्तराधिकारी में फर्क नहीं है। हर व्यक्ति मसीह यीशु में अपनी मीरास के लिये बराबर हैं पूरे लाभ के लिये और एक पुत्र होने का सौभाग्य।

मानव लेपालकपन की सीमाएं

लेपालकपन के आत्मिक सिद्धान्त को पूर्ण रूप से समझने के लिये, हमें स्पष्ट रूप से बताना है कि ये नये नियम में किस प्रकार उपयोग हुआ है। पौलुस का इस शब्द का उपयोग पूरी तरह भिन्न है उसमें जो हम प्रतिदिन के जीवन में इसे सोचें।

हम में से अधिकतर लेपालकपन को इस तरह समझते हैं कि बालक जो परिवार में पैदा नहीं हुआ वह परिवार का पूरा सदस्य बन सकता है। ये लेपालक बच्चों की विशेषता गोद लेने वाले माता–पिता से बहुत भिन्न हो सकती है। लेपालक बच्चा और गोद लेने वाले माता–पिता ऊंचाई–डील–डौल में भिन्न हो सकते हैं, व्यक्तित्व में, भावनात्मक प्रतिक्रिया में या आदतों में या बोलने के तरीकों में।

सामान्यतः गोद लेने वाले माता–पिता अनाथ बच्चे की क्षमता को पहचानते हैं जो उन्हें उसकी ओर खींचता है। ये उसका

शारीरिक दिखावट, प्रसन्न व्यक्तित्व, आदि। शायद ये अनचाहे बच्चे की आवश्यक जरूरतें या बच्चे के शारीरिक या मानसिक सीमाओं के प्रति तरस और बच्चे की सहायता करने की इच्छा।

गोद लेने के उद्देश्य जो भी रहे हों, मानव को लेपालक बनाना अपने आप लेपालक बच्चे में नहीं आता, स्वाभाव, या दूसरी विशेषतायें जो गोद लेने वाले माता–पिता की विशेषताएं होती हैं।

पर इस मामले में मानव लेपालकपन की प्रक्रिया और आत्मिक लेपालकपन जो परमेश्वर के परिवार में है। इनके बीच बहुत अद्‌भुत भिन्नताएं हैं।

नई सृष्टि

प्रथम व सबसे महत्वपूर्ण भिन्नता वह तथ्य है जो हर व्यक्ति जो परमेश्वर द्वारा लेपालक है (हुईओथेसिया = पुत्र की तरह रखा गया) वह **प्रथम** नया जन्म पाया परमेश्वर का बालक है (यूहन्ना 1:12–13)। परमेश्वर के द्वारा लेपालक बनाया जाना एक पुत्र बनाना नहीं है बल्कि **एक को रखना जो पहले ही से पुत्र बन गया,** मसीह के उद्धार के द्वारा।

जब एक व्यक्ति मसीह में विश्वास के द्वारा अनुग्रह से नया जन्म पाता है (इफिसियों 2:8–10) कि व्यक्ति एकदम परमेश्वर के द्वारा उसके बालक की तरह स्वीकार किया गया है यीशु की बलिदान की मृत्यु और पुनरुत्थान ने हर व्यक्ति को जो यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करता है ये उपलब्ध कराता है कि परमेश्वर की सन्तान की तरह पुनः स्थापित हो जाये। तब परमेश्वर एकदम और प्रभुत्व में उस व्यक्ति को अपने परिवार में लेपालक बना लेता है! आत्मिक लेपालकपन उस समय होता है जब व्यक्ति प्रभु यीशु को उद्धारकर्ता करके स्वीकार कर लेता और आत्मा में नया जन्म पाता है।

बाइबल ये प्रगट करती है कि हमारा जब उद्धार हो जाता है तो हम मसीह में एक नई सृष्टि बन जाते हैं (गलातियों 6:15) हमारे उद्धार पर जो पुराना स्वाभाव जो कभी हमारे साथ था वह बदल गया है (1 कुरिन्थियों 6:9–11)। हम "नया जन्म" पाये हुए बन जाते और हमारे लिये सब कुछ नया हो जाता है (2 कुरिन्थियों 5:17)। हम तब तक अपना जीवन क्षमा किये हुए की तरह बिताते हैं, खून से धोये हुए व्यक्ति। हमारे पास मसीह की उपस्थिति है जो पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे अन्दर है अब बास करता है। हम अपने आंतरिक मनुष्य में बिल्कुल नये व्यक्ति हैं। प्रथम बार ये नये आत्मिक जीवन का आरम्भ है।

इस बिल्कुल नये व्यक्ति में तब हम एक़दम नये परिवार में रख दिये गये हैं परमेश्वर का परिवार। हम एक अनाथ से बढ़कर हैं जो भिन्न परिवार में चला गया है। हम परमेश्वर के परिवार में एक *नये जन्में बच्चे* की तरह हैं। हम मसीह की देह के पूर्ण सदस्य हैं।

हमें अपने पुत्रत्व को नहीं कमाना है या अपनी योग्यता नहीं रखनी इससे पहले कि हम परमेश्वर के परिवार में स्वीकार किये गये। हमारे उद्धार के क्षण से हमें स्वर्गीय पिता का पुत्र समझा गया है!

एकदम-पूर्ण पुत्रत्व!

इस एकदम आत्मिक लेपालकपन का भी अर्थ ये है कि हमारे पास एकदम **मसीही में परिपक्वता** का स्थान है। तो तब पुत्र होने की **सभी सुविधायें** व **जिम्मेवारियां** परमेश्वर के परिवार में एकदम हमारी हैं।

हमारे जीवन की परमेश्वर की उम्मीदों में "बचपन का पहलू" नहीं है। हमें एकदम पवित्रता का जीवन जीना आरम्भ करना है,

साथ ही सेवा वा मसीही जिम्मेवारियां अपनी पूर्ण योग्यता से और जैसा परमेश्वर हमें दैविय अनुग्रह और इसे करने की सहायता देती है (फिलिप्पियों 1:6)। हमें परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य की तरह जीना आरम्भ करना है, उसकी आज्ञाओं का पालन करना और अपने स्वर्गीय पिता की तरह सेवा करना है।

ये सही है कि हर नये मसीही की आवश्यकता है कि मसीह में विश्वासी की तरह हमें बढ़ना और परिपक्व होना है। हम एकाएक ना पूरे परिपक्व होंगे ना ही सिद्ध होएंगे (फिलिप्पियों 2:12,13)। पर इसके अलावा ये हमारे जानने के लिये बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे उद्धार के समय हम आत्मिक रूप से **पूरी तरह पुत्र की नाईं** रख दिये गये हैं। हम एकदम से सब लाभ व जिम्मेवारियां, परमेश्वर के परिवार के सदस्य होने पर पाते हैं भले ही हमारी मसीह में परिपक्वता का स्तर कोई क्यों न हो। इसका यही मतलब है कि एक परिपक्व पुत्र का **स्थान** देना।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टर परमेश्वर की ओर से ये आत्मिक पद एक कारण है कि ये **बहुत महत्वपूर्ण** है कि नये विश्वासियों को सिखाना और प्रशिक्षित करना। उन्हें समझना है कि परमेश्वर कौन है, और उसके उनके लिये यीशु के द्वारा क्या किया है और वह उनसे क्या उम्मीद करता है। उन्हें सीखना चाहिये कि परमेश्वर के प्रिय पुत्र होकर कैसे कार्य करना चाहिये, और उसके राजदूत होकर इस पृथ्वी पर कैसे जीना है।

किसी भी छोटे बच्चे की तरह, वे जो "मसीह में बच्चे" हैं उनका पोषण किया जाना चाहिये, सिखाये वा प्रशिक्षित किये जाना चाहिये। परमेश्वर के झुण्ड के चरवाहे होना, ये हमारी प्राथमिक बुलाहट है (1 पतरस 5:2)।

ये पास्टर की भूमिका एक उच्च बुलाहट है और महान जिम्मेवारी साथ लेकर चलती है। परमेश्वर हमें अपने मेमनों को सौंपता है, हमें उनकी देखभाल करनी, परमेश्वर के वचन से खिलाना है और उनकी अगुवाई करना और ये जानना कि प्रभु में कैसे चलना है। हमें बुद्धिमान होने की आवश्यकता नहीं है, ना वरदान होना, या बहुत उच्च शिक्षा का होना, पर हमें विश्वासयोग्य होना चाहिये जैसे मूसा था (इब्रानियों 3:2)।

पास्टर की तरह हमें भेड़ों को प्रेम करने व उन्हें उनसे बचाने जो उनको हानि पहुंचा सकते हैं, बुलाया गया है (प्रेरित 20:27–29)। हमें प्रेम से झुण्ड की सेवा करनी है उन्हें परिपक्व होने के लिये सहायता करने और हमारे स्वर्गीय पिता की पुत्र–पुत्रियों की तरह बढ़ने के लिये सहायता करना।

कलीसिया के अगुवे होकर, हमें अपना सब कुछ उत्तमता से करना है कि विश्वासयोग्यता से महान चरवाहे को उसकी भेड़ों के लिये प्रस्तुत करें। हमें परमेश्वर के वचन को सही तरह से सिखाने का प्रयास करना चाहिये। उनकी अगुवाई करना जिन्हें हम उनकी अगुवाई करते कि वे अपने स्वर्गीय पिता को जानें और समझें। एक दिन हम हिसाब देंगे कि किस विश्वासयोग्यता के साथ हमने इस पवित्र बुलाहट को पूरा किया (इब्रानियों 13:17; 1 पतरस 5:2–4)।

मानव विचारधारा को गलत तरह से लिया गया

बहुधा धार्मिक लेपालकपन के विषय धर्मशास्त्र का अनुवाद गलत तरह से किया जाता है। ये हमारे परमेश्वर के उद्धार के बाद परमेश्वर के सामने खड़े रहने के लिये गलतफहमी की ओर ले जाता है।

मानव समाज में, ये साधारणतः व्यस्क परिपक्व पुत्र होता है जिसको पिता की सम्पत्ति का वारिस होने का लाभ मिलता है। कुछ

लोग गलती से इस मानव विचारधारा को लागू करते हैं जहां पौलुस लेपालकपन के सिद्धान्त के विषय में लिखता है (गलातियों 4:1–7), पर इससे पहले कि हम इस हिस्से की जांच करें आइये, गलातियों के इससे पहले अध्याय को देखें। ये हमें पौलुस प्रेरित के आत्मिक लेपालकपन के वर्णन के विषय में उसके संदर्भ को प्रगट करने में सहायता करेगा।

व्यवस्था का अभिप्राय

पौलुस जोरदारी से बहस करता है कि व्यवस्था के द्वारा कोई भी धर्मी नहीं ठहर सकता (गलातियों 3:10–14, 21–22; साथ में गलातियों 2:16; रोमियों 3:9–28 के भी देखो)। मनुष्य के लिये ये असम्भव है कि पूरी तरह व्यवस्था का पालन करें। इसलिये व्यवस्था कभी भी हमें उद्धार नहीं दे सकती या हमारा स्थान पुनः बना सकती कि जीवित परमेश्वर के पुत्र ठहरें।

पर व्यवस्था जैसे परमेश्वर के द्वारा दी गई है अभी भी उसका महान अभिप्राय हैः उसका अभिप्राय हमारे पापों को प्रगट करना था और हमारी एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता जो व्यवस्था की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें और हमें छुड़ा सके (गलातियों 3:19–22)।

तब पौलुस लेपालकपन के रोमी विशेषता को आगे दिखाता है कि कैसे परमेश्वर ने व्यवस्था का इस्तेमाल किया। धर्मशास्त्र बताता है कि "इससे पहले कि विश्वास (उद्धार) आया" हमें एक भण्डारी द्वारा "जांच/सुरक्षा" में रखा गया व्यवस्था के द्वारा और "व्यवस्था हमारी शिक्षक" थी (गलातियों 3:23,24)।

रोमियों के घरों में ये एक व्यस्क भन्डारी का होना सामान्य था या अभिभावक जो बच्चों की देखभाल करने और अनुशासित करने का जिम्मेवार था। इस प्रकार पौलुस विरोधाभास करता है

कि किसी भन्डारी द्वारा "जांच में रखा" जाये (व्यवस्था में) हमारे उद्धार पर पुत्र होने के पद या स्थान पर : *"क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर के सन्तान हो"* (गलातियों 3:26)।

पौलुस ने जो शब्द यूनानी में इस हिस्से में "पुत्रों" के लिये इस्तेमाल किया, वह *"हुईओस"* है। नोट करें कि ये वही मुख्य शब्द "लेपालकपन" के लिये इस्तेमाल किये गये हैं *(हुईओस/थेसिया, पुत्र/रखा जाना)* पौलुस का इस शब्द का उपयोग हमें प्रगट करता है कि जिस क्षण हमारा नया जन्म होता है हम अब व्यवस्था के "सरंक्षण" में नहीं हैं (गलातियों 3:25; रोमियों 7:6)। बल्कि हम परमेश्वर के प्रभुत्व के द्वारा **परमेश्वर के परिवार में पूरे पुत्रों** की तरह हैं। दूसरे शब्दों में, उद्धार के समय, परमेश्वर हमें एक *परिपक्व पुत्र* के स्थान पर रखता है।

अब दिमाग में इस संदर्भ के साथ, आइये, हम पौलुस का मुख्य हिस्सा हमारे आत्मिक लेपालकपन के बारे में देखें।

लेपालकपन के पहले हमारी आत्मिक दशा

"मैं यह कहता हूं कि वारिस जब जब बालक है यद्यपि सब वस्तुओं का स्वामी है तौभी उसमें और दास में कुछ भेद नहीं। परन्तु पिता के ठहराये हुए समय तक रक्षकों और भन्डारियों के वश में रहता है। वैसे ही हम भी जब बालक थे तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे। परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले और हमको लेपालक होने का पद मिले। और तुम जो पुत्र हो, इसलिये परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है हमारे हृदय में भेजा है। इसलिये तू अब

दास नहीं परन्तु पुत्र है और जब पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ" (गलातियों 4:1–7)।

इस हिस्से में पौलुस "शब्द–तस्वीर" इस्तेमाल कर रहा है जो रोमी संस्कृति के लेपालकपन की है कि आत्मिक सच्चाई को प्रगट करें। एक बच्चा अपने परिवार में एक दास से अपनी स्वतंत्रता में उससे अधिक है (पद 1)। फिर भी उसकी *क्षमता* है कि उसे पुत्र के स्थान पर रखें और लाभ प्राप्त करें, जब वह अपनी पूरी परिपक्वता में बढ़ता या जब पिता की मृत्यु हो गई हो।

तब पौलुस एक वर्णन देता है जैसे कि एक *"बच्चे"* की आत्मिक दशा पद 3 में देखें – कि वे *"संसार की चीज़ों के आधीन बंधन में"* हैं। ये एक मुख्य बिन्दू को प्रगट करता है आत्मिक लेपालकपन की समझ में।

लेपालकपन : एक मुफ्त वरदान

शब्द *"तत्व"* जो पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया। इसका नये नियम में दो अर्थ हैं। ये पुराने नियम की व्यवस्था के दो प्रारम्भिक सिद्धान्तों के विषय में बताते हैं और अन्यजातियों की मूर्तिपूजा की प्रथायें हैं (देखें गलातियों 4:8–11; कुलुस्सियों 2:16–23)।

यहूदियों की व्यवस्था और गैर यहूदी धर्म का प्रदर्शन थोड़ा सामान्य लगता है फिर भी जो उन दोनों ने अपने अभ्यास में किया वह वास्तविक उद्धार जो विश्वास के द्वारा मसीह में है उसे बदलना था और रीति रिवाजों के साथ पवित्र आत्मा की शक्ति और उपस्थिति, रीति रिवाज, मनुष्यों की प्रथायें हैं (देखें गलातियों 3:1–9)। पर ना तो व्यवस्था की रीति रिवाज़ ना ही गैर यहूदियों के धर्म के अभ्यास किसी के लिये उद्धार नहीं ला सकीं।

जब पौलुस उनके विषय में बोलता जो संसार के तत्वों के बंधन में थे, ये स्पष्ट है कि पौलुस **अविश्वासी** व्यक्ति की बात

कर रहा है (गलातियों 4:3)। वह उसका संदर्भ नहीं दे रहा था नया जन्म पाये हुए थे या परमेश्वर की चीज़ों में अपरिपक्व हैं।

इस प्रकार पौलुस ये नहीं कह रहा था कि हम केवल अपने आत्मिक पुत्रत्व को पाते हैं जब हम मसीह में परिपक्व होते हैं। पौलुस का "शब्द–तस्वीर" अपने अर्थ में स्पष्ट है कि हम परमेश्वर के पुत्र होने के स्थान को नहीं कमा सकते। बल्कि जब हम मसीह को अपना उद्धारकर्ता करके स्वीकार करते हैं, उद्धार के समय, **"बच्चा" एकदम उसका पुत्र बन जाता है।** हम पिता के साथ पूरे सम्बन्धों में पूरे उत्तराधिकारी की तरह परिपक्व स्थान पर रखे गये हैं।

ये स्थान पर रखना वह कुछ नहीं है कि जिसे हमें पूरा करने को चलना है। हम उस स्थान को नहीं कमा सकते जो परमेश्वर हमें मुफ्त में देता है, कि उसके पुत्र हों। बल्कि ये **मुफ्त वरदान** है। ये वरदान हमें समर्थ करता है कि **परमेश्वर की इच्छा** को पूरा करें और उसके नाम को अधिक महिमा लाये – हालिलूल्याह!

परमेश्वर का सिद्ध समय

पौलुस इस हिस्से में परमेश्वर के कार्यों को प्रगट करता जाता है जो मानव इतिहास में बहता है। मसीह के आने के पहले एक केवल वह चुन सकता था जो या तो झूठा गैर–यहूदी धर्म या यहूदी व्यवस्था और दोनों ही उद्धार नहीं ला सकते थे या किसी को परमेश्वर के साथ पुनः स्थापित कर दें।

पर सही क्षण में, जब *"समय पूरा हुआ परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा"* जिससे पुत्र व्यवस्था को पूरा करेगा (मत्ती 5:17,18) और अपने में उनके उद्धार को सम्भव करें।

पास्टर से पास्टर तक

गलातियों 4:8 में पौलुस लिखता है, *"भला, तब तो तुम परमेश्वर को न जानकर उनके दास थे जो स्वाभाव से परमेश्वर नहीं" तब पौलुस "कमजोरी और भीख मांगने के तत्व के विषय लिखता है"* (गलातियों 4:9)। ये स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा के द्वारा पौलुस दुष्ट आत्मा को मानव धार्मिक रीति रिवाजों और विचार ध ाराओं के साथ जोड़ रहा है।

जब लोग धार्मिक हैं तो दुष्टआत्माओं के राज्य के बारे में रूचि नहीं है। ये दुष्टात्माएं हैं जिन्होंने झूठे मानव धर्मों का अविष्कार किया और बढ़ावा दिया है और इन धोखों में दासत्वता को भी जो संसार के चारों और लोगों को नष्ट करती है।

फिर भी शैतान और उसके दुष्टात्माएं रूचि लेते हैं जब उनका आमना सामना परमेश्वर के सच्चे प्रेम से होता है। क्योंकि वे जानते हैं कि उनकी शक्ति मसीह यीशु के क्रूस पर तोड़ी गई थी (कुलुस्सियों 2:14,15; इब्रानियों 2:14; 1 यूहन्ना 3:8, 4:4)। वे ये भी जानते हैं कि वे सर्वदा के दण्ड के भागी हैं (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

परमेश्वर ने यीशु को नया धर्म, विचारधाराओं या रीति–रिवाजों के लिये नहीं भेजा था। बल्कि यीशु हमें **बहुतायत का जीवन** देने आया (यूहन्ना 10:10)। जीवन जो पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषिक्त किया गया (इफिसियों 5:18)। अब उसका काम करने के लिये सुसज्जित करना (कुलुस्सियों 1:27–29) और बड़ी आशा से अपनी अनन्त की मंजिल के आने लालसा की करने लगे (1 पतरस 1:3–9)।

मसीह के द्वारा हम "निर्बल और मांगने वाले तत्वों" से यानी झूठे धर्म और धोखे से स्वतंत्र किये गये हैं कि हम परमेश्वर के पुत्र के सत्य और ज्योति में चलें (कुलुस्सियों 1:13)। हालिल्लूयाह!

उद्धार के क्षण से पूर्ण पुत्र

पौलुस अपनी शब्द तस्वीर के साथ गलातियों में जारी है। वह प्रगट करता है कि जैसे रोमी लेपालकपन में गवाही की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मसीहियों की दी गई गवाही होती है: पवित्र आत्मा (गलातियों 4:6)। जब हमारा उद्धार होता है पवित्र आत्मा गवाही देता है कि हम परमेश्वर के परिवार के हिस्से बन गये हैं।

उद्धार के समय हमको पवित्र आत्मा दिया गया था (यूहन्ना 3:5–8; तीतुस 3:5) पौलुस हमें वह जो और अधिक होता है उद्धार के क्षणों में बताता जाता है।

- हमारे पास परमेश्वर की करीबी संगति उपलब्ध है (गलातियों 4:6, रोमियों 8:15,16)
- हम सब मसीह के साथ वारिस बनाये गये हैं (गलातियों 4:7)।

ये चीज़ें जो हमारे आत्मिक लेपालकपन से अचानक मिल जाते हैं जो उद्धार के समय होता है। ये सब परमेश्वर के अनुग्रह के प्रभुत्व के कार्यों द्वारा पूरे किये जाते हैं। हमारा लेपालकपन, हमारे उद्धार की तरह **कमाया नहीं जा सकता,** ना ही ये हमारे किसी भी प्रयास के द्वारा किया जा सकता है।

उद्धार के समय हम हमारे प्रेमी स्वर्गीय पिता के हाथों द्वारा पूरी तौर से परमेश्वर के परिवार में पुत्र की तरह रख दिये जाते हैं। निश्चित होने के लिये जब हम व्यक्तिगत परपिक्वता में बढ़ते और परमेश्वर की चीज़ों में अनुशासित होते तो हम और अधिक फलदायक और उसकी सेवा में प्रभावशाली बन जाते हैं।

फिर भी हमारी सेवा हमें परमेश्वर के द्वारा अधिक प्रेम नहीं करवायेगा या अधिक उसके पुत्र हो जायेंगे। जिस क्षण से हम बच गये। उद्धार हो गया **हम पूरी रीति से उसके पुत्र हो गये।**

हमारी एक विश्वासी की तरह पहचान **प्रथम** है कि हम परमेश्वर के पुत्र हैं और उसके परिवार का हिस्सा है; और तब बाद में पीछे आता है। हम पास्टर नहीं हैं जो पुत्र है। हम प्रिय पुत्र हैं जो एक पास्टर का कार्य कर रहा है!

यद्यपि जो इस जीवन में महत्वपूर्ण है जो आप करते हो और आप कौन बन रहे हो, हमें स्मरण करना चाहियेः **हर मसीही के लिये सबसे महत्वपूर्ण चीज़ ये है** कि ये समझें कि वे पहले परमेश्वर द्वारा प्रेम किये गये और उसके पुत्र की तरह रखा गया है। तब और दूसरे कि वे जो हैं और करेंगे उसे उस समझ से बहना चाहिये।

बाद के भाग में हम इसे विस्तार से पूरी तरह चर्चा करेंगे, वे लाभ, जिम्मेवारियां और स्वतंत्रता जो हमारे पास आते हैं एक प्रेमी पुत्रों की तरह जो आत्मिक रूप से परमेश्वर के घराने में लेपालक बनाये गये हैं।

पुर्नजीवन और धार्मिकता

इस अध्ययन ने हमें विश्वस्त रूप से बताया हैं कि हमारा आत्मिक लेपालकपन – हमारा परमेश्वर के परिवार में पुत्रों की तरह रखना। ये उस समय होता है जिस क्षण हम नया जन्म पाते हैं। इसी क्षण में हम अपने मसीह में विश्वास के द्वारा धार्मिकता प्राप्त करते हैं (गलातियों 2:16) और हम पवित्र आत्मा के द्वारा नये जन्म का अनुभव करते हैं (तीतुस 3:5)।

पापमुक्ति का संक्षिप्त अर्थ ये है कि जब हम मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार पर आते हैं, परमेश्वर हमें धार्मिक घोषित करता है। ये पूरी तरह मसीह के बलिदान में हमारे विश्वास के आधार पर हमारे पापों के लिये क्रूस पर (रोमियों 4:3)। हम अपने कामों से कभी भी धार्मिक नहीं बन सकते।

पर *पापमुक्ति* हमारे पापों की क्षमा से और हमारे दोष को दूर करने से अधिक है। जब परमेश्वर हमारे पापों की मुक्ति करता है तो वह हमारे आत्मिक खाते में मसीह की सिद्ध धार्मिकता रखता है (1 कुरिन्थियों 1:30, 2 कुरिन्थियों 5:21)। हमारे पापों की पूरी कीमत मसीह के बलिदान द्वारा अदा कर दिया गया है। हमें उसके उद्धार के कार्य को प्राप्त करने की आवश्यकता है।

नया जन्म परमेश्वर के सार्वभौमिकता का कार्य है, पवित्र आत्मा के द्वारा, जो हमारे उद्धार के समय होता है (यूहन्ना 3:5–8)। पुर्नजन्म या नया जन्म हमारे आंतरिक पुनः सृष्टि हमारे गिरे हुए मनुष्यत्व स्वाभाव की है। हम अपने अधर्म और पाप में मरे हुए थे, पर उद्धार पर हम पुनः सृजे गये हैं और नई सृष्टि बनाये गये हैं जो अभी मसीह में जीवित है (इफिसियों 2:1,5)।

पुर्नजन्म करीबी तौर से लेपालकपन से सम्बंधित है और एक साथ उसमें बंधे हुए हैं।

पुर्नजन्म हमें नये जीवन के लिये तैयार करता है, परमेश्वर के परिवार के एक सदस्य की तरह। ये हमें इसके लिये भी तैयार करता है कि जीने में और लेपालकपन के लाभों को अभ्यास करते रहने के लिये। वे जो नये बनाये गये हैं वे परमेश्वर के द्वारा लेपालक बनाये गये हैं और परमेश्वर के उत्तराधिकारी की तरह रखे गये हैं और मसीह के साथ सह–उत्तराधिकारी (रोमियों 8:15–17; गलातियों 4:6,7)।

पुत्र होना नियत करना

हमारा लेपालकपन परमेश्वर के अनन्त कांउसिल में तय किया गया, *"और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों"*

(इफिसियों 1:5)। हमारा पुत्रों की तरह ठहराया जाना ये परमेश्वर के बाद के विचारों का नहीं है। उसने हमें अपनी सन्तान होने के लिये सृजा पर हमने अपनी मीरास को पाप के कारण खो दिया। तो परमेश्वर ने अपने प्रेम और दया में हमारे सच्चे मीरास के लिये एक रास्ता दिया और स्थान पुनः स्थापना के लिये दिया–बलिदान स्वरूप हमारे पापों के लिये मृत्यु और प्रभु यीशु के पुनरुत्थान द्वारा प्रदान किया (गलातियों 4:4–5)।

हम अपने आप को पुत्रों की तरह नहीं रख सकते। केवल पिता परमेश्वर ही इसे हमारे लिये कर सकता है। पर उन सभों ने जिन्होंने अपना हृदय मसीह को समर्पित किया है और उद्धार के लिये उस पर विश्वास किया है, ये परमेश्वर की इच्छा है कि वे लेपालक बनाये गये हैं – पुत्रों की तरह रखे गये हैं –उसके परिवार में। कोई कमाई नहीं है, कार्य करना है या साबित करने के लिये ठहरना है कि वह उसका पुत्र होने के लिये हकदार है। 🕮

भाग III

लेपालकपन का मूल्य

परमेश्वर का धन्यवाद है कि जो उसने हमारे लिये किया है: मसीह यीशु को हमारे पापों के लिये मरने को भेजा और हमें बचाने और लेपालक बनाने और हमें पूर्ण रूप से अपने पुत्र **स्वीकार करने** और **स्थापित करने** को भेजा है (इफिसियों 1:6), पर अवश्य है कि उसकी कोई कीमत है जो हमारे स्वर्गीय पिता ने हमारे लिये लेपालकपन के द्वारा उपलब्ध कराया है। हम इसलिये लेपालक नहीं बने कि हम इस योग्य हैं या हकदार हैं।

क. मुफ्त वरदान की कीमत

हम धन्यवादित हो सकते हैं कि हमारा लेपालकपन हमारी योग्यता पर निर्भर करता! जिसके लिये हम परमेश्वर के प्रेम और दया के लिये सत्य में हकदार हैं? *". . .क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"* (रोमियों 3:23,10–18 भी देखें)।

पूरी मानवता पूर्ण रूप से हमारे पापों में खो गई है और धार्मिकता तथा न्याय के आधीन परमेश्वर के प्रकोप के आधीन हैं। (इफिसियों 2:3, 5:6, कुलुस्सियों 3:6–7)। मनुष्य अपना स्वयं का उद्धार करने के लिये कुछ भी नहीं कर सकता (इफिसियों 2:8,9; रोमियों 3:20; गलातियों 2:16)। तो फिर कौन हमें बचा सकता।

उद्धार कर सकता है? और यदि वे हमें बचाने योग्य हैं तो क्या वे हमें बचाने के इच्छुक हैं?

पाप के लिये परमेश्वर का न्यायिक दण्ड चाहता है कि इससे पहले उसकी दया हम पर उंडेली जाये उसका पाप के लिये न्याय पूर्ण रूप से तय कर दिया गया है, *". . . जो प्राणी पाप करें वहीं मर जायेगा"* (यहेजकेल 18:4,20)। हमारी इच्छानुसार पाप का दण्ड मृत्यु है।

फिर भी परमेश्वर का हृदय मानवता के प्रति पूर्ण प्रेम से कभी नहीं अलग हुआ, जो उसके स्वरूप में (उत्पत्ति 1:26,27) और उसकी महिमा के लिये बनाये गये हैं।

परमेश्वर की पूर्ण सिद्ध पवित्रता और न्याय और पाप के दण्ड की मांग करता है फिर भी बाइबल स्पष्ट करती है कि परमेश्वर का प्रेम और हमारे प्रति तरस महान व सर्वदा के लिये है (यिर्मयाह 31:3; विलापगीत 3:22,23; रोमियों 8:37–39)। तब परमेश्वर क्या कर सकता है?

पिता की अनन्त योजना पूर्ण हुई

आदम और हव्वा के विद्रोह और पाप में गिरने के क्षण से, परमेश्वर ने अपनी अद्‌भुत बुद्धि से और महान दया के कारण जानता था कि वह क्या करेगा (देखो उत्पत्ति 3)। नये नियम के पांच हिस्सों में से एक जो हमारे आत्मिक लेपालकपन के विषय बोलता है यह भी पिता की अनन्त योजना को प्रगट करता है: *"परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले और हम को लेपालक होने का पद मिले"* (गलातियों 4:4,5)।

प्रेरित यूहन्ना ने इसे इस प्रकार लिखा: *"क्योंकि परमेश्वर ने*

जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र भेज दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनन्त जीवन पाये" (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर की कलीसिया के अगुवे व पास्टर होकर, आप जानते हो कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को पृथ्वी पर मुलाकात करने को नहीं भेजा या हमें धर्म के प्रति नये विचार देने के लिये नहीं भेजा। बल्कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को मरने के अभिप्राय से भेजा (प्रेरित 2:23,3:18; इब्रानियों 2:9 भी देखिये)। मसीह मर गया। हमारे स्थान पर अपना स्वयं का जीवन दे दिया। उसने स्वयं अपनी इच्छा के अनुसार हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया–दुःख भोग सह लिया और हमारे स्थान पर मृत्यु का दण्ड उठा लिया (2 कुरिन्थियों 5:21)।

मसीह यीशु की मृत्यु – जब हम उस पर विश्वास करना चुनते हैं और स्वीकार करते हैं कि वह हमारे पापों के लिये मर गया और हमारे लिये सम्भव बनाता है कि हम उद्धार के लिये उसकी ओर विश्वास में मुड़ें। मसीह के उद्धार का कार्य उसकी दया का मुफ्त का वरदान है जिसे कमाया नहीं जा सकता। परमेश्वर ने यीशु को भेजा इसलिये कि उसका प्रेम हमारे लिये है (रोमियों 5:6–10; इफिसियों 2:1–10) और उसकी इच्छा "बहुत से पुत्रों को महिमा में लाना" (इब्रानियों 2:10) हालिलूल्याह!

परमेश्वर के प्रति आपकी योग्यता

हमारा लेपालकपन – हमें पूरे लाभ के साथ परिपक्व पुत्रों की तरह स्थान देना – ये दया के कार्य का एक भाग है जिसे परमेश्वर के पुत्र (यीशु) ने क्रूस पर पूर्ण किया, *"और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके* ***लेपालक*** *पुत्र हों"* (इफिसियों 1:5)। क्रूस

पर उसके एक कार्य में हमारे लिये यातना सहकर और मरकर यीशु ने ये सम्भव किया कि *"क्रोध की सन्तान को (उत्तराधिकारी)* (इफिसियों 2:3) *को प्रतिज्ञा की सन्तान बनाता है"* (रोमियों 8:17; गलातियों 4:28)।

इससे पहले कि मसीह ने क्रूस पर अपना बलिदान का रक्त बहाया हम *"शत्रु"* और *"परदेशी"* थे (रोमियों 5:10; इफिसियों 2:12; 4:18; कुलुस्सियों 1:20)। फिर भी अभी मसीह में विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के पुत्र बनाये गये हैं (गलातियों 3:26)। हमारा लेपालकपन, हमारे उद्धार की तरह किसी भी योग्यता पर निर्भर नहीं करती या ना हमारे प्रयासों पर बल्कि ये पूरे *"अनुग्रह"* पर निर्भर करता है कि परमेश्वर किसी पर भी या उन पर उंडेलता है जो मसीह में विश्वास से आते हैं।

हमारे लेपालकपन की वास्तविक कीमत इससे कम नहीं, मसीह यीशु के रक्त व जीवन से। पतरस घोषणा करता है, *"क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल चलन जो बाप दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चांदी, सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ, पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ"* (1 पतरस 1:18–19, 1:23 भी देखो)।

हमारा पुत्रत्व, हमारा लेपालकपन मसीही के सिद्ध और कभी नाश न होने वाले लहू पर आधारित है। ऐसा समय होगा जब शैतान दोष लगायेगा, आपको झूठ बोलेगा या आपको ये बता कर निरुत्साह करेगा कि आप एक असफल हो या आपको प्रेम नहीं किया जाता या व्यर्थ हो, पर आप उसे बता सकते हो कि आपके पास पूर्ण सबूत हैं कि ***शैतान झूठा है!***

आपका एक व्यक्ति की तरह मूल्य, परमेश्वर के प्रति आपका

लायक होना – ये सब उससे प्रगट होता है जो हमारे स्वर्गीय पिता को स्वर्ग में आपको पुत्र बनाने की कीमत पड़ी और कि आपको मसीह के साथ संगी वारिस बनायें। जो कीमत आपके लिये अदा की गई है वह परमेश्वर के पुत्र के बहुमूल्य लहू से कम कीमती नहीं है! और यही प्रभुओं के प्रभु के लिये और राजाओं के राजा के लिये आपकी योग्यता और मूल्य है!

हमें अपनी योग्यता या लायकपन पर अब कोई शक करने की गुंजाइश नहीं है; मसीह का लहू, क्षमा और प्रेम हमें लायक बनाता है। हमें अपने भविष्य के लिये डरने की आवश्यकता नहीं, परमेश्वर के लेपालक पुत्र होकर, हम उन सब चीज़ों के उत्तराधिकारी हैं जो सब कुछ मसीह का है। हमें अपने पूर्व के लिये अपने दोष पर संघर्ष करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जब हम पश्चाताप करते और बचाये जाते और पिता के परिवार में लेपालक बन जाते तो हमें पिछले दागों से बचाया गया और हमारी विफलताओं और पाप की कीमत परमेश्वर की महिमा के लिये दे दी गई है!

हमारा पुत्रत्व, हमारा लेपालकपन मसीही के सिद्ध और कभी नाश न होने वाले लहू पर आधारित है। ऐसा समय होगा जब शैतान दोष लगायेगा, आपको झूठ बोलेगा या आपको ये बता कर निरुत्साह करेगा कि आप एक असफल हो या आपको प्रेम नहीं किया जाता या व्यर्थ हो, पर आप उसे बता सकते हो कि आपके पास पूर्ण सबूत हैं कि ***शैतान झूठा है!***

अब शैतान के पास हमें दास बनाने की शक्ति नहीं है (इब्रानियों 2:14–16)। क्योंकि क्रूस पर उस पर विजय पा ली गई

है (कुलुस्सियों 2:15) पर हमें उसका सामना करने को खड़ा होना पड़ेगा, सत्य की घोषणा करते हुए कि हम पूरी तरह परमेश्वर के लेपालक पुत्र हैं।

हमारा अमूल्य लेपालकपन के और भी जटिलताएं परमेश्वर के पुत्र होने पर हैं। उसके लेपालक पुत्र बनने का अर्थ है कि परमेश्वर चाहता है कि हम अपने लेपालकपन से पहले की अपेक्षा अब भिन्न जीवन जियें।

ख. स्वतंत्र वरदान की उलझनें

जब हम मसीह को स्वीकार करते हैं तो हम परमेश्वर के राज्य में स्थानान्तरण हो जाते हैं (कुलुस्सियों 1:13) और हम उसके घर के सदस्य बन जाते हैं (इफिसियों 2:19) पूरी तौर से (रोमियों 8:17)। इस कारण से लगातार कुछ उलझनें हैं कि हम किस तरह अपने प्रतिदिन का जीवन जियें, पिता के लेपालक पुत्र होकरः

1. अब आगे को हम स्वामी–भक्ति के प्रति ऋणी नहीं हैं या अपने पुराने स्वामी के प्रति विश्वासयोग्य

ये पहले के स्वामी कौन हैं? गलातियों 4:3 हमें बताया गया हैः *"वैसे ही हम भी जब बालक थे तो संसार की आदि शिक्षा के वश में होकर दास बने हुए थे"।* जैसा हमने शब्द "मूल तत्व" के बारे में इस हिस्से में सीखा है ये खाली धार्मिकता के विचारों का संदर्भ देता है और नियमावली का बंधक जो हमें बचा नहीं सकता।

हमारा उद्धार होने के पहले, हम इन पुराने स्वामियों के बंधन में थे। पर अब मसीह में हम इन से **स्वतंत्र** हैंः

- हमारे पाप और उन पर के न्याय से (कुलुस्सियों 1:11–14; 2:14)।
- हमारे पापमय शरीर के बंधन से (रोमियों 6)।

- धार्मिकता कानूनवाद, दुष्टात्माओं की धार्मिक शिक्षा और हमारे उद्धार को कमाने के स्वयं के प्रयास (कुलुस्सियों 2:16–23)।
- भय, डांट–डपट और शैतान के झूठ का घुमाया जाना (कुलुस्सियों 2:15; इब्रानियों 2:14–18)।

हमें अपने अधर्मी स्वामियों के पुराने स्वामी भक्ति को काटना वा तिरस्कार करना होगा, धर्मशास्त्र हमें उस सामर्थ की जो मसीह यीशु में है स्पष्ट तस्वीर देता है कि अधर्मी स्वामियों को पीछे छोड़ दें: *"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गईं"* (2 कुरिन्थियों 5:17)।

फिर भी पाप और बंधन से स्वतंत्रता जो हमें उद्धार के समय दी गई है जिसे स्वार्थ में इस्तेमाल नहीं करना चाहिये। हमें स्वतंत्र किया गया है, ये करने के लिये नहीं कि जो भी वे चाहते हैं करें, बल्कि हमने स्वतंत्रता प्राप्त की है जो करना चाहिये करना है! इस प्रकार हमारे लेपालकपन की दूसरी अड़चन ये है:

2. सबसे ऊपर हम परमेश्वर की स्वामी भक्ति या विश्वास योग्यता के ऋणी हैं

बाइबल ये प्रगट करती है: *"और वह इस निमित्त सब के लिये मरा कि जो जीवित हैं वे आगे को अपने लिये न जियें परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा"* (2 कुरिन्थियों 5:15)।

हमारे प्रभु को ये आज्ञा देनी है कि हमारे शब्द और काम केवल कलीसिया ही में न हों या सेवकाई में कार्य कर रहे हों। यदि केवल यही है जो हम उसे करने देते हैं तो हम यीशु के दिनों के फरीसी और सदूकियों की तरह व्यवहार करते हैं (मत्ती 23)। हमारे पास बाहरी धार्मिक रूप है पर हम पूरे हृदय वा पूरे जीवन परमेश्वर की सेवा नहीं कर रहे हैं (मत्ती 15:7–9)।

यीशु ने अपना कीमती लहू उंडेल दिया और अपना जीवन दिया कि वह हमारे जीवन के हर भाग का प्रभु हो – वह हमारे हृदय और आदतों का प्रभु हो! उसकी इच्छा और पिता की इच्छा ये है कि वह हमारे जीवनों को भरते हैं और हमारे हृदय की पहले स्थान में बस जाते हैं।

हमारा एक दायित्व है कि हम उड़ाऊ पुत्र से अधिक बनें। दूसरे शब्दों में हमें अपने बढ़िया आत्मिक मीरास को नहीं लेना है जो हमें यीशु की मृत्यु के द्वारा और लेपालकपन से प्राप्त हुआ है, और तब पूरे जीवन के आनन्द, शान्ति, अनुग्रह, अभिप्राय और आशा जो दी गई है उसे बर्बाद/उड़ा ना दें। (आप उड़ाऊ पुत्र के विषय और अधिक लूका 15:11–32 में पढ़ सकते हो)। वरदानों और परमेश्वर की बुलाहट हमारी आशीष के लिये है और उसके अभिप्राय के इस्तेमाल के लिये हैं कि उसको महिमा दो और उसके राज्य को बढ़ायें।

ये सत्य है कि उड़ाऊ पुत्र क्षमा कर दिया गया था और उसके पिता द्वारा स्वीकार किया गया था। ये परमेश्वर के प्रेम और दया की सुन्दर तस्वीर प्रगट करती है। फिर भी उड़ाऊ पुत्र ने अभिप्राय और वरदान जो खो दिये और जो परमेश्वर द्वारा दिये गये क्षमताएं थीं, उसकी कभी भरपाई नहीं हो सकती थी। आगे क्या उसने पश्चाताप नहीं किया, उस उड़ाऊ पुत्र का पूरा जीवन नाश की ओर चला गया होता।

पास्टर से पास्टर तक

हम सब आत्मिक अगुवों से परिचित हैं जो परमेश्वर द्वारा बुलाये गये और समर्थ किये गये कि उसकी इच्छा पूरी करें। उसने उन्हें अच्छे वरदान और योग्यताएं दी हैं। उसने उन्हें अपने अभिप्राय के इस्तेमाल के लिये बुलाया कि उसकी सेवा करें और दूसरों की परमेश्वर के अनन्त अभिप्राय के खातिर।

पर तब उन्होंने अपने हृदयों में अधर्मी चीज़ें आने दिया। अक्सर घमण्ड या शारीरिक अभिलाषायें अन्दर घुस गईं और उनसे निपटा नहीं गया। शीघ्र ही उसने पाप की ओर ले गया जैसे : पैसों की चोरी को सही बताना, यौन सम्बंधी पाप करना, अपने परिवारों को त्याग देना या दूसरे शरीर से समझौता करना। वे अपने पद से प्रेम करने को आये, सम्मान के पद और *"परमेश्वर की प्रशंसा की अपेक्षा मनुष्यों की प्रशंसा"* अच्छी लगती है (यूहन्ना 12:43)। प्रभु की अपेक्षा इन चीज़ों की सेवा करना।

कुछ समय के लिये, प्रतीत होता है कि ये अगुवे कुछ के साथ अलग जा रहे हैं, दूसरों को बेवकूफ बना रहे यहां तक कि परमेश्वर को भी। पर परमेश्वर को कभी नहीं ठग सकते (गलातियों 6:7, 8) ना ही परमेश्वर पाप और विद्रोह को हल्के से नहीं लेता (इब्रानियों 3:12–15, यूहदा 8–11) पापमय व्यवहार वास्तव में गम्भीर परिणाम लाता है यहां तक कि सर्वनाश (याकूब 1:13–15)। ये सब लोगों पर लागू होता है जिसमें कलीसिया के अगुवे शामिल हैं।

पाप पास्टर की गवाही को नष्ट करता है और समुदाय में कलीसिया को। परिवार यातना सहते और दुःख तथा अधिक पीड़ाओं का सब जो असफलता से परिचित हैं अनुभव कर रहे हैं। ये आश्चर्य नहीं कि शैतान इतना कड़ा परिश्रम करता है कि कलीसिया के अगुवों की परीक्षा करें और नष्ट करें (लूका 23:31)।

पर पाप कहां से आरम्भ होता है? ये हृदय में आरम्भ होता है (मत्ती 12:34,35, 15:19, 2 पतरस 2)। जब हमारा हृदय पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित नहीं है और विश्वासयोग्य नहीं है। पूरे सम्मान और धार्मिकता में उसका भय मानना – तब दूसरी चीज़ों को हृदय से बाहर करना आरम्भ हो जाता है क्योंकि प्रभु का स्थान पहला है। पर यदि हम अपने हृदय को तैयार कर प्रभु को दे दें तो वह हमसे पहले जाकर हमारे लिये मार्ग स्थापित करेगा (1 शमूएल 7:3, नीतिवचन 3:5–8)।

तो पास्टरो अपने हृदयों को देखो! (नीतिवचन 4:23)। प्रतिदिन

3

प्रार्थना में अपने हृदय को प्रभु को समर्पित करो। उससे कहें कि वह आपकी कमजोरियों, धोखे, या शारीरिक इच्छाओं को जो जड़ पकड़ती हैं प्रगट करना (यिर्मयाह 17:9,10) पर परमेश्वर हमारे हृदयों को देखता है (1 शमूएल 16:7) और वह हमें पवित्र आत्मा की शक्ति से हमें कायल करेगा।

साथ ही प्रतिदिन बाइबल पढ़ने में विश्वास योग्य रहो। क्योंकि परमेश्वर के जीवित वचन में शक्ति है कि जो आपके हृदय में है वह प्रगट करें (इब्रानियों 4:12) और जो आप पढ़ते उसकी आज्ञा पालन करें और जो वचन करता और उसमें एक हो जाते! (याकूब 1:22)।

3. सब जो कुछ हमारा है – और हम जो कुछ हैं – प्रभु ही के हैं

लेपालक पुत्रों की तरह हमारे जीवन, सम्बंध, वरदान, योग्यताएं, क्षमताएं और पृथ्वी की सम्पत्ति सब परमेश्वर का है। हमारे बारे में सब कुछ, जिसमें हमारी इच्छाएं और आशा शामिल हैं (भजन 37:4,5)। सब परमेश्वर को समर्पित करना है और उसकी बुद्धिमान आधीनता में।

कुछ लोग अपने भय में या अपने स्वार्थ में बुद्धि संगत बना दें या अपने समय को पकड़े रहने को, वरदानों को सही ठहरायें या परमेश्वर से खज़ाना लें। पर वास्तविकता ये है कि जो कुछ परमेश्वर को नहीं दिया गया है और जो अपने लिये रखा गया है वह उसकी आशीष से पीछे रखा गया है।

हमें सबसे ऊपर परमेश्वर की आशीषों की इच्छा अपने जीवन की हर चीज़ पर करना चाहिये। पर इसमें हमें सब कुछ परमेश्वर को समर्पित करने की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि उसे हमारे न परिवर्तित हुए क्षेत्रों को भी उसे दे देना है। जब हम ऐसा करते हैं, ये हमें परमेश्वर के साथ करने को छोड़ता, हमारी

आवश्यकताएं, हमारे पाप, हमारी इच्छाएं, उसके सब बुद्धिमानी के शक्तिशाली तरीकों में। जब हम उसके कायल करने वाले कार्यों को देते और प्रतिक्रिया दिखाते – अपने पापों का अंगीकार कर पश्चाताप करते और उसके वचन की अधिक आज्ञाकारिता करते। वह हमें अपने पुत्र के स्वरूप में बना देगा जो उसकी इच्छा हमारे लिये है (रोमियों 8:29)। तब परमेश्वर हम पर और अधिक आशीषों और कार्यों के साथ भरोसा कर सकेगा!

याद रखें! एक लेपालक पुत्र की तरह, हमारे पूरे जीवन के प्रयास और लक्ष्य अपने स्वर्गीय पिता को सम्मान देना व महिमा देने की है। हमें उसके घर (कलीसिया) को भी सम्मान और आशीष देना है (गलातियों 6:10; इफिसियों 2:19)। जिसके हम बड़े हिस्से हैं।

4. पुत्र होकर उत्तराधिकार के परिपक्व स्थिति में रखे गये हैं, हमें लगातार आत्मिक परिपक्वता को आगे बढ़ाना है।

एक पुत्र की तरह रखे जाकर – आत्मिक लेपालकपन–उस समय होता है जब हम नया जन्म पाते हैं – *मानव लेपालकपन* के मामले में लेपालक बच्चा साधारणतः लेपालक बनाने वाले माता–पिता की मृत्यु के बाद उनका उत्तराधिकारी होने की योग्यता का सबूत दे दिया है।

फिर भी परमेश्वर का तरीका मनुष्य का तरीका नहीं है (यशायाह 55:8,9)। हमें परमेश्वर के पुत्र होने को साबित करने की आवश्यकता नहीं है। ये महत्वपूर्ण है जबकि कोई भी अदभुत वरदानों और आशीषों के योग्य नही है जो हमें दिये गये हैं एक आत्मिक मीरास की तरह/बल्कि हमारा पुत्र की तरह स्थान (लेपालकपन) और हमारी मीरास ये *विश्वास* के द्वारा मुक्त प्राप्त की गई है जैसे

हम उद्धार प्राप्त करते हैं। जो परमेश्वर ने अपने वचन में प्रतिज्ञा की है उस पर हमें विश्वास करना चाहिए और जो उसने मुक्त प्रदान किया है उसे स्वीकार करना चाहिए।

ये वर्णन करना महत्त्वपूर्ण है कि धर्मशास्त्र ये प्रगट करता है कि हमें आत्मिक रूप से परिपक्व होना चाहिए। हम सब मसीह में एक बच्चे की तरह आरम्भ करते हैं जिसे बढ़ने की आवश्यकता है (1 कुरिन्थियों 3:1–3), यद्यपि हमारा लेपालकपन हमें परिपक्व स्थान पर रखता है परमेश्वर का सब कुछ प्राप्त करने योग्य बनाता है–हमें अभी भी अपने विश्वास में बढ़ना है संसारिकता से दूर और सच्ची आत्मिकता की ओर।

ये आत्मिक बढ़ौतरी हमें अधिक मीरास नहीं कमाता है। जो मसीह ने अपने क्रूस पर के कार्य के द्वारा जो भी बनाया है हम उससे अधिक नहीं बन जाते। पर हमें अधिक विश्वास योग्यता के साथ फलदायक रूप से कार्य करना चाहिए उसके पुत्रत्व में और परमेश्वर की मीरास में जो परमेश्वर ने हमें दिया है।

बढ़ौतरी की आवश्यकता

जैसे हम परमेश्वर की आज्ञा मानने में विश्वास योग्य हैं और अन्दर से बदल गये हैं तो हम अधिक अधिक इस योग्य हो जाते कि उन लाभों को जो हमारा पिता चाहता कि हमारे पास हो उनके साथ व्यवहार कर सकें (मत्ती 25:14–29)।

बाइबल आधारित बहुत से हिस्से हैं जो परमेश्वर के पुत्रों की तरह परिपक्व होने के विषय बताते हैं। उदाहरण के लिये हमें इन में बढ़ना है:

- विश्वास में (2 कुरिन्थियों 10:15)।
- परमेश्वर के ज्ञान में (कुलुस्सियों 1:10; 2 पतरस 1:1–4)।
- अनुग्रह में (2 पतरस 3:18)।

- आत्मिक बुद्धि में (इफिसियों 1:17–19)।
- मसीह का व उसके कार्यों को जानने में (फिलिप्पियों 3:7–11)।
- अपनी बुलाहट को समझने में (फिलिप्पियों 3:12–16)।
- धार्मिक प्राथमिकताओं में (कुलुस्सियों 3:1–4)।
- शुद्धिकरण में (2 पतरस 1:5–8)।

ये उदाहरण बहुत तरीकों में से कुछ हैं जिनमें हमें लगातार बढ़ते रहना है और अपने उद्धार के बाद बदले हुए होकर। धर्मशास्त्र में ढूंढ़ने में समय लें कि और भी और तरीके देखें जिनमें आप परमेश्वर के पुत्र होकर आप आत्मिक रूप से बढ़ सकते हैं।

बढ़ौतरी का मार्ग

ये बताना चाहिये कि आत्मिक बढ़ौतरी और मसीह में परिपक्वता अपने आप (स्वतः) नहीं होती। परमेश्वर, पवित्र आत्मा के द्वारा हम से मिलने में हमेशा विश्वासयोग्य है और हमें बदलने में सहायता करती है। पर इस प्रक्रिया में हमारा पूरा सहयोग है – जिसमें ये शामिल हैं: पश्चाताप की इच्छा, बदलाव, अपने शरीर का इंकार, परमेश्वर के वचन की आज्ञा पालन करना और अधिक।

बाइबल स्पष्ट है कि आत्मिक रूप से बढ़ने और परिपक्व होने के लिये, कुछ चीज़ें हैं जो हमको करना चाहिये। हमें:

- परमेश्वर के वचन का खिलाना चाहिये (1 पतरस 2:2, इब्रानियों 5:11–14)।
- परमेश्वर के वचन की क्रमानुसार अध्ययन के प्रति समर्पण (1 तीमुथियुस 4:13, 2 तीमुथियुस 2:15) विशेषकर कलीसिया के अगुवों की तरह।
- परमेश्वर की आत्मा से बार बार लगातार भरते रहो (इफिसियों 5:18)।

दैविय स्वाभाव में हमारा पिता चाहता है कि हम उसमें बढ़ें। उसने हमें वह सब कुछ दिया है जिसमें हम उसके सहभागी बन सकते हैं (2 पतरस 1:2–4)। उसने अपने आपको समर्पित किया है और स्वर्ग के सभी संसाधनों को हमारी बढ़ौतरी और आत्मिक परिपक्वता में दिया है। और उसने हमें ये सुअवसर दिया है कि जब वह हम में कार्य करता है तो हम भी उसके कार्यों में सहभागी होते हैं (फिलिप्पियों 2:12,13)।

अपने पुत्रों की तरह परमेश्वर हमारे लिये इच्छा करता है कि उसके राज्य में महान कार्य करें। क्योंकि ये सत्य है, हम अपने आप को एक परिपक्व और विश्वासयोग्य प्रतिनिधि की तरह उसे समर्पित करता है (देखें 1 कुरिन्थियों 2:6, 14:20; फिलिप्पियों 1:6; 3:15, इब्रानियों 5:12–14)।

जैसा हमने सीखा है, यहां पर लेपालक पुत्र और पुत्री दोनों के लिये लाभ व जिम्मेवारियां हैं। आइये कुछ अद्‌भुत लाभों को जो हमें दिये गये हैं लेपालक सन्तान की तरह उनकी हम जांच करें। 🕮

भाग IV

लेपालकपन की सुविधायें

हमारा लेपालकपन – पुत्रों की तरह रखा गया है – हमें एक नई प्रकार के सम्बन्धों में रखता है। दोनों लेपालक पुत्र और लेपालक बनाने वाले माता–पिता लेपालकपन के नियम से बंधे हुए हैं कि एक दूसरे को सहारा दें, सहायता करें और इसे एक दूसरे के साथ बनाये रखें। अभी हमने इनके उलझनों वा आभार का अध्ययन किया है जिसे जो लेपालक बनाया गया है उसके द्वारा पूरा किया जाना है।

पर एक को महान **सुविधायें** भी दी गई हैं जो पुत्र की तरह रखे गये हैं। ये मनुष्य के लेपालकपन में भी सत्य है। पर वे जो परमेश्वर के पुत्र बन गये हैं उन्हें कीमती अनन्त सुविधायें दी गई हैं – आइये अब उनका अध्ययन करें।

क. लेपालकपन की सबसे महान सुविधा अभी ये है कि परमेश्वर आपका पिता (रोमियों 8:15; गलातियों 4:5)

हर एक जीवित चीज़ परमेश्वर के अस्तित्व का ऋणी है विशेषकर मानव (प्रेरित 17:25,28)। सब मनुष्यों का परमेश्वर पिता है पर केवल उन बातों में कि वह सबका सृष्टिकर्ता है (यूहन्ना 1:3)।

हमारा नया जन्म होने के पहले और लेपालकपन में पुत्र की तरह प्रवेश करने के पहले हमारा परमेश्वर के साथ पिता की तरह कोई सम्बन्ध नहीं था। अविश्वासी परमेश्वर को "न्यायी" कह सकते हैं पिता नहीं।

अब हमारे लिये जो नये जन्म के द्वारा विश्वास के साथ मसीह में सच में परमेश्वर के पुत्र बनाये गये हैं, हमें सबसे महान सुविधाएं और पुत्र का अधिकार दिया है।

हमारा पिता हमें अपने बेटे–बेटियां बुलाने में शर्मिन्दा नहीं है (2 कुरिन्थियों 6:18, इब्रानियों 2:11)। हम तिरस्कृत बच्चे नहीं हैं कि परमेश्वर को हमें अन्दर लेना है। बाइबल हमें सिखाती है कि *"परमेश्वर ने हमें संसार की उत्पत्ति से पहले चुन लिया है"* (इफिसियों 1:4)। इससे पहले कि संसार अस्तित्व में आया पूर्ण मानवता परमेश्वर द्वारा चाही गई वा चुनी गई!

"अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों" (इफिसियों 1:5)। परमेश्वर ने बहुत सी चीज़ों की इच्छा की है पर हमारा लेपालकपन उसकी इच्छा की सुमति के अनुसार है। उसने हमेशा हमें चाहा है, हमारे लिये मसीह में रास्ता दिया है कि उसके पास आना चुन लें उसकी सन्तान की तरह। परमेश्वर के चाहे हुए पुत्र का कितना महान सम्मान और महिमा!

शायद आप (या आपकी कलीसिया में से कोई) आपके पृथ्वी के माता–पिता द्वारा एक सन्तान की तरह नहीं चाहे गये। या शायद आपने महसूस किया कि आपसे प्रेम नहीं किया गया, एक बोझ की तरह या उसकी अपेक्षा जिसकी प्रशंसा की गई बदले में व्यर्थ है।

कृपया ये जानें कि आपका स्वर्गीय पिता ने हमेशा आपको

चाहा है! उसने आपके जीवन के लिये कीमती और अद्‌भुत योजना बनाई है और आपकी कलीसिया के हर सदस्य वा परिवार के लिये है (यिर्मयाह 29:11–13; इफिसियों 4:14, 1 कुरिन्थियों 2:9)। परमेश्वर ने आप के लिये और साधनों को एक तरफ रखा है (मत्ती 6:33; फिलिप्पियों 4:19) और वह आप में क्रियाशीलता से कार्य कर रहा है और ये आपकी भलाई के लिये हैं (रोमियों 8:28–30) उसके पवित्र नाम की महिमा हो!

पास्टर से पास्टर तक

ये अक्सर माता–पिता की अनदेखी है तिरस्कार या परित्याग करना है जो एक व्यक्ति को महसूस कराता है कि उससे दूसरे व परमेश्वर द्वारा प्रेम नहीं किया जाता। इस प्रकार मैं आपको प्रोत्साहित करता हूं, प्रिय पास्टर अपनी सेवकाई की व्यस्त गतिविधियों में आप अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेवारियों में विफल न हों।

बाइबल स्पष्ट है कि आपका विवाह और परिवार सेवकाई की अपेक्षा उच्च प्राथमिकता पर हैं (इफिसियों 5:22–23)। आपका प्रभु के साथ का व्यक्तिगत सम्बंध आपके जीवन की प्रथम प्राथमिकता है पर यदि आप विवाहित हैं तो पत्नी आपकी दूसरी प्राथमिकता है, यदि आपके पास बच्चे हैं तो उनकी देखभाल करना तीसरी प्राथमिकता है। इसका मतलब है अपने परिवार से प्रेम करना और उनकी जरूरतें पूरी करना, उनका पालन पोषण करना और उन्हें परमेश्वर का मार्ग सिखाना (व्यवस्थाविवरण 6:7)। तब सेवकाई प्रभु में व्यक्तिगत चलने के बाद आती है और आपकी अपने बच्चों वा पत्नी की जिम्मेवारी के बाद आती है।

यदि आपका विवाह या बच्चे अनदेखी का चिन्ह दिखाते हैं तो आप कलीसिया की अगुवाई में अयोग्य ठहरते हैं (1 तीमुथियुस 3:1–5) और सबसे बुरा और आपकी अनदेखी हानि का कारण हो सकती है जो आपके परिवार को इच्छा न करने के लिये खोल

सकते हो या परमेश्वर के प्रेम को पाने के अयोग्य हो सकते हैं और उनकी योजना बनाने के लिये।

कार्य परिवार और सेवकाई को संतुलित करने के लिये ये चुनौती है – हममें से कोई भी इसे सिद्धता से नहीं करता, पर हमें हमेशा अपने जीवन के लिये परमेश्वर के निर्देशों का अनुकरण करने के लिये संघर्ष करना चाहिये। ये निर्देश उसके वचन में पाये जाने हैं इसलिये धर्मशास्त्र का अध्ययन करने के लिये समय लें जो परमेश्वर की प्राथमिकताएं और स्तर को बयान करती हैं कि आपके परिवार को किस प्रकार अगुवाई करना है (इफिसियों 6:1–4 के साथ आरम्भ करें, कुलुस्सियों 3:20,21; 1 पतरस 3:1–7; और मलाकी 2:13,14,16)।

ख. हमारे पिता ने हमें पवित्र आत्मा दिया

"मीरास" के बहुत से लाभ हैं, परमेश्वर के पवित्र आत्मा के वरदान अनेक हैं पर उनमें से कुछ शामिल हैं:–

1. पवित्र आत्मा *"लेपालकपन का आत्मा"* है (रोमियों 8:15)।

इसका मतलब है हमारे अन्दर पवित्र आत्मा की उपस्थिति के द्वारा हम सत्य में और व्यक्तिगत रूप से जान सकते हैं और अपने स्वर्गीय पिता के साथ एक करीबी सम्बंधों का अनुभव कर सकते हैं। आत्मा के द्वारा हम पुकार सकते हैं *"अब्बा, पिता"* (रोमियों 8:15; गलातियों 4:6)।

शब्द *"अब्बा"* प्रेम का सम्मान और समीपता वर्णन करता है। ये बाइबल के समय में बच्चों के द्वारा इस्तेमाल किया गया था (यहां तक कि व्यसक बच्चों द्वारा) प्रेम से अपने पिता को सम्बोधित करते हैं और कभी कभी विद्यार्थियों द्वारा उनके शिक्षकों के लिये इस्तेमाल होता है। हम इसी प्रकार के शब्द अपने संसारिक पिता के लिये इस्तेमाल कर सकते हैं जैसे *"पापा"*।

यीशु ने जब पिता से बात की तो *"अब्बा"* शब्द इस्तेमाल किया (मरकुस 14:36) पर *"अब्बा"* शब्द यहूदियों द्वारा बहुत कम इस्तेमाल किया गया जब परमेश्वर का संदर्भ देते हैं, यद्यपित उनके पास परमेश्वर की व्यवस्था थी, उनके पास उसे साथ करीबी सम्बन्ध बनाने की सुविधा नहीं थी। ये केवल उस समय मसीह के क्रूस पर के बलिदान द्वारा उपलब्ध हो सका।

2. परमेश्वर के दासत्व के भय से हम छुड़ाये गये

"क्योंकि तुमको भय की आत्मा नहीं दी गई" (रोमियों 8:15)। हम जानते हैं कि "प्रभु का धार्मिकता और स्वस्थ भय" का होना है। सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिये उसका सम्मान होना चाहिये पर हम एक मसीही हो कर हमें *"हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा"* (इब्रानियों 18:2)। *हमारे पापों के लिये न्याय सन्तुष्ट था, पाप के लिये हमारा मृत्यु दण्ड* (यहेजकेल 18:2)। मसीह द्वारा अदा किया गया है हम घोषणा कर सकते हैं, *"सो अब जो मसीह यीशु में है उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं बरन आत्मा के अनुसार चलते हैं"* (रोमियों 8:1)।

इसलिये कि ये सत्य है, *"इसलिये आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांध कर चलें, कि हम पर दया हो और वह अनुग्रह पाये, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें"* (इब्रानियों 4:16; 10:19,22 भी देखें)। हमारा पिता जो हमसे प्रेम करता हमारी सुनेगा उस समय जब हम उसे बुलाये और अपनी सिद्ध प्रेम और बुद्धि के द्वारा उत्तर देगा।

3. हम पर पवित्र आत्मा द्वारा "छाप लगाई" गई है।

"और उसी में तुम पर भी जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुमने विश्वास किया

प्रतिज्ञा किये हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिये हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है कि उसकी महिमा की स्तुति हो" (इफिसियों 1:13–14)।

कानूनी नियम की तरह, रोमी लेपालकपन की पुष्टि एक भरोसेमन्द गवाह से करना होता था। हमने पहले ही सीख लिया है कि आत्मिक लेपालकपन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति हमारे अन्दर हमारा गवाह है।

पवित्र आत्मा वहां गवाही देने को हैं, पुष्टि करने को कि हम वास्तव में परमेश्वर की सन्तान हैं। परमेश्वर की सन्तान होकर हम उसकी मीरास के उत्तराधिकारी हैं जो हमारी मसीह में हैं। *"आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं। और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, बरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस है, जबकि हम उसके साथ दुःख उठायें कि उसके साथ महिमा भी पाए"* (रोमियों 8:17,18, गलातियों 4:6,7 भी देखें)।

ये विचार कि पवित्र आत्मा के द्वारा "छाप लगा दी गई" है (इफिसियों 1:13, 4:30, 2 कुरिन्थियों 1:22,5:5)। हमारे लिये महान महत्व रखता है। एक "छाप" यूनानी संस्कृति में किसी वस्तु पर जब छाप लग जाती है तो वह स्वामित्व को संकेत करता है और चोरी के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करता है। एक छाप ये भी संकेत करता है कि दस्तावेज या सन्देश अधिकारिक हैं, और एक के अधिकार को बताता है जिसने भेजा है।

परमेश्वर के लेपालक पुत्र होकर जिस पर पवित्र आत्मा की छाप लगी हुई हैं हम पर सच्चे पुत्र होने का चिन्ह लगा है। हम उसके हैं और उसने अपने स्वर्गदूत हमारे ऊपर ठहरा दिये हैं (भजन 91:11,12)। हम परमेश्वर के अधिकार के आधीन हैं कि

उसकी इच्छा पूरी करें और हमारे पास भी परमेश्वर के अधिकार प्राप्त हैं कि उसकी इच्छा पूरी करने योग्य हों (लूका 19:3, यूहन्ना 14:13, 15:16)।

एक परिपक्व स्थान पर रखे हुए पुत्रों की तरह, हमें ये सौभाग्य दिया गया कि अपने पिता के "व्यापार" को हमारे आस पास संसार में चलायें। हमें यीशु के नाम में जीना और सेवा करनी है उसके अधिकार के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को उसके राज्य के व्यापार में चला रहे हैं – "आमीन"!

4. पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करेगा

"पर जितने लोग परमेश्वर की आत्मा के चलाये चलते हैं वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं" (रोमियों 8:14)।

"अगुवाई करने" के लिये यूनानी शब्द का जो अनुवाद किया गया है "वर्तमान का अपूर्ण" है, इसका अर्थ है कि हमें लगातार पवित्र आत्मा के द्वारा अगुवाई की जानी चाहिये। ये हर एक परिपक्व विश्वासी के लिये इसे जीवन का मार्ग बनना चाहिये पर विशेष करके पास्टर्स और मसीह की देह में अगुवों के लिये।

ये पवित्र आत्मा की लगातार अगुवाई दो तरीके से होगीः

1) बाइबल का लगातार बढ़ता हुआ ज्ञान जिसके साथ एक बुद्धिमानी का और सचेत प्रयास कि परमेश्वर के वचन और पत्र की आज्ञा पालन करें (1 तीमुथियुस 4:12–16; 2 तीमुथियुस 2:15; 3:16, 17; याकूब 1:21–25)।

2) पवित्र आत्मा की अगुवाई और ऊपर बढ़ाने की चेतना उत्पन्न करना है, समय लेते कि दोनों प्रार्थना और उत्तर के लिये हम प्रतिदिन के जीवन में जाते हैं।

प्रतिदिन हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की उपस्थिति को क्रियाशीलता से निमंत्रित करना महत्वपूर्ण है (गलातियों 5:16)। हम

उससे हर परिस्थिति में अगुवाई करने के लिये कह सकते हैं या परिस्थितियों जिसका सामना हम करते हैं। पवित्र आत्मा से लगातार बात करने की अपनी आदत बनाइये उससे मार्गदर्शन के लिये कहें और सुनने के लिये समय निकालें कि वह आपके हृदय को क्या प्रगट करता है।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टर, कृपया ये जानें कि पवित्र आत्मा आपको कभी भी नहीं अगुवाई करेगी कि आप करें या कुछ भी ऐसा कहें जिससे प्रभु अप्रसन्न होते हैं या जो परमेश्वर के वचन में लिखा है उसके विपरीत हो।

पवित्र आत्मा जैसे परमेश्वर और त्रिएकता का व्यक्ति हमेशा परमेश्वर के वचन की पुष्टि करेगा और आपको आज्ञाकारिता की ओर ले जायेगा जो परमेश्वर ने पहले ही से बाइबल में प्रगट किया है।

यदि आपको लगता कि पवित्र आत्मा आपको कुछ करने के लिये अगुवाई करता है। ये बुद्धिमानी होगी कि दूसरे सलाहकार से सलाह मांगें जो मसीही विश्वास और परमेश्वर के वचन में अधिक परिपक्व है (नीतिवचन 11:14, 24:6)। उनको चुनें जो अनुभवी, परिपक्व विश्वासी हों जिनका विश्वासयोग्यता का परमेश्वर के वचन का रिकॉर्ड हो। उनको देखो जो सत्य बोलने का साहस रखते हैं यदि वे आपको सही करते हैं।

आप भी ये पुष्टि करें कि जो आप पवित्र आत्मा से महसूस कर रहे हैं वह पत्र का विरोधाभास नहीं है या परमेश्वर के वचन की आत्मा का। उदाहरण के लिये, पवित्र आत्मा आपको कभी कभी किसी चीज़ को लेने के लिये अगुवाई नहीं करेगी जो चीज़ आपकी नहीं है, क्योंकि बाइबल स्पष्ट रूप से प्रगट करती है कि हमें चोरी नहीं करना चाहिये (निर्गमन 20:15; इफिसियों 4:28)।

एक वचन विशेषरूप से पुरुषों के लिये : एक बुद्धिमान सलाहकार का होना जो परमेश्वर ने आपको पहले ही दिया है वो

आपकी पत्नी है। इसका मतलब ये नहीं कि वह हमेशा सही होगी – उसी प्रकार से जैसे आप हमेशा सही नहीं हो सकते। फिर भी एक अच्छी धार्मिक पत्नी एक सहायक होती है (उत्पत्ति 2:18) और उसकी सहायता एक अच्छी सलाह के रूप में आ सकती है।

अपनी पत्नी के साथ जैसा भी सम्भव हो प्रार्थना करने का समय निकालें। और जब आप करते हो और बताने के लिये समय निकालें जो आप पवित्र आत्मा के द्वारा महसूस करते हो। बहुत सी महिलायें पवित्र आत्मा के प्रति बहुत संवेदनशील होती हैं। पतियों को पत्नियों का मत जानने के लिये नम्र होना चाहिये और अनुसरण करने के लिये बुद्धि चाहिये यदि ये परमेश्वर के वचन से पुष्ट हो गया है। लगातार साथ में प्रभु को खोजने के लिये हर प्रयत्न करते रहो!

ग. हमारा पिता हमें अनुशासित करने के लिये पूरी तौर से समर्पित है

हर माता–पिता अपने बच्चों को अनुशासित करने के महत्व को पहचानते हैं। पर परमेश्वर का अनुशासन बिल्कुल भिन्न है उससे जो पृथ्वी के माता–पिता अपने बच्चों पर लागू करते हैं।

प्रभु का अनुशासन ये नहीं कि कुछ भय या खतरा है। परमेश्वर हमें अनुशासित परेशान होकर, क्रोध में या आधीर होकर नहीं करता। उसके अनुशासन में दण्ड नहीं ना न्याय या तिरस्कार नहीं होता। वास्तव में इन चीज़ों का विपरीत सत्य है।

परमेश्वर हमें अनुशासित करता है क्योंकि हम पुत्र हैं जिनसे वह प्रेम करता है। वह हमें पाप और विद्रोह के बंधन से छुटकारे के लिये अनुशासित करता है। परमेश्वर हमें अनुशासित करता है स्वतंत्र करने के लिये जिससे उसका अधिक अभिषेक और आशीषें प्राप्त करें।

इब्रानियों 12:3–13 पढ़ने के लिये समय निकालें। परमेश्वर

की "ताड़ना" हमेशा इसलिये नहीं कि हमने कुछ बुरा किया या सुधारे जाने की आवश्यकता है।

शब्द "ताड़ना" वास्तव में शक्ति देने के विचार को रखती या प्रशिक्षण को जो हमारी क्षमता को पूर्ण विकसित होने के लिये आवश्यक है, इसलिये कि जो भी परमेश्वर की योजना हमारे लिये है उसे पूरा करने के लिये हमारे जीवनों को समर्थ करना भी हमारे कुछ लाभ को जोड़ना है कि हमें सम्भावित हमलों से या चोट से बचाया जा सके (इब्रानियों 12:12,13; 1 कुरिन्थियों 9:24–27 भी देखें)।

ङ. जबकि हम लेपालक पुत्र हैं हमारे पिता की इच्छा हमें सुधारने की है कि हम उसके एकलौते पुत्र के स्वरूप में बनें।

जब उद्धार के समय हम परमेश्वर के परिवार में लेपालक बना लिये गये हैं। तो वह न केवल एक नया नाम देता है पर एक नया स्वाभाव भी देता है। *"क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्‌गुण के अनुसार बुलाया है, जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वाभाव के सहभागी हो जाओ"* (2 पतरस 1:3–4)।

मसीही होकर हम उसका नाम लिये रहते जिसने हमें लेपालक बनाया है (प्रेरितों के काम 11:26; 1 पतरस 4:12–16)। हम उसकी सम्पत्ति के द्वारा और आत्मा के कार्य के द्वारा दिन प्रतिदिन उसके पुत्र के स्वरूप में आन्तरिक रूप में बदलते जाते हैं – यीशु के (2 कुरिन्थियों 3:18)।

ये बदलने की प्रक्रिया हमारे जीवन में लगी रहती है। हमें इस प्रक्रिया में अपने आप को देने का आदेश दिया गया है और पवित्र आत्मा के कार्य में सहयोग देना है। हमें और भी पूरे प्रयास उसके समान बनने का करना है जिसने हमें लेपालक बनाया।

"इसलिये हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओः यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। और संसार के सदृश्य न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाये, जिससे तुम परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:1–2; 1 कुरिन्थियों 15:49; और 1 यूहन्ना 3:2,3 भी देखें)।

प्रेमी स्वर्गीय पिता होकर परमेश्वर हमें पुनः स्थापना कर रहा है कि जब अन्त में हम उसे आमने सामने देखें तो हम जिसने हमें बनाया उसकी तरह हो (भजन संहिता 17:15)।

मनुष्य प्राणी मूल रूप से परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया (उत्पत्ति 1:26,27) पर हम पाप और विद्रोह और उसके प्रभाव से सदियों से तोड़े और अलग किये गये। उद्धार के समय फिर भी हम अपने स्वर्गीय पिता की समानता में पुनः विजयी प्रक्रिया के द्वारा पुनः स्थापित किये जाने लगे। उसके समान चरित्र बन जाने के लिये अपने अन्दर से बदलना आरम्भ हो गया।

परमेश्वर हमारी परिपक्वता और बढ़ौतरी के लिये समर्पित है। उसका आत्मा हमें लगातार मन फिराने के लिये कायल करता है। वह हमें सिखायेगा कि किस प्रकार भरोसा करना देना है और प्रभु

और उसके वचन की आज्ञा पालन करना है। परमेश्वर परिस्थिति के दबाव को भी हमारे जीवन को बनाने और रूप देने में इस्तेमाल कर सकता है जैसे कुम्हार अपने बर्तनों का रूप/आकार देता है (यशायाह 64:8)।

प्रेमी स्वर्गीय पिता होकर परमेश्वर हमें पुनः स्थापना कर रहा है कि जब अन्त में हम उसे आमने सामने देखें तो हम जिसने हमें बनाया उसकी तरह हो (भजन संहिता 17:15)।

च. पुत्र होकर हमें स्वतंत्रता का सौभाग्य दिया गया है

"इसलिये अब तू दास नहीं परन्तु पुत्र है, और जब पुत्र हुआ तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ" (गलातियों 4:7)। *"सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे* (यूहन्ना 8:36)।

मसीह यीशु में विश्वासी होकर हम मसीह के द्वारा स्वतंत्र किये गय हैं पाप और मृत्यु की व्यवस्था से (रोमियों 8:2)। हम संसार की कुछ चीज़ों से छुड़ा दिये गये हैं (कुलुस्सियों 2:8, 16–23)। अब हमें मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं (इब्रानियों 2:14,15), ना न्याय से ना क्रोध से (रोमियों 5:9)।

अभी भी हमारा लेपालकपन और स्वतंत्रता और अधिक अभिप्राय लाता है। लेपालक पुत्र जो कुछ वह *चाहता* उसे करने को स्वतंत्र नहीं (1 पतरस 2:16,17) बल्कि हम अभी अपने पिता की इच्छा और उसके *वचन* में उसकी आज्ञा में जो करना है उसे करने को स्वतंत्र हैं।

हमें अपने परमेश्वर के व कलीसिया के लिये विश्वासयोग्य सेवा देने के लिये स्वतंत्र किया गया है और उसके संदेशवाहक की तरह पूरे संसार की सेवा करने के लिये।

छ. लेपालकपुत्र होकर, हमें बुराई से बचाव दिया गया है

परमेश्वर का वचन प्रतिज्ञा देता है कि उसकी सन्तान को शैतान की शक्ति से बचाया जायेगा (देखें लूका 10:19; यूहन्ना 17:11–15, रोमियों 8:31–39; 1 यूहन्ना 3:8; 4:4)। विश्वासी के जीवन पर नरक की शक्ति और अधिकार केवल ये है जो विश्वासी स्वीकार करता या होने देता। यीशु ने हमारे लिये सब चीज़ें दीं कि शैतान का सामना कर सकते हैं (2 कुरिन्थियों 10:3–5) और किसी भी बुराई से स्वतंत्र किया जाना वह हमारा शोषण कर सकता है (इफिसियों 6:10–18)।

फिर भी, ये नोट करना महत्वपूर्ण है कि बाइबल स्पष्ट रूप से बयान करती है कि इस जीवन में हम अभी भी परीक्षाओं, क्लेशों और शैतान का विरोध का अनुभव करेंगे (देखें याकूबब 1:2–7, 12,13; 1 पतरस 4:12–19; मत्ती 5:10–12; यूहन्ना 10:10, 2 कुरिन्थियों 2:11; 11:13)। हम टूटे–पाप से भरे संसार में रहते हैं और हर एक चुनौतियां और हृदय पीड़ा का सामना करेंगे।

फिर भी हमारा स्वर्गीय पिता उन कठिनाइयों को हमें महान आशीष देने के रूप में इस्तेमाल करने को प्रतिज्ञा करता है (रोमियों 8:10, 28; 2 कुरिन्थियों 4:7–18)। परीक्षाओं में या तो उसे सहने के लिये परमेश्वर का अनुग्रह होगा या छुड़ाने के लिये उसकी सामर्थ (याकूब 4:6–8; 1 पतरस 4:12,13; 1 यूहन्ना 3:8; 4:4; प्रकाशितवाक्य 12:11)। भले ही परीक्षा कुछ भी हो, प्रभु हमारे साथ होगा, वह न हमें कभी छोड़ेगा न कभी भूलेगा (मत्ती 28:20; इब्रानियों 13:5)। हमें वह देगा जो इस जीवन की दौड़ में पूरा करने की आवश्यकता है अपने धीरज और शक्ति से भले ही कुछ रूकावटें क्यों न आयें।

ज. हमारा लेपालकपन हमें पवित्र प्रतिष्ठा और समानता प्रदान करता है

आज संसार में बहुत से स्थान हैं जहां लोगों को दूसरों से कम स्वीकार किया जाता है। कुछ विशेष जाति के लोग, जनजाति या विशेष भूगोलिक क्षेत्र या जो विशेष भाषा बोलते हैं उन्हें कम मूल्य का समझा जाता है या सामाजिक स्तर में नीचा देखा जाता है। बहुत से धर्म हैं या देश हैं जो महिलाओं को वही प्रतिष्ठा, सुविधा नहीं देते या सम्मान जैसा पुरुष प्राप्त करते हैं। ये या दूसरे प्रकार के पक्षपात या शौषण असमान्य नहीं हैं।

पर मसीह यीशु में नये जन्में अनुयायियों के लिये उनका लेपालकपन और पिता परमेश्वर के सामने स्तर दूसरे विश्वासियों के साथ बराबर का है, *"क्योंकि मसीह में न कोई यहूदी ना यूनानी, ना दास न स्वतंत्र, न स्त्री न पुरुष है क्योंकि मसीह में तुम सब एक हो"* (गलातियों 3:28, ये बयान और जोड़ता है देखो कुलुस्सियों 3:11)।

वे जो मसीह में हैं सभी राजकीय लहू की सम्बन्ध में हैं (मसीह यीशु के लहू) और सभी एक ही परिवार का नाम व मीरास रखते हैं। बाइबल ये प्रगट करती है कि विश्वासी लोग, *"चुना हुआ वंश, याजकों का समाज, पवित्र जाति उसके विशेष लोग हैं"* (1 पतरस 2:9)।

मसीहियों की स्वयं की योग्यता और प्रतिष्ठा मसीह के कलवरी के क्रूस पर बहाये गये लहू के द्वारा स्थापित की गई है, और साधारण उस सत्य से जिसका इंकार नहीं किया जा सकता कि परमेश्वर ने अपना प्रेम हम पर डाला है (1 यूहन्ना 3:1)। उस अनन्त सत्य को कोई भी बदल सकता (रोमियों 8:38,39)। चाहे कोई रंग, वर्ग, जाति या लिंग हो विश्वासी सब एक दूसरे के साथ बराबर हैं। वे हर एक मसीह में परमेश्वर के प्रेम के योग्य बनाये गये हैं और परमेश्वर की आत्मा में एकता में बांधे गये हैं (गलातियों 3:26–39; इफिसियों 2:11–18; कुलुस्सियों 3:11)।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टरो जो भी हम कहते और करते हैं वह इस बाइबल आधारित बराबरी के सिद्धान्तों को जो बहुत महत्वपूर्ण है उसे प्रगट करते हैं। ऐसा कहा गया है, "यीशु के क्रूस के नीचे की धरती स्तर पर है" दूसरे शब्दों में, सारे विश्वासी, जवान और बूढ़ें, पुरुष और महिलायें, ऊंचे–नीचे, अमीर या गरीब सब परमेश्वर के सामने बराबर हैं। उद्धार में और सम्बन्ध में सब बराबरी से परमेश्वर तक पहुंच सकते हैं। परमेश्वर अपना आत्मा सब विश्वासियों पर उंडेलना चाहता है कि उन्हें सेवा के लिये समर्थ करें और कि उसकी महिमा प्रगट हो (योएल 2:28–30)।

बाइबल एकता के सिद्धान्त को प्रगट करती है ये पति–पत्नी के सम्बन्धों से ऊपर जाता है (1 पतरस 3:7–12)। अगुवे होकर हमें हमेशा धार्मिकता के व्यवहार का नमूना देना चाहिये उन सब के प्रति जिनका उद्धार करने को यीशु मर गया। हमें दूसरों के साथ भले ही वे कोई क्यों न हों, आदर, सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ व्यवहार करना चाहिये। जिनकी हम अगुवाई करते हैं उनके साथ मसीह के समान नमूने का व्यवहार करना चाहिये।

यदि आपकी संस्कृति या पृष्ठभूमि, आपका घमण्ड या आपका भय आपको प्रेम करने से रोकता है और सेवकाई में सब विश्वासियों को एक समान रखता है, तो कृपाकर अपनी भूमिका को देखो जो कलीसिया में एक प्राचीन या अगुवे की तरह है। एक फलदायक, प्रभावशाली अगुवे होकर ये मांग करता है कि आप धर्मशास्त्र के सिद्धान्तों के नमूने अनुसार जियें।

झ. परमेश्वर के द्वारा लेपालक बनाये जाने के लाभ का पूरा होना अभी बाकी है

"और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है आप ही अपने में कहरते हैं; और लेपालक होने की अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं" (रोमियों 8:23)।

मसीह में विश्वास के द्वारा पापमोचन करके हमें पाप और उसके दण्ड से स्वतंत्र करता है (रोमियों 3:21–25, 27,28)। हमारे लेपालकपन के द्वारा हम पुत्र बन जाते हैं जो मसीह के साथ सह–उत्तराधिकारी बनाये जाते हैं (रोमियों 8:17; 1 कुरिन्थियों 3:21–23; गलातियों 4:6,7; इब्रानियों 6:17; प्रकाशितवाक्य 21:7)।

परमेश्वर की सन्तान होकर हमारी मीरास पहले से आरम्भ हो गई है। उस में हम लेपालक पुत्र हैं, बाइबल हमें सन्तान कहती हैं, पुत्र और उत्तराधिकारी कहती हैं। सन्तान होकर हमें पहले ही से करीबी सम्बन्ध का वरदान दिया हुआ है हमारे स्वर्गीय पिता के साथ। पुत्र होकर हमारा स्थान या उसके सामने पद सुरक्षित है और प्रतिज्ञाओं से इस जीवन के लिये और आने वाले जीवन के लिये भरा है। उत्तराधिकारी होकर, हमारी मीरास दोनों अभी और भविष्य में है।

हमारे भविष्य की मीरास पूरी तौर से भरी होगी जब हम इस जीवन से गुजरते और अपने उद्धारकर्ता को "आमने–सामने" देखते हैं (1 कुरिन्थियों 13:12)। इस भविष्य की मीरास को समझने की कुंजी उन प्रतिज्ञा में है जो इफिसियों 1:13,14 में हैं। पढ़ने के लिये एक क्षण लो (देखो – 2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5; इफिसियों 4:30)।

पवित्र आत्मा की छाप का वरदान जो हमें दिया गया है ये "गारन्टी" की तरह बताया गया है। शब्द "गारन्टी" का अनुवाद "दाम चुकाने, जमा करने या पहली किश्त" के रूप में किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में परमेश्वर ने अपना आत्मा हमारी पहली किश्त के रूप में अदा कर दिया है, उस दिन की सुरक्षा प्रदान करता है जब परमेश्वर हमें पूरी रीति से अनन्त में स्वीकार करेगा।

हमारे स्वर्गीय पिता ने हमारे लिये कीमत चुका दी है परमेश्वर पुत्र को भेजकर कि अपने ऊपर हमारे पापों को ले ले और हमारे

स्थान पर क्रूस पर मरे। हमारे पिता ने तब परमेश्वर आत्मा एक वाचा के रूप में दिया या गारन्टी कि हमारी पूरी मीरास और हमारे जीवन का पूर्ण छुटकारा सुरक्षित है और पूरा होगा।

बाइबल ये प्रगट करती है कि हमारी नाशमान, कमजोर भ्रष्ट देह एक दिन पुनः जी उठेगी (1 थिस्सलुनीकियों 4:15,16)। हमारी नाशमान देह तब बदल जायेगी और अविनाश और अमरता को पहन लेगी (1 कुरिन्थियों 15:35–58)।

प्रभु की स्तुति हो! परमेश्वर के पुत्र होकर हम पूरी तरह बदल जायेंगे – देह – आत्मा – प्राण। किसी दिन हम पूरी तौर से अनन्त में रहेंगे और अपने प्रभु की चमकदार उपस्थिति और उसके प्रेम में रहेंगे।

तब हम परमेश्वर को जान सकते हैं और उसके प्रेम अनुभव कर सकते हैं। हमारे पास प्रारम्भिक कीमत है उसकी आत्मा का जो हमारे अन्दर जी रही है जैसे हम बढ़ते हैं और मसीह में परिपक्व होते हैं, हम प्रभु को और अधिक रूप से जान सकते हैं, उसके सदैव बढ़ने वाले प्रेम का अनुभव कर सकते और उसकी सामर्थ को अपने जीवनों के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभु की स्तुति हो! परमेश्वर के पुत्र होकर हम पूरी तरह बदल जायेंगे–देह–आत्मा–प्राण। किसी दिन हम पूरी तौर से अनन्त में रहेंगे और अपने प्रभु की चमकदार उपस्थिति और उसके प्रेम में रहेंगे।

ये बढ़ने की प्रक्रिया प्रतिदिन हमारे जीवनों में लगातार चलती रहे जब तक कि अन्त में हम उसे आमने सामने न देख लें जैसे हम जाने जाते हैं (1 कुरिन्थियों 13:12)। लेपालक होना कितने आनन्द और सौभाग्य की बात है, जीवते परमेश्वर के पुत्र रखे गये

हैं, हमारी मीरास की कितनी खुशी और प्रतिज्ञा है अभी और अनन्त तक।

उसने हमें स्वीकृत बनाया

हमारे लेपालक बनाये जाने का सौभाग्य और जीवित परमेश्वर के उत्तराधिकारी होना सत्य में महिमामय है। हमारे पास अनन्त उसकी अद्‌भुत स्तुति गाने के लिये होगा न प्रेम किये गये पापियों को उसके प्रेम और अनुग्रह के द्वारा लेना और हमें अपने पुत्र बनाना। ये सब परमेश्वर ने किया है। *"और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा कि हम उसके लेपालक पुत्र हों। कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो जिसे उसने हमें उस प्यारे में सेंत मेत दिया"* (इफिसियों 1:5–6)।

भाग V

हमारे लेपालकपन का अभिप्राय

पूरे अनन्त में हमारे परमेश्वर की आराधना बाकी है, पर हमारे लेपालकपन में और भी अभिप्राय पुत्र होकर ये है कि हम जी सकते और जब तक धरती पर जीते प्रगट कर सकते हैं।

क. सम्बन्धों के लिये ठहराये गये

धर्मशास्त्र ये प्रगट करते हैं कि मनुष्यों को मूलतः परमेश्वर के स्वरुप में सृष्टि की गई (उत्पत्ति 1:26,27)। इसमें ये तथ्य भी शामिल है कि मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा और चुनाव की क्षमता के साथ बनाया गया था। हम सोच सकते हैं, महसूस कर सकते,

कारण बता सकते और बुद्धिमानी के निर्णय ले सकते हैं। हमारे पास भावनाएं भी हैं। ये योग्यताएं एक आम, स्वस्थ सम्बन्ध के लिये आवश्यक हैं।

अन्त में मनुष्य परमेश्वर की महिमा के लिये बनाया गया (प्रकाशितवाक्य 4:11) पर मनुष्य परमेश्वर की उस महिमा को कैसे लाये? क्या उसे हमारे आकार से पूर्ण किया जाना है? या हमारे ज्ञान की क्रियाशीलता से? ये सब अद्‌भुत विशेषताएं हैं जो परमेश्वर ने हमें दी हैं पर वे अकेले ये परमेश्वर के सत्य अभिप्राय को प्रगट नहीं करते कि मानवता को उसके स्वरुप में पैदा किया जाये।

या शायद मनुष्य को परमेश्वर की महिमा अपनी सेवा के द्वारा लाना था। तो क्या परमेश्वर ने अधिक सेवक चाहा? यदि हां तो फिर परमेश्वर और अधिक स्वर्गदूत क्यों नहीं बनाता? क्योंकि मज़बूत, तेज और हमारे मानव की तरह बहुत सी चीज़ें नहीं है जैसे शारीरिक सीमाएं। अवश्य ही मानव के पास सेवा करने की क्षमता है। पर एक बार फिर ये नहीं कि हम उसके स्वरूप में क्यों बनाये गये हैं।

पाप सम्बन्धों को नष्ट करता है

बाइबल के बहुत से हिस्से जिनका हमने पहले ही अध्ययन कर लिया है हमें उसके आंतरिक बताते हैं कि परमेश्वर ने क्यों मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने हमें मसीह में चुन लिया और हमें लेपालकपन के लिये पहले से ठहराया। *"पृथ्वी की नींव डालने से पहले"* (इफिसियों 1:4)। दूसरे शब्दों में परमेश्वर ने अनन्त में हमें सृष्टि अपने स्वरूप में करने को चुना जिससे कि हम उसके पुत्र हों।

परमेश्वर ने हमारी सृष्टि करने को उस तरह चुना कि हम *अपने स्वर्गीय पिता के साथ प्रेमी सम्बन्ध रखें।* मूल रूप से इरादा

ये था कि हम परमेश्वर के साथ चलें और आमने सामने बातें करें, जैसा आदम ने अदन की वाटिका में किया (उत्त्पत्ति 2), आप और मेरी सृष्टि उसके साथ संगति के लिये हुई व्यक्तिगत, प्रेमी, और हमारे सृष्टिकर्ता के साथ करीबी सम्बंध हो।

दुःख की बात है कि आदम और हव्वा ने उस सम्बंध को तोड़ने को अनाज्ञाकारिता द्वारा चुना और परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध विद्रोह करना चुना। इस प्रकार पाप संसार में प्रवेश हुआ और अपना क्रूर कार्य परमेश्वर की सृष्टि कर आरम्भ कर दिया–विवाह में मित्रता में, परिवारों में पर विशेषकर के हमारे बीच में और एक सिद्ध पवित्र परमेश्वर के बीच।

हमारा स्पष्ट बनाया हुआ नियत स्थान

पाप और उसके परिणाम मृत्यु ने परमेश्वर की योजना उसकी सृष्टि के नष्ट करने की धमकी है। पर परमेश्वर ने शीघ्र ही छुटकारे की योजना बना ली (उत्पत्ति 3:15) पर इसे उजागर करने में सदियां लग जायेंगी। ये उसके बनाने व समय में सिद्ध था।

इतिहास में सही क्षण में व्यवस्था के इस्तेमाल करने के बाद एक शिक्षक की तरह मानव जाति को उसके सख्त आवश्यकता को प्रगट करना (गलातियों 3:23–25)। परमेश्वर ने अपने पुत्र को स्वयं अपने ऊपर मनुष्यों के पापों के दण्ड को लेने के लिये भेजा (यूहन्ना 3:16)। ये सिद्ध और निष्कलंक मेमना सबके लिये बलिदान बन गया (यशायाह 53; 2 कुरिन्थियों 5:15, 1 पतरस 1:18–21)। तब मसीह यीशु मृतकों में से जी उठा कि सर्वदा के लिये हमारे जीवित प्रभु और उद्धारकर्ता करके राज्य करें!

वे सब जो यीशु में विश्वास करते और स्वीकार करते हैं जीवित उद्धारकर्ता करके, उनके पाप क्षमा हो जाते हैं। क्योंकि पश्चाताप करने वाले पापी के पाप उससे अलग कर दिये गये हैं

जितनी दूर पश्चिम से पूर्व है (भजन संहिता 103:12)। अब पाप के कारण सृष्टिकर्ता परमेश्वर और पापी के बीच कोई अलगाव नहीं है।

इस प्रकार पापी लेपालक पुत्र बनाया गया है और उसके साथ पुनः जोड़ा गया है जो मूल में परमेश्वर चाहता था। उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्वर्गीय पिता की तरह रखें। ऐसी ही हर एक व्यक्ति के लिये परमेश्वर की बनाई गई मंजिल है। और इसलिये हमें संसार में सुसमाचार लेकर जाना है!

पास्टर से पास्टर तक

पास्टरो, हमारे व्यस्त जीवन और सेवकाइयां अक्सर हमारे परमेश्वर के साथ के सम्बंध की अनदेखी हो जाती है। हमारा "प्रथम प्रेम" (प्रकाशितवाक्य 2:4)। सेवकाई का कार्य बन जाता है, या शायद कुछ दूसरा। हमारा सब समय और प्रयास उन चीज़ों पर समर्पित हैं हमारे प्रभु के सम्बंध की अपेक्षा।

हममें से कोई भी परमेश्वर की अनदेखी करना नहीं चाहते। पर धीरे धीरे जैसे हमारी सेवकाई बढ़ती है और जीवन जब भरपूर हो जाता है तो हम अपने आप को कम खर्च करते वा प्रभु के साथ कम समय बिताते हैं। हमारा जीवन जो चीज़ों व आशीषों की आवश्यकता है उसे मांगने पर केन्द्रित हो जाता या करने का अभिषेक। अपने उद्धारकर्ता के चरणों पर बैठने की अपेक्षा कि उसके साथ हों। हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन अच्छे सन्देश के लिये करते हैं उसके बदले कि साधारण तौर से उससे बातचीत करें और अपने आपको आत्मिक रूप से खिलायें।

बहुत से पास्टर इस फंदे में फंस जाते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे धीरे धीरे "जलना" आरम्भ कर देते और पूछते हैं, मैं आत्मिक रूप से इतना सूखा कैसे हो गया हूं? मेरी बुलाहट की और दर्शन की बात कहां हैं? यीशु क्यों इतना दूर लगता है? परमेश्वर मेरे जीवन में कहां है? क्यों सेवकाई ऐसी लगती जो बाहरी

कार्य है और कुछ विशाल नहीं है ना जीवित है जो मेरे हृदय से आता है?"

क्या ये प्रश्न आपको परिचित लगते हैं? हम में से हर एक को सावधान होना चाहिये कि अपने परमेश्वर के साथ के सम्बन्ध को क्रियाशील रूप से समर्थ करें व उसकी रक्षा करें और सम्बन्ध में बढ़ते जायें। बिना प्रतिदिन उसके साथ ताजे हुए और उसके वचन से ताजा मन्ना के बिना हम आत्मिक रूप से कमजोर हो जायेंगे। जब हम कमजोर होते हैं हम शैतान के आसान शिकार होते हैं। तब सामना करने की कम ताकत होती है कि अपने शरीर पर विजय पा लें (रोमियों 13:14; गलातियों 5:16; इफिसियों 4:27, 6:10–18)। उनके साथ समझौता कर लें तो विफलता पीछे पीछे आयेगी।

पर सबसे दुःखद बात होगी कि परमेश्वर के साथ की करीबी सम्बन्ध की हानि–जिसके लिये आप सृजे गये थे। वह आपको चाहता है (याकूब 4:5)। और आपको उसके व्याकुलता से आवश्यकता है। कोई और संबंध नहीं है या क्रियाशीलता से इस जीवन में जो अपने स्वर्गीय पिता से प्रतिदिन बातें करना और चलने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है! ये आपके लिये सच है और उनके लिये भी जिनकी अगुवाई करते हो।

इस प्रकार पापी लेपालक पुत्र बनाया गया है और उसके साथ पुनः जोड़ा गया है जो मूल में परमेश्वर चाहता था। उसके साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध स्वर्गीय पिता की तरह रखें। ऐसी ही हर एक व्यक्ति के लिये परमेश्वर की बनाई गई मंजिल है। और इसलिये हमें संसार में सुसमाचार लेकर जाना है!

हमारा प्रवेश

मानव की सृष्टि हमारे सृष्टिकर्ता पिता परमेश्वर के साथ सम्बन्ध के लिये की गई थी। जब पाप ने उस सम्भावनाओं को नष्ट कर दिया, परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पापों के दण्ड को लेने के लिये भेज दिया। हमारे लिये यीशु के बलिदान ने वह परमेश्वर का द्वार जो पाप ने बन्द कर दिया था। पुनः खोल दिया है।

यीशु के दिनों में मन्दिर की आराधना जिसमें स्थान शामिल किया गया था, पवित्रों का पवित्र; उसमें केवल महायाजक ही लोगों के बदले परमेश्वर से बातें करने को प्रवेश होता था (इब्रानियों 9:6–9)। उसे एक बड़े मोटे कपड़े से ढांपा जाता जिसे "परदा" कहा जाता था।

बाइबल यह प्रगट करती है कि जब यीशु मर गया, तो मन्दिर का परदा जो पवित्रों के पवित्र स्थान को ढांपें रहता था वह अद्‌भुत रीति से दो भाग हो गया (मरकुस 15:38)। इस भारी, बुने हुए परदे का "ऊपर से नीचे" फट जाना हमें बताता है कि मसीह की मृत्यु के द्वारा प्रवेश द्वार परमेश्वर द्वारा एक बार फिर है मानव व परमेश्वर के बीच खुल गया है!

मेल–मिलाप

"क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पायेंगे?" (रोमियों 5:10)।

शब्द मेल–मिलाप का मतलब बदलना, पुनः स्थापना करना या पुनः सम्बंध स्थापित करना है हम फिर देखते हैं कि मसीह के बलिदान स्वरूप कार्य ने परमेश्वर के साथ मेल मिलाप की सम्भावना को स्थापित किया।

यह मेल मिलाप किसी भी व्यक्ति के लिये उपलब्ध है जो उद्धार के लिये मसीह पर विश्वास करता है (इफिसियों 2:8–13; रोमियों 10:13)। परमेश्वर के साथ सम्बन्ध मसीह में किसी भी विश्वासी के लिये सम्भव है। पर ये मेल–मिलाप एक दूसरा महत्वपूर्ण अभिप्राय भी उपलब्ध कराता है।

ख. राजदूत होने के लिये ठहराये गये

परमेश्वर के लेपालक पुत्र होकर हमें हमारे सार्वभौम पिता के द्वारा एक परिपक्व स्थान में रखा गया है। *"हम मसीह के साथ परमेश्वर के सह–उत्तराधिकारी हैं"* (रोमियों 8:17)।

हर विश्वासी के पास आज्ञा और सुअवसर ये बताने के लिये हैं कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा उनके लिये कुछ किया है। ये उम्र और लिंग बुलाहट का फर्क नहीं लाता या आत्मिक परिपक्वता – ये हर मसीही की जिम्मेवारी है कि दूसरों को यीशु के बारे में बतायें।

ये सौभाग्य की अद्‌भुत स्थिति भी इसके साथ अद्‌भुत जिम्मेवारियां भी लाती हैं। हर एक विश्वासी के लिये मुख्य जिम्मेवारी ये है कि जब पृथ्वी पर हैं तो सुसमाचार प्रगट करो – अनन्त उद्धार और परमेश्वर के साथ पुनः स्थापित सम्बंध जो केवल मसीह में विश्वास के द्वारा उपलब्ध है।

हर विश्वासी के पास आज्ञा और सुअवसर ये बताने के लिये हैं कि परमेश्वर ने मसीह के द्वारा उनके लिये कुछ किया है। ये उम्र और लिंग बुलाहट का फर्क नहीं लाता या आत्मिक परिपक्वता – ये हर मसीही की जिम्मेवारी है कि दूसरों को यीशु के बारे में बतायें।

प्रेरित पौलुस ने इसे इस प्रकार कुरिन्थियों की कलीसिया को वर्णन किया है और आज हमारे लियेः

"और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है, सो हम मसीह के राजदूत हैं मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप कर लो" (2 कुरिन्थियों 5:18–20)।

हम में से हर एक को मसीह का राजदूत होना चाहिये, हमारा लेपालकपन केवल बैठकर और अपने उद्धार का आनन्द लेने और पुत्र की जगह की अपेक्षा बहुत कुछ और भी मांग करता है। हमारे पास एक मिशन है हमारे स्वर्गीय पिता की ओर से कि मिशन ये है कि दूसरों को परमेश्वर के साथ मेल–मिलाप करायें और उन्हें बतायें कि ये कैसे किया गया है – केवल मसीह यीशु के उद्धार के द्वारा किया गया है।

ये मिशन यीशु की अन्तिम आज्ञा है जो उसके अनुयायियों को दी गई हैः *"यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिये तुम जाकर सब जाति के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं मानना सिखाओ और देखो मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ"* (मत्ती 28:18–20, साथ ही मरकुस 16:15 भी देखें)।

प्रेरित पौलुस ने इस महान अभिप्राय के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया (1 कुरिन्थियों 9:19–27, कुलुस्सियों 1:24–29)

और युगों से अनगिनित विश्वासी हुए हैं तो आज भी हमें कम नहीं करना है!

हमारे पिता की इच्छा

हमारा परमेश्वर के लेपालक पुत्र होकर महानतम सुअवसर और आनन्द ये है कि परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करें जो दूसरों को मसीह यीशु के द्वारा उपलब्ध है। हमारे संदेश में ये शामिल है: "प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; बरन ये कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)। *"क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पायेगा"* (रोमियों 10:13)। *"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया कि जो कोई उस पर विश्वास करें नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाये"* (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर ने अपने प्रथम सृजे गये पुत्र – आदम को बताया *"फूलो फलो और भर जाओ"* और जो कुछ परमेश्वर ने दिया है उसकी देखभाल करें (उत्पत्ति 1:26–28, 2:8,15)। परमेश्वर की इच्छा हमारे लिये बिल्कुल वैसी ही है पर क्या इसने पहले जोड़ दिया है: *"मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे" . . . तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुन लिया है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो वह तुम्हें दे"* (यूहन्ना 15:8,16)।

"फल" जो हमें फलना है और जो स्वाभाव में अनन्त है *"ये लोगों का फल है जो उद्धार के लिये मसीह के द्वारा लाये गये हैं"।* हमें पुत्रों को कई गुणा बढ़ाना है जो उद्धार के द्वारा परमेश्वर में

5

पुनः स्थापित किये गये हैं। हम अपनी शक्ति से किसी को भी नहीं बचा सकते। पर हमें उद्धार का सन्देश दिया गया है और परमेश्वर हमें आत्मा की सामर्थ देता है कि साहस के साथ उन्हें छोड़ें! वह सुसमाचार की पुष्टि उन चिन्हों से और अद्‌भुत कामों से जो होगा करेगा (मरकुस 16:17,18; 1 थिस्सलुनीकियों 1:5)।

हम लेपालक पुत्र हैं जो सुसमाचार के प्रचारक कहलाते हैं (रोमियों 10:14,15)। ये हमारे पिता की इच्छा है कि हर नया जन्म पाया हुआ व्यक्ति विश्वासयोग्यता से मसीह यीशु के द्वारा उद्धार का शुभ सन्देश किसी भी व्यक्ति को जो सुने उसे बताये।

हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिये और प्रश्नों के उत्तर देने के लिये तैयार करना चाहिये जो अविश्वासियों के पास हैं (2 तीमुथियुस 4:1–5; 1 पतरस 3:14–17)। हमें उनसे भी जो मसीह के नाम में जरूरतमन्द हैं प्रेम करना वा सेवा करना चाहिये, ये व्यवहारिक दिखाना है कि परमेश्वर कितना लोगों से प्रेम करता है। ये सब सुसमाचार बताने के तरीके हैं, परमेश्वर के प्रेम और मसीह में उद्धार के शुभ सन्देश को बांटने का है।

परमेश्वर के लेपालक पुत्र होकर, हमें सुअवसर और जिम्मेवारी दी गई है कि अपने स्वर्गीय पिता की इच्छा को पूरी करें। "ये हमारे लेपालकपन को नहीं कमाता ना ही हमारी योग्यता साबित करता है कि इसे प्राप्त करें या परमेश्वर हमसे जैसा प्रेम किया उससे अधिक करता है (लूका 17:10; रोमियों 5:1–10; 1 यूहन्ना 3:1–3)।

हम पिता की सेवा इसलिये नहीं करते कि सुअवसर प्राप्त करें या पुत्रत्व का स्थान प्राप्त करें जो पहले ही से मसीह में हमारी है। पर इसलिये सेवा करते हैं क्योंकि हम पुत्रों की नाईं स्वीकार किये गये हैं। **हम इसलिये पुत्र नहीं है कि हम सेवा करते हैं पर इसलिये सेवा करते हैं क्योंकि पुत्र है!** 🕮

समापन

आगे बढ़ो

सर्वशक्तिमान परमेश्वर हमारे सृष्टिकर्ता और स्वर्गीय पिता ने आपको अपना पुत्र होने के लिये पूरी तौर से चुना है एक बार जब आप मसीह यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करते हैं। इस प्रकार आप उसके उत्तराधिकारी भी हो। सभी सुविधाओं में, सम्पत्ति, प्रतिज्ञा और सामर्थ में – अब और परमेश्वर के राज्य में जो आने वाला है! परमेश्वर की महिमा हो।

अभी भी एक क्षण ले लो, अपने हाथ और सिर प्रभु की ओर उठाओ। उसका जोर से धन्यवाद करो कि आप उसके पुत्र हो। ये घोषित करो कि स्वाभाविक राज्य में व अद्वैत राज्य में सत्य है। हर चीज़ में जो इस सत्य का विरोध करती है जो पूरी तरह आपके जीवन में पाई जाती है।

आप अनचाहे बच्चे नहीं हो। यदि आपने मसीह के उद्धार को प्राप्त कर लिया है तो आप परमेश्वर के अयोग्य बच्चे बनने योग्य नहीं हो। यीशु के लहू ने आपको पापों से शुद्ध कर दिया है और आपकी स्वीकार करने योग्य बना दिया है। अलगाव की दीवार को तोड़ दिया गया है जो आपके और परमेश्वर के बीच में थी और आप अब अपने स्वर्गीय पिता के साथ करीबी सम्बन्ध रख सकते हो।

परमेश्वर के दिमाग और ह्रदय में कोई प्रश्न नहीं हैं आपके स्थान और उसके सामने एक पुत्र होकर। तो कोई भी प्रश्न या शंका आपके दिमाग में न आने पाये। परमेश्वर आप से अनन्त प्रेम करता है। उसने अपना प्रेम और पक्ष अनन्त में रख दिया है और एक बार जब आपका उद्धार हो गया तो ना तो इस संसार की कोई चीज़ ना ही आत्मिक राज्य की बदल सकती हैं!

"क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है अलग कर सकेगी" (रोमियों 8:38–39)।

साहस के साथ आगे बढ़ो

ये हम सबके ऊपर है कि हम पूर्ण प्रेम किए गये और समर्थ पुत्र की नाईं जीने को आरम्भ करने के लिये चुन सकते हैं जो हम हैं! मसीह में हर विश्वासी एक परिपक्व पुत्र के स्थान पर रखा गया है और परमेश्वर की न बदलने वाली इच्छा के द्वारा उत्तराधिकारी है (यूहन्ना 1:12,13)।

इसलिये हम में से हर एक प्रतिदिन भरोसे के साथ जीना आरम्भ करें, ये जानते हुए कि हमारा स्थान परमेश्वर के साथ सुरक्षित है। परमेश्वर के वचन का अध्ययन करो और उन सब को सीखो जो परमेश्वर ने इस जीवन में मीरास में दिया है और आने वाले जीवन में भी। प्रतिदिन प्रार्थना करो और अपने स्वर्गीय पिता के साथ संगति करो, उसे और अधिकाई से जाना और उसके आत्मा को आपको आपके चरित्र और व्यवहार में मसीह की नाईं बना दें।

काश आपका विश्वास परमेश्वर पर सब कुछ देने और कार्य करने की शक्ति देने के लिये बढ़ जाये, कि आपका पिता क्या कर

रहा है (यूहन्ना 15:19) और कि ये कहे जो आपका पिता कह रहा है (यूहन्ना 7:17,18)। इसलिये कि आप परमेश्वर की कलीसिया की अगुवाई परमेश्वर पिता की इच्छानुसार करें।

सब भय का तिरस्कार करो, शंका को और अनिश्चिंतता को कि आप मसीह में क्या हैं, और आपके जीवन में उसकी बुलाहट के विषय। पवित्र आत्मा की अगुवाई को पूरी तरह अपना लो और उसकी इच्छा जो आपके लिये है, जब आप हल पर हाथ रखते हैं कभी पीछे मुड़कर न देखें। आपको परमेश्वर द्वारा ठहराया गया है और हर चीज़ जो आवश्यक है दिया गया है . . . *"परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है जयवन्त से भी बढ़कर है"* (रोमियों 8:37)।

आप परमेश्वर के लेपालक पुत्र हो। आपके पास हर अवसर है और हर जिम्मेवारी जो इस धन्य पद के साथ आती है तो आनन्द करें और साहस विश्वास और आशा के साथ आगे बढ़ें – क्योंकि आपका परमेश्वर पिता आपके लिये और आपके साथ है! आमीन! 🕮

स्वर्गीय नागरिकता

बाइबल आधारित दृष्टिकोण विकसित करना

डा. विक टोर्स जूनियर की शिक्षण से लिया गया

परिचय

नागरिकता का बाइबल आधारित सिद्धान्त हर विश्वासी के लिये बहुत महत्वपूर्ण है। प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर लिखा, *"पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं"*

जैसा हर विश्वासी के लिये आत्मिक लेपालकपन में परमेश्वर के परिवार में उलझने हैं उसी प्रकार से स्वर्गीय नागरिकता में भी है। परमेश्वर के राज्य के नागरिक बन जाना हमारे जीवन के हर क्षेत्र में उसका प्रभाव होना चाहिये। जिसमें हमारी समझ शामिल है कि हम हैं कौन और हम कैसे सोचते और हरकत करते हैं। इससे ये प्रभावित होता कि हम संसार को अपने चारों ओर किस दृष्टिकोण से देखते हैं और अपना प्रतिदिन का जीवन कैसे जीते हैं।

(फिलिप्पियों 3:20)। ये बाइबल आयत ये प्रगट करती है कि सभी मसीह यीशु में विश्वासी अब आगे को इस संसार के "नागरिक" नहीं हैं पर अब एक दूर महान अनन्त राज्य के हैं।

जिस क्षण हम मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा नया जन्म पाते हैं, हम आत्मिक रूप से परमेश्वर के लेपालक पुत्र बन जाते हैं (रोमियों 8:15,16)। हमारी नागरिकता "बताई गई है" या परमेश्वर के राज्य में स्थानान्तरित की गई है, जो इस संसार की नहीं है (कुलुस्सियों 1:12,13)।

जैसा हर विश्वासी के लिये आत्मिक लेपालकपन में परमेश्वर के परिवार में उलझने हैं उसी प्रकार से स्वर्गीय **नागरिकता** में भी है। परमेश्वर के राज्य के नागरिक बन जाना हमारे जीवन के हर क्षेत्र में उसका प्रभाव होना चाहिये। जिसमें हमारी समझ शामिल है कि हम हैं कौन और हम कैसे सोचते और हरकत करते हैं। इससे ये प्रभावित होता कि हम संसार को अपने चारों ओर किस दृष्टिकोण से देखते हैं और अपना प्रतिदिन का जीवन कैसे जीते हैं।

हम संसार को अपने चारों ओर किस दृष्टिकोण से देखते हैं वह हमारे प्रतिदिन के चुनाव पर महान योगदान होगा। यही तो संसार का **"दृष्टिकोण"** जाना जाता है सब लोग हर कहीं संसार के दृष्टिकोण को किसी न किसी रूप से देखते हैं जिन्हें कई कारकों से रूप दिया गया है।

मसीही होकर परमेश्वर के राज्य में हमारी नागरिकता की सही समझ हमारे संसार के दृष्टिकोण के प्रभाव का प्राथमिक रूप होगा। ये आपके एक अगुवा होने के नाते इस प्रकार जीवन में महत्वपूर्ण है कि सब देख सकते हैं कि आप परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं। ये भी महत्वपूर्ण है कि आप जीवन के इस तरीके को दोनों *"नमूना"* वा *"सिखाते"* हो उनको जिनकी आप चरवाही करते हो। 🕮

अध्याय 1

परमेश्वर का संदर्श/दृश्य

आपकी स्वर्गीय नागरिकता की समझ आपके पूरे दृश्य को प्रभावित करेगी : कि आप जीवन से सम्बंधी चीज़ों को सम्बंध और सेवकाई को किस प्रकार देखते हो। आप कैसे "देखते" हो कि तब जीवन आपके कार्यों को निश्चित या दृढ़ करते हैं। आपके कार्य आपके परिणाम को दृढ़ करेंगे। आप देखें कि ये सब आपके दृश्य से आरम्भ होता है। इसलिये ये महत्वपूर्ण है कि सही दृश्य रखें।

परमेश्वर के राज्य के दृश्य को रखना और उसके साथ आज्ञाकारिता में चलना ये दो प्राथमिक कुंजियां जीवन और सेवकाई के फलदायक होने की हैं।

स्वर्गीय नागरिकता को बेहतर समझने के लिये और कि किस प्रकार हमारे संसार के दृष्टिकोण को बनाता है, आइये शाऊल/पौलुस के जीवन को देखें (अभी रूककर प्रेरित अध्याय 8, 9, 22, 26; गलातियों अध्याय 1,2 पढ़ें) बाइबल प्रगट करती है कि किस प्रकार

उसके पूरे संसार के दृष्टिकोण में परिवर्तन ने पौलुस के जीवन और कार्यों में परिवर्तन ले आया।

शाऊल/पौलुस का नाटकीय संसार के दृष्टिकोण का परिवर्तन

शाऊल का पालन पोषण एक भक्त यहूदी घर पर हुआ। उसे उसके पिता वा परिवार द्वारा यहूदी रीति–रिवाज और प्रथाओं के प्रति अच्छे निर्देश दिये गये थे। शाऊल इब्रानी स्कूल में गया और यहूदी संस्कृति में पूरी रीति से डूब गया था।

जब शाऊल काफी बड़ा हो गया तो वह एक यहूदी मत में यरूशलेम में हो गया जो "फरीसी" कहलाता था। उसने सब प्रकार की शिक्षा ली और यहूदियों के रीति रिवाज में बड़ा जोश था। वास्तव में यहूदी अगुवों ने शाऊल में बहुत से गुण देखें एक अगुवें की तरह कि उसे एक महान रब्बी उन दिनों के गमलियेल के द्वारा प्रशिक्षित किया गया।

पौलुस को पूरी तरह यहूदियों के धार्मिक सिद्धान्तों में यहूदी वातावरण में सिखाया गया था। इतना अधिक कि वह किसी भी दूसरी सोच सोच के लिये अंधा हो गया था।

नष्ट होने का मार्ग

यहूदी भविष्यद्वक्ताओं ने पहले ही बताया है कि एक दिन मसीहा आयेगा और यहूदी लोगों को उनके शोषण/परेशानियों से छुटकारा दिलवायेगा। शाऊल के दिनों में वे लोग थे जो कह रहे थे कि एक व्यक्ति मसीह–यीशु ही वह मसीहा या उद्धारकर्ता है। ये यीशु परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखा रहा था जिसका आधार प्रेम, क्षमा और सब लोगों को स्वीकार करना है – केवल यहूदी ही नहीं पर अन्य जाति भी। बहुत से यहूदी यीशु को और उसकी

शिक्षा को स्वीकार करने लगे और मंदिर के रीति रिवाजों को छोड़ रहे थे और मसीहत में बपतिस्मा ले रहे थे।

जब पौलुस ने यीशु के विषय और इन अनुयायियों के विषय सुना जो उसके लिये जो विश्वास करता तथा मूल्यों को मानता था उसके लिये खतरा बन रहे थे वह अत्याधिक क्रोध से भर गया और उन्हें खोजने और नष्ट करने लगा। शाऊल ने उन्हें बहुत सताया और अपने आप को दमिश्क शहर जाने के लिये स्वतः राजी हो गया कि मसीहियों को कैद कर बन्दीगृहों में डाल दें।

अपने आप से बचाया गया

शाऊल के दमिश्क का दौरा उसके जीवन को बदलने का बिन्दू बन गया। जब यात्रा कर रहा था शाऊल और उसके साथियों का आमना सामना स्वर्ग में अचानक आने वाले प्रकाश से हुआ। वह इतना उजाला तथा शक्तिशाली था कि वे धरती पर गिर गये। एक आवाज जो केवल शाऊल सुन सका जो प्रकाश के बीच से आई, "शाऊल, हे शाऊल तू मुझे क्यों सताता है?" शाऊल ने उत्तर दिया "हे प्रभु आप कौन हैं?" आवाज़ ने फिर कहा, "मैं यीशु नासरी हूं जिसे तू सताता है"।

ठीक इस समय शाऊल को व्यक्तिगत प्रगटीकरण हुआ और बिना शंका के जाना कि जो हो रहा था वह वास्तविक था। अचानक अधिक जो उसने जाना है और अपने पूरे जीवन में विश्वास किया है वह अब शंका में था। वही जिसको शाऊल सताने आया था वहीं वह होगा जो उसे उसके स्वयं से बचायेगा। शाऊल ने मसीह यीशु का व्यक्तिगत प्रगटीकरण प्राप्त किया और परिणाम स्वरूप शाऊल ने अपना जीवन इस परमेश्वर के पुत्र, उद्धारकर्ता के पीछे चलने के लिये अपने जीवन को दे दिया।

अन्धा करने वाला संसार का दृष्टिकोण

शाऊल की तरह, हर व्यक्ति जो मसीह यीशु पर उद्धारकर्ता प्रभु करके विश्वास करता है उसके साथ "व्यक्तिगत प्रगटीकरण" था। उन्होंने मसीह यीशु के सत्य की ज्योति को जो उन पर प्रगट किया गया था पाया था (2 कुरिन्थियों 4:3–6)। यद्यपि शायद ये उतना नाटकीय नहीं था जितना उसका अपना मूल अनुभव था!

उद्धार के समय हमारा "आत्मिक अन्धा करने वाला" निकाल दिया गया है और हम मसीह के सत्य को बेहतर तरीके से देख सकते हैं जैसा ये धर्मशास्त्र में प्रगट किया गया है (इफिसियों 1:17–23)। हम भी ये देखना आरम्भ करते हैं कि हमारे परिवर्तन के पहले, हमने वही किया जो सोचा कि ठीक था। पर एक बार जब सत्य प्रगट किया गया है हम ये महसूस करते हैं कि जितना हमने सोचा था कि ठीक था पर वास्तव में वह गलत था!

वास्तविक सत्य के बीच में महान फर्क हो सकता है और जो सत्य हमने प्राप्त किया है – विशेषकर के कि हमने जो सोचा उसका आधार सत्य संसार था और उसके अन्धे विचारधाराएं।

हमारा संसार का दृष्टिकोण एक तरह से मसीह के सामने बनाया गया है, पर इसे दोबारा आकार में बनाना है जब हमने मसीह यीशु में उद्धार प्राप्त कर लिया है।

जिस वातावरण में पौलुस बड़ा हुआ उसके मित्र, शिक्षक, संस्कृति, धर्म और यहां तक कि उसका परिवार ने उसके दिमाग को तय करने में बड़ा योगदान दिया है या संसार का दृष्टिकोण जिसने उसे असली सत्य को देखने से रोक रखा। ये परमेश्वर के व्यक्तिगत प्रगटीकरण के द्वारा कि उसकी आंखें समझने के लिये खुल जायें।

शाऊल के प्रारम्भिक परिवर्तन के बाद (उसका नाम तब बदलकर पौलुस हो गया) इससे पहले कि उसने सेवकाई आरम्भ की ये कई वर्ष पहले हुआ। ऐसा माना जाता है कि उन वर्षों में पौलुस ने अपने विश्वास को समझने में काफी समय लिया। मसीह का आज्ञाकारी अनुयायी होने के लिये पौलुस को झूठे विश्वास को छोड़ना था, उसे ये भी सीखना था कि नये पाये हुए सत्य को जो मसीह यीशु द्वारा पाया गया उसे पूर्ण रूप से अंगीकार कर ले।

सत्य के साथ सीधा मिलाना

मेरी प्रार्थना है कि जैसे आप इस शिक्षा के अध्ययन को जारी रखते हो आप परमेश्वर के वचन के सत्य को पहचानोगे। तब सत्य के प्रकाश में अपने जीवन को जांचने के लिये समय लेना। यदि आपको विश्वास है या अभ्यास है जो बाइबल से सिखाया गया उससे सहमत नहीं है तो आपको उन चीज़ों का त्याग करना पड़ेगा और उन्हें उन सत्यों द्वारा जो परमेश्वर के वचन में पाये जाते बदलना होगा।

लगभग हम सब मसीह के पास आने के पहले, गलत/झूठे विचारों, विश्वास या अभ्यासों को विकसित किया है। उनकी जड़ें

भावनात्मक, परिचत, संस्कृतिक, प्रथाओं या धार्मिक संस्थाओं में रही हों। पर अब एक मसीही होकर आपका विश्वास या व्यवहार को मसीह यीशु के सत्य के साथ मिलाना चाहिये तथा पूरी तरह परमेश्वर वचन के साथ होना चाहिये।

मसीह के अनुयायी होकर उसकी तरह बनने की प्राथमिकता होनी चाहिये (मत्ती 10:24, 25, 1 पतरस 2:21; 1 यूहन्ना 2:6)। इसलिये कोई विश्वास या आपके जीवन में व्यवहार जो पवित्र नहीं है जो परमेश्वर के वचन से पुष्टि नहीं करता या जो आपको मसीह की तरह बनने में कम करता है उसे त्यागना होगा (इफिसियों 4:1; 1 यूहन्ना 3:2,3)।

परमेश्वर ने आपको उसकी सेवकाई की सेवा के लिये बुलाया है क्योंकि वह चाहता है कि आप उसकी कलीसिया के अगुवे बनो, मसीह की दुल्हन के (यूहन्ना 15:16, 2 तीमुथियुस 1:8–12)। वह यह भी चाहता है कि आप दिन प्रतिदिन उसके स्वरूप में अधिक बदलते जाओ (रोमी 8:29, 2 कुरिन्थियों 3:18) और उसके अभिप्राय के लिये बनाये गये। जैसा पौलुस के साथ था कि परमेश्वर ने आपको प्रभावी होने के लिये हर चीज़ उपलब्ध कराई। परमेश्वर आपकी उसके प्रति विश्वासयोग्य होने की इच्छा को जानता है और सेवकाई के प्रति जिसके लिये आप बुलाये गये हो, *"और मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का जिसने मुझे सामर्थ की है धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझ कर अपनी सेवा के लिये ठहराया"* (1 तीमुथियुस 1:12)।

अध्याय 2

हमारी नागरिकता स्वर्ग में है

आइये हम पौलुस की घोषणा को जो उसने पवित्र आत्मा की प्रेरणा से की उसे फिर से पढ़ें: *"पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हमें एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां के आने की बाट जोह रहे हैं"* (फिलिप्पियों 3:20)।

प्रेरित पौलुस के द्वारा कितना उत्तम वर्णन दिया गया है। पौलुस ये घोषणा कर रहा था कि पृथ्वी और जो कुछ उसमें है वो उसका घर नहीं है; उसकी नागरिकता स्वर्ग में है। ये घोषणा करने के द्वारा पौलुस कह रहा है कि उसका संसार के प्रति दृष्टिकोण और जीवन **स्वर्ग** से आया या **राज्य का महत्व**।

जब हमारा नया जन्म हो जाता है हमारी *नागरिकता बदल* जाती है। जैसे हमारा आत्मिक जन्म स्वर्ग से है उसी प्रकार हमारी नई नागरिकता है। ये निश्चय करने के लिये कि हम सही तरह से जीवन को स्वर्गीय नागरिकता के रूप में देखें – एक राज्य के महत्व के साथ हमें जांचने की आवश्यकता है कि हम क्या विश्वास करते हैं और क्यों विश्वास करते हैं।

आइये अब हम करीब से स्वर्गीय नागरिकता की विचारधारा को देखें।

नागरिकता

पौलुस रोमी नागरिक था, और ये समझा जाता है कि निवासी होने के कारण या रोम के लेपालक नागरिक होकर जिसमें **अधिकार, लाभ और कर्त्तव्य शामिल** है जो विदेशियों के पास नहीं हैं (देखें प्रेरित 16:37; 21:39; 22:28; 23:27)।

पर पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को **आत्मिक** नागरिकता के विषय लिखा (फिलिप्पियों 3:20)। वह चाहता है कि वे समझें कि जैसे शहर फिलिप्पी रोम की एक बस्ती थी इसलिये फिलिप्पी की कलीसिया स्वर्ग की एक बस्ती थी।

जब हम नया जन्म पा लेते हैं, प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु जानकर स्वीकार करते हैं तो हमारी नागरिकता पृथ्वी पर से स्वर्ग में बदल जाती है। फिर आगे को हम भारतीय, एशियन, अफ्रीकन, यूरोपियन, स्पेनिश या अमेरिकन नहीं हैं। हम प्रथम और बड़े मसीही हैं। हमारी स्वामी भक्ति और विश्वास योग्यता पहले स्वर्ग के नागरिक के रूप में है। ये नई नागरिकता पृथ्वी की हर चीज़ पर प्राथमिकता होनी चाहिये।

बाइबल ये प्रगट करती कि उद्धार के समयः

- हमारी आंखें खुल गईं (2 कुरिन्थियों 4:3–6)।
- हम अंधकार से ज्योति में गये (2 कुरिन्थियों 4:6; 1 पतरस 2:9)।
- हम शैतान की शक्ति से परमेश्वर की शक्ति में आ गये (कुलुस्सियों 1:13)
- हमने पापों की क्षमा पाई है (इफिसियों 1:7) और
- हमने उनके बीच मीरास पाई है जो मसीह में विश्वास लाने के द्वारा पवित्र किये गये हैं (प्रेरित 26:18)।

आत्मिक मीरास का हिस्सा होकर, हम संसार के नागरिक से स्वर्गीय नागरिक बन गये। परमेश्वर के अनन्त राज्य के सदस्य होकर हमें स्वर्ग के राजा का प्रतिनिधित्व जहां कहीं जायें करना होगाः *"सो हम मसीह के राजदूत हैं मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है : हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो"* (2 कुरिन्थियों 5:20)।

हां! हम स्वर्ग के नागरिक हैं और इससे अधिक हमारे राजा मसीह यीशु के लिये राजदूत हैं! उसके राजदूत होकर, हमें सामर्थ और अधिकार दिया गया है जो राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु से बहता है (मत्ती 16:19, 28:18, तीतुस 2:15)। ये सामर्थ और अधिकार हमको दिया गया है कि परमेश्वर की इच्छा पर चलें अपनी पर नहीं।

समस्या

हमारी नई पाई गई नागरिकता में समस्या हो सकती है। बाइबल वर्णन करती है, *"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गई हैं"* (2 कुरिन्थियों 5:17)।

हम नई सृष्टि हैं और अब स्वर्गीय राज्य के नागरिक हैं। पर समस्या ये है कि **हम अभी तक नहीं जानते या पूरी तरह नहीं समझते कि अधिकार, सुविधायें और हमारी नई नागरिकता के कर्तव्य क्या हैं।**

इसलिये कि हम नहीं समझते अपने नये जन्म की नागरिकता को हम पुरानी रीति–रिवाजों देश की संस्कृति जिसमें बड़े हुए जीते रहने का प्रयास करते हैं। ये पुरानी प्रथायें अक्सर सीधे सत्य की अनाज्ञाकारिता और हमारे नये राजा मसीह यीशु के और उसके वचन के उच्च स्तर की अनाज्ञाकारिता में हैं।

ऐसा क्यों है? और अधिक महत्वपूर्ण ये है कि ये कैसे बदल सकता है?

अध्याय 3

हमारा संसारिक दृष्टिकोण

हर एक मनुष्य जो कभी उत्पन्न हुआ वह कुछ प्रकार का संसार का दृष्टिकोण विकसित करता है। हमारा संसार का दृष्टिकोण कई चीज़ों द्वारा बनता है जिसमें हमारी शिक्षा और पालन पोषण, समाज और संस्कृति जिसमें हम रहते सब शामिल होती है। किताबें जो हम पढ़ते, शिक्षक जो हमारे पास हैं और हमारा खुलासा टेलीविजन, रेड़ियों या समाचार पत्रों का। बहुत से लोगों के लिये उनका संसार का दृष्टिकोण वह है जो उन्होंने अपने आप पास के प्रभाव से प्राप्त किया है।

बहुत से लोगों ने अपना संसार का दृष्टिकोण नहीं पहचाना है या उनके महत्व को कि जीवन को किस प्रकार चलना चाहिये। ये केवल दिन प्रतिदिन जीवन जीते हैं, विवेकपूर्ण नहीं या इरादों से अपने संसार के दृष्टिकोण में नहीं जीते हैं। उनका संसारी दृष्टिकोण बाइबल आधारित या संसारिक हो सकता है या इसके बीच का हो सकता है।

दुःख की बात है कि हमारा अधिकतर संसार के प्रति दृष्टिकोण लोगों के द्वारा और हमारे आसपास के वातावरण के द्वारा बनाया गया है जो अक्सर टूटे होते और पाप के द्वारा अंधकारमय होते हैं। इस प्रकार

हमारा संसार का दृष्टिकोण टूटा–पूरा होता है। इस प्रकार का दृष्टिकोण संसार के प्रति रखकर हमें बहुत सी चीज़ों में धोखा हो सकता है।

जब हमारे सोच और विश्वास को "संसार" द्वारा बनाया जाता है, व्यर्थ विचारों, झूठे धर्म और अधर्म से बनाये जाते हैं। तो हम **संसारिक दृष्टिकोण** में ही अनन्त करते हैं (फिलिप्पियों 3:17–19)।

हमें परिवर्तन क्यों आवश्यक है

जिस क्षण हम मसीह में विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं, हमारे सब पाप क्षमा हो जाते हैं (कुलुस्सियों 1:14)। हमारे पाप के दण्ड की कीमत मसीह के लहू के द्वारा अदा की गई है (रोमियों 3:24,25)।

जब हमें क्षमा कर दिया गया तो हमारे पापों को परमेश्वर द्वारा फिर याद नहीं किया जाता (इब्रानियों 10:16,17)। हमारे पूर्व को परमेश्वर पूरी तौर से शुद्ध और पवित्र देखता है (1 कुरिन्थियों 6:9–11)।

पर मसीह में आने के पहले के हमारे पापमय प्रभाव अभी भी हमारे अन्दर बने रहते हैं। बाइबल ये प्रगट करती है कि उद्धार के बाद हमें अपने दिमाग और हृदय के परिवर्तन की आवश्यकता है (2 कुरिन्थियों 3:18; इब्रानियों 10:14; रोमियों 8:29; 12:1,2)। ये परिवर्तन हमें सोचने और मसीह के अनुयायी होकर चलने में करेगा और भिन्न और अधिक धार्मिक संसार का दृष्टिकोण होगा।

हमारा संसारी दृष्टिकोण अक्सर हमें पुनः आयोजित करने या बाइबल के धार्मिक स्तर पर चलने में रूकावट डालता है। हम परमेश्वर के राज्य के नागरिक फलदायक रूप से नहीं जीते हैं या अपनी नई स्वर्गीय नागरिकता का आनन्द लेकर लाभ नहीं उठाते। हम लगातार इसे व्यवहार में लाते हैं या उन चीज़ों पर विश्वास करते जो बाइबल के विरोध में होती हैं। या हम वापस पापमय जीवन शैली में गिर जाते हैं।

आइये थोड़ा और अधिक अपने संसार के दृष्टिकोण के विषय में अध्ययन करें कि ये क्यों ऐसा होता है।

आपके पास एक संसार का दृष्टिकोण शामिल है, कि आप बहुत सी चीज़ों को कैसे देखते हो जिसमें सम्बन्ध, परिवार, कार्य, सरकार व धर्म शामिल हैं। आपका संसारी दृष्टिकोण आपके सारे निर्णयों और कार्यों पर प्रभाव डालता है।

इसलिये कि हमारा संसार का दृष्टिकोण इतना महत्वपूर्ण है कि हम कैसे रहते हैं और सेवकाई का काम करते हैं। आइये "संसार के दृष्टिकोण" को नज़दीक से देखें:–

1. संसार का दृष्टिकोण वो है कि हम किस दृष्टि से देखते और संसार का अनुवाद करते हैं।
2. संसार का दृष्टिकोण जीवन के विषय में विश्वासों का जमा करना है और पूर्ण संसार का या तो व्यक्तिगत या झुण्ड द्वारा देखा जाता है।

दुर्भाग्यवश, बहुत से ऐसा जीवन जी रहे हैं कि जो बाइबल आधारित दृष्टिकोण से मेल नहीं खाते सिर्फ इसलिये कि बहुत से कारणों से उन्हें धोखा दिया गया है जो संसार के दृष्टिकोण को बनाता है।

धोखा

धोखे का स्वाभाव अशुभ/डरावना है। एक जिसे धोखा दिया गया है अक्सर अनजान है कि उसे (पुरुष/महिला) धोखा दिया गया है (2 तीमुथियुस 3:13)। हम में से हर एक के पास अपने हृदय में धोखा और दुष्टता की क्षमता है (यिर्मयाह 17:9)। इसलिये अपने हृदय को जांचने के लिये हमें सत्य का साधन चाहिये।

परमेश्वर ने अपनी बुद्धि से अपने आप को प्रगट किया है और हमें उसका सत्य। सदियों से पवित्र आत्मा ने परमेश्वर के सेवकों

को प्रेरित किया है कि इस सत्य को लिख दें। इन लेखों को सुरक्षित रखा गया है और पीढ़ियों में दिया गया है और आज उसे बाइबल के नाम से जाना जाता है। ये पवित्र धर्मशास्त्र हमारे लिये एक कम्पास की तरह सत्य की ओर हमारा मार्गदर्शन करते हैं, और एक दीपक की तरह जो सत्य को प्रकाशित करता है (भजन संहिता 119:105)।

हमें हमेशा जांच करना चाहिये कि जो हम विश्वास करते और क्यों बाइबल के विरुद्ध विश्वास करते हैं जो परमेश्वर का वचन है, जो हमें सत्य को प्रगट करता है। ये इस जांच की प्रक्रिया के माध्यम से होता है, परमेश्वर के वचन के साथ एक स्तर की तरह जो हम सत्य से धोखे और त्रुटियों को पहचानेंगे।

यदि हम अपने मूल्यों और विश्वासों की कभी जांच नहीं करते तो हम निश्चय नहीं कर सकते कि जो हम विश्वास करते वह सत्य के आधार पर है। यदि हम सत्य में नहीं हैं। तब हमें धोखे या झूठ में होना चाहिये।

ये प्रारम्भिक कारण है क्यों बहुत से लोग भटक जाते हैं: बुद्धि से जीने के बदले और परमेश्वर के वचन के सत्य से, वे संसार के आधारभूत स्तर पर जीते हैं। वे संसार के अधर्म के दृष्टिकोण द्वारा निर्देशित किये जाते हैं और उनका व्यवहार उनके विश्वास को प्रगट करता है।

वे न केवल भटक जाते हैं पर दूसरों को भी भटकाते हैं: *"फिर उसने उन से एक दृष्टान्त कहा, क्या अन्धा, अन्धे को मार्ग बता सकता है? क्या दोनों गड़हे में न गिरेंगे?"* (लूका 6:39)।

इसलिये बाइबल हमें सावधान कराती है कि सत्य और जीवन के लिये संसार के दृष्टिकोण से सावधान रहो। *"चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा आहेर न कर ले जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के*

अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं" (कुलुस्सियों 2:8)।

नीचे दिये गये कुछ धर्मशास्त्र के हिस्सों का अध्ययन करने के लिये थोड़ा समय निकालें कि संसार के दृश्य के प्रति परमेश्वर के महत्व की महान समझ प्राप्त कर सको जैसे उसके राज्य के सत्य का विरोध करते हैं: यूहन्ना 18:36; रोमियों 12:1,2; 1 कुरिन्थियों 3:18,19; 6:2; 7:31; गलातियों 4:3; कुलुस्सियों 2:20; याकूब 4:4; 2 पतरस 1:4; 1 यूहन्ना 2:15–17; 4:4–5)।

अपने आप को जानने का महत्व

यदि हमारे जीवन की बुनियाद संसार के विचारों, मनुष्य के रीति रिवाजों और संसार के अधर्म के सिद्धान्तों पर बनी है तो हम घर नहीं बना सकेंगे जो स्थिर रहे (मत्ती 7:24–27)। फिर भी ये जानना कि अधर्म का संसार का दृष्टिकोण अक्सर उसमें हम इतने आराम से हैं कि उन्हें बदलने में कठिनाई होती है।

हमारा संसार का दृष्टिकोण जन्म से बनता है, हमारे पूरे जीवन के अनुभव से, और हमारा एक हिस्सा बन जाता है। ये हमारे लिये बाइबल आधारित या स्वर्गीय दृश्य से देखने के लिये कठिन बना देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि क्यों बाइबल अपने आपको जानने के महत्व पर जोर देती है और सही तरीके से अपने आप को देखना है: *"यदि हम अपने आपको जांचते तो दण्ड न पाते"* (1 कुरिन्थियों 11:31, इसे भी देखें: यिर्मयाह 17:9, 10; 1 कुरिन्थियों 2:10–16)।

अपने आप को जानना में ये समझ शामिल है कि आपके पास ये पद या स्थान क्यों है, मत, विश्वास और महत्व/दृश्य जो आपने जीवन में बनाये हैं। समझ को प्राप्त करना कि आप जीवन को क्यों देखते हो कि जिस प्रकार आप करते हो वह आपको किसी भी गलत दृश्य से बदलने में सहायता करेगी जो आपकी आत्मिक पहचानने पर प्रभाव डालेगी।

ये विशेष करके महत्वपूर्ण है जैसे ये सेवकाई की अगुवाई में उपयुक्त है, जबकि आपको अगुवाई करने और मसीह की दुल्हन की देखभाल करना सौंपा गया है आपको प्रभाव दिया गया और कुछ की जिम्मेवारी दी गई है जिसे परमेश्वर गहराई से प्रेम करता है : उसकी कलीसिया, उसके लोग। आप को सत्य को साफ देखने योग्य होना चाहिये और दूसरों को सत्य में अगुवाई करने के लिये आपको उसमें (सत्य में) जीना होगा। 🕮

अध्याय 4

जब हमारा संसार का दृष्टिकोण रूकावट बन जाता है

जैसा हमने सीखा है कि संसार का दृष्टिकोण पूर्ण रूप से वह दृश्य है जो एक देखता है और संसार का बयान करता है। ये दृष्टि से है कि एक निर्णय लेता कि किस प्रकार से जीना है। इस संसार में अगुवाई करना है।

एक संसार का दृष्टिकोण जीवन के विषय विश्वासों को शामिल करना है। ये विश्वास हर चीज़ की समझ में हो जाते हैं जिसमें बाइबल शामिल है।

इसलिये कुछ भी जो एक के संसार के दृष्टिकोण में जो अड़चन डालता या सत्य को देखने की योग्यता में दखल डालता उसके साथ निपटना चाहिये।

उदाहरण के लिये, प्रेरित पौलुस ने अपने स्वयं के जीवन में ये पहचाना कि किस प्रकार उसका व्यवस्था के प्रति प्रेम ने अनुग्रह के संदेश को जो मसीह लेकर आया उसे स्पष्टता से देखने में रूकावट पैदा की थी (पढ़ें 2 कुरिन्थियों 3:11–18)।

सात ''परदे'' (घूंघट) जो सत्य को ढांपते हैं/रुकावट डालते हैं

हमारा संसार का दृष्टिकोण साधारणतः सात बड़े प्रभाव से बनता है। इस शिक्षण के अभिप्राय के लिये मैं हर प्रभाव को एक परदे की तरह देखता हूं। यदि हम इन परदों के असर से अनजान हैं जिनके द्वारा अक्सर हम देखते हैं हम ये नहीं अहसास करेंगे कि हम क्यों सत्य को स्पष्ट रूप से नहीं देखते।

1. हमारे पापमय स्वाभाव का "परदा"

हमारे पापमय स्वाभाव का प्रभाव जटिल है फिर भी बहुत मज़बूत है। सब मानव पाप करते हैं, *"क्योंकि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं"* (रोमियों 3:23)। पाप को अक्सर ये बताया जाता जो चिन्ह खो देता, और परमेश्वर की मांग के अनुसार जीने में असफल होना।

पर वे कारण कि हम क्यों परमेश्वर की धार्मिक आज्ञा के अनुसार जीने में असफल रहे–पाप–बहुत गहराई में है। हम पाप करना चुनते क्योंकि हर एक मनुष्य पाप के स्वाभाव में जन्मा है, आदम से हमने भ्रष्ट स्वाभाव ले लिया है। एक अपराध का परिणाम (आदम का) दण्ड सब मनुष्यों के लिये था: *"इसलिये जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निर्मित्त धर्मी ठहराये जाने का कारण हुआ"* (रोमियों 5:18)।

परीक्षा के विरुद्ध युद्ध

जब हम प्रभु यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता करके ग्रहण करते हैं तब हमारे सब पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। एक समय जब पाप ने हमारे जीवन में अपनी सामर्थ/अधिकार रखा ये उद्धार के समय तोड़ दिया गया है (रोमियों 6:5–11)। हमें नया स्वाभाव

दिया गया है जो परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थ किया गया है कि पाप और शैतान का सामना कर सके (रोमियों 6:12–14, 8:1–8)।

फिर भी पाप का असर या पापमय चुनाव की पीड़ा कभी कभी हमारे जीवनों में बनी रहती है। ये मसीही होकर हमारे चुनाव पर असर डाल सकती है। आगे उद्धार के बाद भी हम परीक्षाओं का अनुभव करते हैं। ऐसा समय भी है कि हमारे शरीर की पूर्व की अभिलाषा हमें पाप में वापस खींचना चाहती हैं (रोमियों अध्याय 7; 13:14; गलातियों 5:16–26; याकूब 4:1–9)।

इन कारणों से ये ऐसा है मानो हमारे दो स्वाभाव हैं जो एक दूसरे के साथ युद्ध में हैं। पौलुस ने इसका वर्णन किया है, उसके उत्तम इच्छाओं के बावजूद, वह अभी भी ऐसा समय है जब वह अपने पुराने मनुष्यत्व के स्वाभाव के द्वारा प्रभावित हैः *"क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु बास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूं"* (रोमियों 7:18–19)।

हमारे पूर्व पाप के स्वाभाव का परदा और उसकी अपवित्र इच्छाएं, जब इनका आमना–सामना नहीं किया जाता और न विजय पाते हैं ये बहुतायत से हमारी सत्य को देखने और प्रभु की आज्ञाओं को मानने में रूकावट डालती है।

यद्यपि हमें अपने शारीरिक स्वाभाव और पापमय इच्छाओं के विरुद्ध संघर्ष/युद्ध करना चाहिये एक शुभः समाचार हैः हम पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह की सामर्थ में पाप के स्वाभाव पर **हम विजय पा सकते हैं।**

2. परिवार का "परदा"

सबसे अधिक प्रभाव हमारे परिवार के पालन पोषण के द्वारा हमारी सोच को बनाते हैं। आपसी आदान–प्रदान माता–पिता के साथ (या इसका कम होना) साथी के साथ, रिश्तेदारों के साथ हमारा प्रारम्भिक प्रभाव है। ये प्रभाव बहुत मज़बूत हैं क्योंकि ये प्रारम्भिक बुनियाद बनाते हैं कि हम किस प्रकार सूचना और अनुभवों की प्रक्रिया करती हैं।

बाइबल प्रगट करती है हमारे प्रारम्भिक परिवारिक प्रभावों को बनाने की शक्तिः *"लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिसमें उसको चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा"* (नीतिवचन 22:6)।

"प्रशिक्षण" जो परिवार देता वह क्रियाशील हो सकता, इरादतन या दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है। बच्चे अधिक घर से सीखते जो उनके सामने नमूना रखा जाता और जो उन्हें बताया जाता। उदाहरण के लिये, यदि माता–पिता लगातार बच्चों के साथ प्रार्थना करते तो वे बच्चों को सिखा रहे कि प्रार्थना एक प्राथमिकता है, भले ही वे उन्हें न बताते हों। या माता–पिता अत्याधिक घबराते हों कि क्या होगा तो वे बच्चों को भयभीत होना और जीवन में असुरक्षा सिखा रहे हैं।

बहुत समय, जब बच्चे छोटे होते हैं तो जो वे देखते उन्हें गलत समझ लेते और गलत परिणाम निकाल लेते हैं। ये गलत समापन तब उन पर प्रभाव डालते कि कैसे जीने या जीवन को देखते हैं। टूटा हुआ "परदा" या अधर्मी बचपन का पालन पोषण ये गहराई से जड़ पकड़े है और अक्सर पहचानना कठिन है। ये यहा तक कि परमेश्वर और उसके मार्गों को गलत समझ सकती है।

उदाहरण के लिये, यदि धरती का पिता क्रूर है या प्रेम न करने वाला तो ये बहुत कठिन होगा कि बाद में बच्चा विश्वास करें कि पिता परमेश्वर प्रेमी है। हमारा ये धरती पर का उदाहरण अक्सर हमारे विचारों को बनाता है या "संसार के दृष्टिकोण" को। ओह! हमें कितना पवित्र आत्मा के कार्य की आवश्यकता है और परमेश्वर के वचन की कि हमें छुटकारा दे तथा चंगा करें!

पास्टर से पास्टर तक

मेरा एक अच्छा मित्र है जिसका पालन पोषण एक गाली देने वाले पिता के साथ हुआ था। पिता भरोसेमन्द नहीं था और अक्सर परिवार को छोड़ देता था और उनकी बहुत सी जरूरतें पूरी नहीं करता था। जब वह मित्र अन्त में मसीह यीशु के पास उद्धार में आ गया, वह पापों की क्षमा के विषय सीखने के लिये धन्यवादित था और कि उसके स्वर्गीय पिता के साथ पुनः सम्बन्ध स्थापित हो गया था।

पर जैसे ही उसने गम्भीर परीक्षा का सामना किया वह परमेश्वर पर भरोसा करने से डर गया उसने सोचा कि उसके ध रती के पिता की तरह परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया है और सत्य में प्रेम नहीं किया। मेरे मित्र ने चुना कि जो बाइबल परमेश्वर के विषय में बताती है उस पर भरोसा न करना पर उसने परमेश्वर को अपने बचपन के "परदे" से देखा। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उसकी आवश्यकताओं की चिन्ता नहीं कि और निश्चय किया कि परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

अन्त में उसके "संसार के दृष्टिकोण" ने उसे प्रभावित करके परमेश्वर के भरोसा करने और समर्पित सम्बन्धों से अलग कर दिया। बहुत वर्षों के बाद उसने ये अहसास किया कि उसके बचपन के "परदे" ने उस पर डाका डाला और जो सम्बन्ध परमेश्वर के साथ उसने आनन्द किया और परमेश्वर के वचन जिस पर विश्वास किया सब समाप्त कर दिया था।

3. शिक्षा का "परदा"

बच्चे बड़ी आसानी से दूसरों के प्रभाव में आ जाते हैं। विद्यार्थी होकर वे अक्सर हर चीज़ को स्वीकार कर लेते हैं जो वे सत्य की तरह सिखायें जाते।

परिणाम स्वरूप शिक्षा के संस्थानों का बड़ा मज़बूत प्रभाव पड़ता है कि किस प्रकार व्यक्ति सोचता और लेता है विशेष रूप से किस प्रकार के जीवन और सत्य को देखते हैं, *"कोई तुम्हें व्यर्थ बातों से धोखा न दें क्योंकि इन्हीं कामों के कारण परमेश्वर का क्रोध आज्ञा न मानने वालों पर भड़कता है"* (इफिसियों 5:6)।

हम में से अधिकतर को स्कूल में चीज़ें सिखायी गयी है कि परमेश्वर के सत्य से न मिलाना। इन चीज़ों ने हमारे संसार के दृष्टिकोण को बनाया और हमारे सत्य को देखने व उसमें जीने की योग्यता को नष्ट कर सकता है।

एक उदाहरण की तरह कई बच्चों को स्कूल में सिखाया जाता कि संसार की सृष्टि नहीं की गई पर ये "अपने आप बन गई"। फिर भी बाइबल स्पष्ट रूप से वर्णन करती है कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की (उत्पत्ति अध्याय 1 और 2, यूहन्ना 1:3) दुर्भाग्य से संसार का दृष्टिकोण ये स्वीकार करने का कि कोई सृष्टिकर्ता नहीं है ये बाद में परमेश्वर पर विश्वास करने में या ये स्वीकार करने में कि उसने इसे किसी अभिप्राया से बनाया। उसमें अड़चन पैदा कर सकते हैं।

4. जोड़ों के "परदे" (साथियों)

हमारे मित्र और संगी साथी प्रभाव डालने का दूसरा साधन है कि हम किस प्रकार से देखते और सोचते और जीवन को देखते हैं। मित्रता का आनन्द अक्सर हमें संसार के व्यवहार, बोलचाल और "मित्रों" के व्यवहार की अनदेखी का कारण बनते हैं। हम सहते

हुए आरम्भ करते, तब स्वीकार करते और अन्त में उनसे सहमत होते हैं। परिणाम स्वरूप हम उनकी तरह बन सकते हैं (नीतिवचन 12:26; 1 कुरिन्थियों 5:11, 15:33)।

हमें सीखने की आवश्यकता है कि मित्र कैसे चुनें और हमारे मित्रों को हमें चुनने ना दें। मित्रों और साथियों की महान शक्ति और हमारे जीवनों पर प्रभावित हैं। उनके पास क्षमता है कि वह मारे जीवनों पर प्रभाव डाल दें।

बाइबल बिल्कुल स्पष्ट है लोगों के साथ सम्बंध रखने के विषय जो परमेश्वर से दूर रहते या परमेश्वर को गम्भीरता से नहीं लेते : *"अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं उन्हें ताड़ लिया करा और उनसे दूर रहो"* (रोमियों 16:17)। (इसे भी देखें नीतिवचन 12:26, 1 कुरिन्थियों 15:33; 1 तीमुथियुस 6:3–5)।

5. सांस्कृतिक "परदा"

सांस्कृतिक वातावरण जिसमें हम बढ़ते हैं हमें बहुत जटिल तरह से प्रभावित करते हैं। ऐसी भी सांस्कृतियां हैं जो क्षमा पर विश्वास करती हैं और दूसरे बदला लेने पर विश्वास करते हैं; संस्कृतियां जो विवाह पर विश्वास रखते हैं कि एक पत्नी हो और दूसरे कई पत्नियों पर विश्वास करते हैं, संस्कृतियां जो लोगों को अलग करते हैं और उनके स्थान को उनकी जनजाति, जाति और लिंग या खाल के रंग पर निश्चय करती हैं और दूसरे लोगों की समानता पर विश्वास करते हैं।

संस्कृतियों की भिन्नता की लम्बी सूचि है, फिर भी एक मसीही होकर हम संसार की संस्कृतिक के शिकार नहीं हैं। अब बाइबल ही हमारे व्यवहार के लिये अब स्तर है। धर्मशास्त्र सिखाते हैं कि

यदि संस्कृति जिसमें हम रहते वह परमेश्वर के वचन से सहमत नहीं है तो हमें उन सांस्कृतिक प्रथाओं को समाप्त करने की इच्छा होनी चाहिये। हम सब जो भी हैं और जो भी हम मसीह में होकर करते हैं उसे परमेश्वर के वचन से पूरी तरह सहमत होना चाहिये। इस प्रकार का सही दिमाग मान्यताओं/विश्वास के ऊपर प्राथमिकता रखता है या हमारे संस्कृति की प्रथाओं पर।

हमारी नागरिकता अब स्वर्ग में है और हमारी संस्कृति स्वर्गीय धार्मिकता, शान्ति और पवित्र आत्मा में आनन्दित हैं: *"पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है, और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहां से आने की बाट जोह रहे हैं"* (फिलिप्पियों 3:20); *क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं, परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है"* (रोमियों 14:17)।

यदि संस्कृति जिसमें हम रहते वह परमेश्वर के वचन से सहमत नहीं है तो हमें उन सांस्कृतिक प्रथाओं को समाप्त करने की इच्छा होनी चाहिये। हम सब जो भी हैं और जो भी हम मसीह में होकर करते हैं उसे परमेश्वर के वचन से पूरी तरह सहमत होना चाहिये। इस प्रकार का सही दिमाग मान्यताओं/विश्वास के ऊपर प्राथमिकता रखता है या हमारे संस्कृति की प्रथाओं पर।

उदाहरण के लिये कुछ सांस्कृतियों में अपने लाभ के लिये या कुछ पाने के लिये झूठ बोलना अच्छा समझा जाता है। पर बाइबल बिल्कुल स्पष्ट है कि मसीहियों को न झूठ कहना है और ना दूसरों का फायदा उठाना है (इफिसियों 4:25; कुलुस्सियों 3:9)। तो इस मामले में सांस्कृतिक संसार के दृष्टिकोण बदलना चाहिये

और व्यवहार भी बदलना चाहिये जो परमेश्वर के वचन के स्तर पर हो।

6. रीति रिवाज के "परदे"

रीति रिवाज वो गतिविधियां और व्यवहार हैं जो दूसरों के साथ हमारे चक्र के सम्बंधों में या समुदाय के साथ बांटते हैं। वे दिनचर्या के कार्य को परिवारों, स्कूलों, मित्रताओं, सांस्कृतियों और कलीसियों में करने का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये असामान्य नहीं है कि ये पता करना कि ये रीति–रिवाज़ वे कुछ है जो झूठे धर्म पर या दूसरे प्रकार के धोखे, संसारिकता या मानव अविष्कारों पर आध ाारित हैं। भले ही ये हमारे लिये आम प्रथायें/व्यवहार है पर वे बाइबल आधारित धार्मिक शिक्षाओं के और शिक्षण के विरोधाभास में हैं और हमारे जीवनों में बताया जाना चाहिये।

इस प्रकार की कुछ बाइबल विपरीत रीति रिवाजों में मृतकों के लिये प्रार्थना करना या धार्मिक सन्तों के लिये प्रार्थना करना शामिल है, साथ ही अंध विश्वास में हिस्सा लेना या अपवित्र रीतियों को करना और गैर मसीहियों के जश्नों को मनाना है।

यीशु ने स्पष्ट रूप से उनको सम्बोधित किया जिन्होंने परमेश्वर के वचन के सत्य के ऊपर उनकी रीति रिवाज़ों पर मानना अधिक समझाः "क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाओं को एक ओर रखकर, तुम मनुष्यों के रीति रिवाजों को पकड़े रहते हो – बर्तनों का मांजना, कटोरों को मांजना और ऐसे दूसरी चीज़ें तुम जो करते हो। उसने उनसे कहा, *"तुम परमेश्वर की आज्ञाओं का तिरस्कार करते हो कि अपनी रीति रिवाज़ रख सको"* (मरकुस 7:8,9, साथ में कुलुस्सियों 2:16–23 भी देखो)।

7. अनुभव का "परदा"

लगभग हर एक व्यक्ति सुअवसरों के और अच्छे भविष्य के मौसम का अनुभव करते हैं साथ ही हृदय विदारक पीड़ाओं और

दुःखद बातों का अनुभव करते हैं। ये इन समयों में है कि हम परमेश्वर और जीवन के परिणामों को खींचें या सत्य पर आधारित न हों।

हम में से हर एक इन अनुभवों से बनाये गये हैं और कोई भविष्य की बात नहीं है कि हमारा समापन क्या होगा। दो व्यक्ति महान धन की प्राप्ति का अनुभव कर सकते हैं। धन एक को नाश करता वैसे ही वही धन/सम्पत्ति दूसरे में उदारता की आत्मा उत्पन्न करता है। दो व्यक्ति भयंकर दुःख का अनुभव कर सकते हैं। एक में वह निराशा उत्पन्न करती है और दूसरे व्यक्ति में ये विजय पाने का दृढ़ निश्चय उत्पन्न करती है, त्यागने की नहीं।

ये समझना महत्वपूर्ण है कि इस प्रकार के जीवन के अनुभव हमारे संसार के दृष्टिकोण को अत्याधिक रूप से प्रभावित करते हैं। हमारी परमेश्वर की भूमिका के प्रति गलत धारणा चोट लगने वाली परिस्थिति में नकारात्मक प्रभाव हमारे परमेश्वर के दृश्य में डालते हैं। जिस संसार के दृष्टिकोण को हमने अपनाया है ऐसे समय में उसे परमेश्वर के वचन के प्रकाश में मूल्यांकन करना चाहिये।

पास्टर से पास्टर तक

यदि हम या हमारी कलीसिया के लोगों ने विचारों को अपना लिया है या वे प्रथायें जो बाइबल के परमेश्वर के प्रगटीकरण के विपरीत हैं या उसके इस जीवन के अभिप्रायों से विपरीत हैं तो हमें उन विचारों को प्रार्थनामय होकर जांचना चाहिये। हमें प्रभु के चंगा करने वाले स्पर्श की आवश्यकता होगी।

- चोट लगने वाली हानि से चंगाई या दूसरे अनुभव
- भय से छुटकारा
- एक नये आश्वासन कि परमेश्वर भरोसेमन्द है,
- परमेश्वर के हमारी आवश्यकताओं में देने के बारे में हमारी सोच को पुनः ठीक करना या

- दूसरे चुनौतियों से प्रभाव या परीक्षाएं

अपने प्रतिदिन की प्रार्थना के समय प्रभु से कहें कि वह आपको दिखाये कि यदि आपके पिछले अनुभवों में कोई "परदा" हो जो आपको जैसा वह सत्य में है देखने में रूकावट डालता है दिखाये।

संसार के दृष्टिकोण के बन्धन से आजादी

ये "परदे" और दूसरे प्रभाव हमारे दृश्य को बनाते हैं। वे हमारे "संसार के दृष्टिकोण" में योगदान देते हैं जो हम जीवन में चुनाव करते है उन्हें प्रभावित करते हैं।

यदि हमने संसार के दृष्टिकोण को ले लिया है जो संसार की पद्यति के आधार पर है या अधर्म के सिद्धान्तों पर हैं, हम परमेश्वर के राज्य को किस प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं? परमेश्वर ने जिसकी स्वीकृति नहीं दी तो उसको कैसे आशीषित कर सकता है? **परमेश्वर ने जिसकी स्वीकृति नहीं दी तो उसको कैसे आशीषित कर सकता है?** परमेश्वर का धन्यवाद कि उसने हमें अपना वचन और पवित्र आत्मा हमें सतय को प्रकाशित करने को दिया है और हमें सत्यता से आजाद करने को!

क्या मैं अन्धा हूं या क्या मैं देख सकता हूं?

सो, तब हमें अपने आप से पूछना चाहिये : क्या जो मैं जीवन के विषय जो सत्य पर आधारित हैं विश्वास करता हूं जैसा परमेश्वर द्वारा अपने वचन से प्रगट किया है या झूठे "संसार के दृष्टिकोण" पर है? क्या मैं सत्य के प्रति अन्धा किया गया हूं या मैं साफ साफ देख सकता हूं? क्या ये संसार का दृष्टिकोण, बाइबल आधारित है?

बाइबल हमें प्रगट करती है कि सुसमाचार की सामर्थ इस योग्य है कि हमारी आंखें खोल दे और हमें शैतान की शक्ति के अंधकार से परमेश्वर की ज्योति मैं और उसकी विजयी मीरास में

ले चले (प्रेरितों के काम 26:17,18) पर हमें लगातार बदलते रहना है (2 कुरिन्थियों 3:18) और अपने आप को शुद्ध होने देना है या जो भी व्यवहार करते उससे साफ होता है या जो टूट फूट गया उस पर विश्वास करना है, अपवित्र या परमेश्वर के सत्य पर आधारित नहीं है।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टर और लीडर होकर, हम परमेश्वर के सामने अपने शब्दों, कार्यों और निर्णयों के लिये उत्तरदायी होंगे। *"हे भाइयो, तुम में से बहुत उपदेशक न बने, क्यों जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे"* (याकूब 3:1)।

हमें लगातार प्रभु यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता करके प्रस्तुत करते रहना चाहिये और परमेश्वर के वचन के पूरे उपदेश सही देना चाहिये उनको जिनकी अगुवाई हम करते हैं। हमें सत्य सिखाना चाहिये, हमें सत्य जीना चाहिये।

ये हमें परमेश्वर के वचन के द्वारा जांच कर अपने हृदयों को खोलकर प्राप्त किया जा सकता है और प्रतिदिन पवित्र आत्मा द्वारा कायल किये जाने से। हमें परमेश्वर के चलते रहने वाले कार्य में अपने आप को देना चाहिये ये हर एक विश्वासी के लिये विशाल है (रोमियों 12:1–2)। हमें सत्य पर प्रतिक्रिया करना चाहिये, उस पर विश्वास करें और कार्य करें (याकूब 1:22)।

अज्ञानता कोई बहाना नहीं है

गलतियों को सिखाने के लिये कोई बहाने नहीं होंगे (याकूब 3:1)। इसलिये हमें निश्चित होना चाहिये कि जो हम प्रचार करते और सिखाते वह सत्य है।

यीशु कहता है, *". . . यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"* (यूहन्ना 8:31,32)।

यदि सत्य हमें स्वतंत्र करेगा तो एक झूठ हमें बंधन में डाल देगा। बन्धन परमेश्वर की ओर से नहीं है, क्योंकि यीशु इसलिये आया कि बन्धनों की चेन तोड़ दी जाये और हम स्वतंत्र हो जायें (लूका 4:18,19)।

सत्य की अज्ञानता स्वीकार नहीं होगी एक बहाने की तरह कि सत्य को परमेश्वर के लोगों और संसार में प्रस्तुत नही कर रहे (1 कुरिन्थियों 10:1, 12:1)। चाहे झूठ जानबूझ कर है या बिना इरादों के परिणाम एक सा ही है। ये इसलिये है क्योंकि कोई भी झूठ भले ही अनजाने में बोल है अभी भी असर वैसा ही है: मृत्यु (यूहन्ना 8:42–47; 10:10)।

परमेश्वर का वचन (बाइबल) और पवित्र आत्मा (सत्य का आत्मा) दिये गये हैं जिससे हम सत्य को जानें और कि सत्य हमें स्वतंत्र करेगा। वे हमें लगातार बदलने योग्य हैं हमें संसार के अधर्मी दृष्टिकोण से स्वतंत्र करते हैं जो हमारे सत्य की समझ में रूकावट डालता है।

हमें प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिये और सत्य को जानने और जीने के लिये पवित्र आत्मा के कायम करने की प्रतिक्रिया दिखाना चाहिये। स्वतंत्रता और सत्य का ज्ञान तब हमें प्रचार करने, सिखाने और भरोसे के साथ, तथा साहस से सेवा करने योग्य बनायेगा।

ऐसे समय भी हैं जब हमारे जीवन के अनुभवों ने हमें गलत समापन बनाने की ओर ले गये हैं जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध हैं। परिणाम ये होगा कि परमेश्वर और उसके वचन पर पूरा भरोसा करने के बदले हम अपने मानवीय समझ पर निर्भर हो जायेंगे (नीतिवचन 3:5,6)।

ये गलत चुनाव की ओर ले जायेगा जिसका हमारे लिये लम्बे समय तक रहने वाला नतीजा होगा, उनके लिये भी जिनकी अगुवाई हम करते हैं। 🕮

अध्याय 5

जीवन के अनुभव बनाम परमेश्वर का वचन

इसका बाइबल स्पष्ट उदाहरण देती है (उत्पत्ति 15:1–17:21)। परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को बताया कि उनका एक स्वाभाविक पुत्र होगा (15:4–6)। सारा बहुत आधीर हो गई और जो परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की उसे बनायें नहीं रखा बल्कि वह अपने स्वयं के मानव विचार पर निर्भर रही और अपनी लौंडी को अब्राहम को दे दिया (उस समय की आम प्रथा थी)।

ये सही है कि उस लौंडी ने अब्राहम के लिये एक पुत्र पैदा किया, पर ये पुत्र अनाज्ञाकारिता और परमेश्वर के वचन पर विश्वास न करके पैदा हुआ (16:1–4) और इस़से बहुत ह्रदय को पीड़ा हुई (16:12)। ये पुत्र इश्माएल और उसकी सन्तान अरब के लोगों के पूर्वज हैं। सदियों से इश्माएल के सन्तानों और इस्राएलियों के बीच खून खराबा और युद्ध होता रहा यही परिणाम रहा।

पास्टर और अगुवा होकर हमें ये समाधान निकालना चाहिये कि अनुभवों को परमेश्वर के वचन के स्थान पर सत्य की बुनियाद के रूप में नहीं रखना चाहिये। हमारी परिस्थितियां हमारें निर्णयों का साधन नहीं हो सकते। केवल बाइबल ही हमारा साधन हैं और जो सत्य है!

हमें ये याद रखना चाहिये कि कोई जांच या परीक्षा या कठिनाइयां, कोई पीड़ा नहीं या चुनौती – पूरी तरह कुछ भी हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकता या उसके प्रेम से (रोमियों 8:37–39)। हम अपनी परीक्षा की घड़ी में उसे बुला सकते हैं और ये जानिये कि वह हमें सुनेगा और उसके मार्गों और समय में उत्तर दें।

बाइबल परमेश्वर का प्रगटन है और बुद्धि मानव पर प्रगट की गई है। भले ही आप किसी परिस्थिति का सामना करते हो, तो सत्य के लिये बाइबल आपका उत्तर है (आप बाद में इस लेख में परमेश्वर के महत्व के बारे में और अधिक पढ़ सकोगे)।

परमेश्वर हमारे साथ है

जीवन के कुछ अनुभव बहुत गड़बड़ी वाले हैं। हमें अक्सर अपनी परीक्षा के साधन को पहचानने में कठिनाई होती है। क्या हमारी परीक्षा होती या जांचे जाते हैं (याकूब 1:2–18)? क्या परीक्षा परमेश्वर की ओर से है या शैतान की ओर से या केवल मेरी देह की परीक्षा है? हम ताज्जुब करें कि हम क्यों कठिन समय से गुजर रहे हैं।

कुछ अधिक पाठ हमारे जीवन की अनिश्चिंतता से पैदा हो जाते हैं। कभी कभी अच्छे लोगों के साथ बुरी चीज़ होती है और ऐसा नहीं लगता कि त्याग हो रहा है। जबकि एक अच्छा अन्त एक परिस्थिति के लिये इस जीवन में पहचाना नहीं जाता। मसीही होकर अभी भी हमारे पास आश्वासन है कि परमेश्वर हमारे लिये है (रोमियों 8:31) और न्याय अन्त में रहेगा (गलातियों 6:7)।

कठिन परिस्थितियां, प्राकृतिक आपदायें या दुःखद घटनाएं हमें उस सोच की ओर ले जाती हैं कि इन सब घटनाओं का लेखक परमेश्वर है पर हमें याद करना चाहिये कि हम ऐसे संसार में रहते हैं जो पाप के द्वारा टूटी हुई है और अभी भी शैतान के प्रभाव में है। (1 यूहन्ना 5:19) मानव का परमेश्वर का तिरस्कार और उसके तरीके मानव के पापमय चुनाव के साथ है ऐसे संसार में हो गये जहां पीड़ा और यातना है, एक संसार जहां *"धर्मी और अधर्मी दोनों पर वर्षा होती है"* (मत्ती 5:45)।

ये जानना असम्भव है या वो सब जो हम इस जीवन के विषय में समझना चाहते हैं या परमेश्वर के विषय और उसके मार्गों के विषय। पर हम उन तथ्यों पर रह सकते हैं कि जीवन के विषय हम जो कुछ भी जानना चाहते हैं और भलाई के लिये वह सब मसीह यीशु के द्वारा उपलब्ध है। *"क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बंध रखता है हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है। जिसने हमें अपनी महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है"* (2 पतरस 1:3)।

हम वो सब चीज़ नहीं जान सकते जो परमेश्वर जानता है। वह इतना महान और बुद्धिमान है कि हम कभी हो सकते हैं। परमेश्वर के विचार और उसके मार्गों से भिन्न हैं: *"मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और तुम्हारे और मेरे सोच विचारों में आकाश और पृथ्वी का अन्तर है"* (यशायाह 55:8,9)।

तो जब चीज़ें होती हैं जिन्हें हम समझ नहीं सकते, हमारे पास मसीह के चेले होने की तरह परिपक्व होने का सुअवसर है। इन समयों में हम चुन सकते हैं कि विश्वास से चलें और अपना भरोसा परमेश्वर पर रखें। *"क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं"* (इब्रानियों 11 भी देखें) (2 कुरिन्थियों 5:7)। हमें ये

याद रखना चाहिये कि कोई जांच या परीक्षा या कठिनाइयां, कोई पीड़ा नहीं या चुनौती – पूरी तरह कुछ भी हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकता या उसके प्रेम से (रोमियों 8:37–39)। हम अपनी परीक्षा की घड़ी में उसे बुला सकते हैं और ये जानिये कि वह हमें सुनेगा और उसके मार्गों और समय में उत्तर दें।

प्रभाव की शक्ति

अनुभव अक्सर मज़बूत भावनाओं के द्वारा पूरे होते हैं। पर जैसा आप जानते हैं भाव वा भावनाएं अक्सर गुमराह कर सकती हैं। उनका भविष्य नहीं बताया जा सकता और दिन ब दिन बदल सकती हैं। हमारी भावनाओं को सत्य की ओर ले जाने में भरोसा नहीं किया जा सकता।

दो व्यक्ति एक सा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं पर फिर भी पूरे विरोध में आ सकते हैं जो उनकी प्रतिक्रिया या भावना पर आधारित हैं। हर व्यक्ति अद्‌भुत तरह से प्रतिक्रिया करता है यहां तक कि वही परिस्थितियों में। परिणामस्वरूप हर व्यक्ति अपना संसार का दृष्टिकोण बनाता है। संसार का दृष्टिकोण सत्य पर आधारित हो सकता है या नहीं हो सकता। पर ये अवश्य ही हिस्सों में व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर बनाये गये हैं।

हमारे जीवन के अनुभव बहुत से साधनों द्वारा प्रभावित हो सकते हैं जिनमें ये शामिल हैं:

परमेश्वर का प्रभाव

पूरी बाइबल में उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक ये स्पष्ट है कि परमेश्वर का लोगों के प्रति अभिप्राय और योजना है : *"क्योंकि यहोवा की यह वाणी है कि जो कल्पनाएं मैं तुम्हारे विषय करता हूं उन्हें मैं जानता हूं, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूंगा"* (यिर्मयाह 29:11)। जबकि

परमेश्वर हमारी स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन कभी नहीं करता कि चुनाव करें। ये अवश्य ही हमारे जीवन की परिस्थिति में शामिल हो सकता है, *"मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है"* (भजनसंहिता 37:23)।

यदि परमेश्वर इन परिस्थिति का कारण हीं हैं। वह इसे अभी भी हमारे भलाई के लिये इस्तेमाल कर सकता है। जब हम परमेश्वर के पुत्र, पुत्री की तरह परिपक्व होते हैं तो हम उसे अधिक पहचान करते हैं जब वह हमारी परिस्थितियों में कार्य पर है, तब हम पूरी तौर से आत्मा के कार्य पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं, और उन्हें परिस्थिति को अधिक मसीह के स्वरूप में बनने देना चाहिये (रोमियों 8:28,29)।

शैतान का प्रभाव

आपकी आत्मा का शत्रु, शैतान, चोरी करने को आता, मार डालने और नष्ट करने आता है। पर परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यीशु जीवन देने आये और बहुतायत का जीवन देने आये (यूहन्ना 10:10)।

शैतान नहीं चाहता है कि आप जीवन और स्वतंत्रता का अनुभव करें जो मसीह देता है। शैतान के पास लोगों को भटकाने के बहुत तरीके हैं, पर सबसे बड़ा हथियार धोखा देना है।

शैतान धोखे को इस्तेमाल करता है और आपके मन में परमेश्वर की भलाई और विश्वासयोग्यता के विषय शक उत्पन्न करने के प्रयास में झूठ कहता है। शैतान अनुभवों को इस्तेमाल करने का प्रयास करेगा और आपके परमेश्वर पर विश्वास को कमजोर करने के लिये परीक्षा करेगा, या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर आपको विश्वास न करने का कारण उत्पन्न करेगा कि उसकी संगति से अलग हो जाओ।

आइये, कुछ धर्मशास्त्र के पदों को दुहरायें जो शैतान के कुछ तरीकों को प्रगट करते हैं कि हम भटक जायें:

- *"क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्‌भुत काम दिखायेंगे कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें"* (मरकुस 13:22)।
- *"कि शैतान का हम पर दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं"* (2 कुरिन्थियों 2:11)।
- *"परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिये कहीं भ्रष्ट ना किए जायें"* (2 कुरिन्थियों 11:3)।
- *"और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योर्तिमय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है"* (2 कुरिन्थियों 11:14)।
- *"सचेत हो और जागते रहो क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गरजने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खायें"* (1 पतरस 5:8)।

पर आप शैतान के एक असहाय शिकार नहीं हो। आप परमेश्वर की सन्तान हो जो शैतान के कार्यों का सामना करने के लिये अच्छी तरह सुसज्जित हैं! "परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको" (इफिसियों 6:11)।

हमारे पास शैतान के विरुद्ध एक अवश्य ही सुरक्षा है। हमें परमेश्वर के वचन पर भरोसा करना चाहिये और अधिक महत्वपूर्ण ये हैं, अपना भरोसा लेखक के वचन पर करो यानि मसीह यीशु पर। हर बार जब हम परमेश्वर की आज्ञा पालन करते हैं हम अपनी आत्मा में शक्ति प्राप्त करते हैं। ये हमें शैतान का सामना करने

में सहायता करती है जिसे हमारे पास से भाग जाना चाहिये (याकूब 4:7)।

लोगों का प्रभाव

धर्मशास्त्र ये सिखाता है कि यद्यपि हम संसार में हैं हम संसार **में** हैं हमें संसार **के** नहीं हो जाना चाहिये (1 कुरिन्थियों 2:12; 1 यूहन्ना 2:15–17)। इसका मतलब है कि हमें अपनी मसीहत के महत्व को बनाये रखना है अपने विचारों या अपने कार्यों में। हमें उच्च राज्य के नागरिक की तरह रहना चाहिये, स्वर्ग का राज्य। परमेश्वर के राज्य के नियमों को ऐसे होना है जो हमारे व्यवहार और नियम का मार्ग दर्शन कर सके।

हमें अगुवाई नहीं करना है या अपने आसपास के समाज के द्वारा प्रभावित नहीं होना चाहिये। हमें परिपक्व होना चाहिये और मसीह के विश्वास में मजबूती से बढ़ना चाहिये। जिससे हम आगे को नहीं डरेंगे जो लोग हमारे विषय सोचते हैं (भजन संहिता 56:3,4, 118:6–8, नीतिवचन 29:25)। वह दिन आ रहा है जिसमें जब बहुत से लोग भटक जायेंगे, यहां तक कि वे लोग भी जिन्होंने एक समय मसीह पर विश्वास किया था (1 तीमुथियुस 4:1)। ये महत्वपूर्ण है कि हम उनके द्वारा प्रभावित न हों और न भटक जायें।

विश्वासी होकर हमें जो संसार में हैं उनसे भिन्न होना चाहिये। हमें अपने चारों ओर संसार में धार्मिकता के लिये सकारात्मक प्रभाव देना होगा। यही अर्थ "ज्योति" और "नमक" होना है (मत्ती 5:13–16)। ज्योति अंधकार को पीछे धकेल देती है। "नमक" सड़ाहट के विरुद्ध बचाने का प्रभाव है।

हमें बुलाया गया है कि हम चलते हुए, जीवित गवाह और परमेश्वर के मनुष्य जीवन को बदलने के सामर्थ की गवाही हों। सबसे अधिक शक्तिशाली तरीका जो प्राप्त किया गया है वह जो

मसीही को अलग करता है वह है हमारा दूसरों के प्रति बिना शर्त का प्रेम जो हम में परमेश्वर से ही आता है। हमें पवित्र लोग भी होना है (1 पतरस 1:13–19)। जो परमेश्वर की सेवा के लिये अलग कर दिये गये हैं (1 पतरस 2:9–12)।

हम ये पहचानते हैं कि संसार में बुरे लोग भी हैं जो दुष्टात्माओं और प्रधानों के प्रभाव **में** हैं। पर हमें ये भी पहचानना चाहिये कि अधिकतर लोग "खोई हुई भेड़ें हैं" जो तितर–बितर आशाहीन बिना मसीह चरवाहे के हैं। वे धोखा दी गई और अन्धे हैं। उनका संसारी दृष्टिकोण सत्य को जो परमेश्वर के वचन में है नहीं अंगीकार करता है।

दूसरों पर हमारा प्रभाव

विश्वासी को संसार में रहने की चुनौती है कि वह मसीह के लिये एक जीवित गवाही हो और खोये हुओं तक पहुंचना और प्रेम करना है – और फिर भी संसार के विचारधाराओं एवं प्रथाओं से प्रभावित नहीं होना है (याकूब 1:27)।

कुछ मसीहियों के बीच गलत पहुंच ये है कि केवल दूसरे मसीहियों के साथ जुड़ जाओ। जबकि ये प्रथा अच्छी जान पड़ती है, ये परमेश्वर की सब मानव के उद्धार की योजना के विरुद्ध है। यदि सभी मसीहियों को संसार से खींच लिया जाये, तो खोये हुए मसीह को किस प्रकार पायेंगे हमारे प्रेम के कार्यों के द्वारा (याकूब 2:14–16) या कभी सुसमाचार की सामर्थ को सुन सकेंगे (रोमियों 1:16, 10:14,15)।

महान आज्ञा से ये स्पष्ट है कि हम जाना है और मसीह के लिये चेले बनाना है। ये केवल पास्टरों और अगुवों की जिम्मेवारी नहीं है पर मसीह की देह में हर एक विश्वासी की है (मत्ती 28:18–20; मरकुस 16:14–18; लूका 24:36–49; प्रेरित 1:6–8)

परिस्थितियों का प्रभाव

संसार में शैतान की योजना बड़ी साधारण सी है, इसे जीवन में अनुभव पैदा करना है और ये हमें परमेश्वर के **प्रेम से अलग** करने का प्रयास करेगा जो मसीह यीशु में है।

पर हमें धर्मशास्त्र दिया गया है हमारी सहायता के लिये कि हम जानें कि किस प्रकार बुद्धिमानी से प्रतिक्रिया दिखानी है और चुनौतीपूर्ण परिस्थितिथों में। विशेषरूप से हमारे पास पुराने नियम की सभोपदेशक की पुस्तक है, नीतिवचन और कुछ हिस्सा अय्यूब का है। ये पुस्तकें बुद्धि की पुस्तकें कहलाती हैं। ये बहुत व्यवहारिक रूप से वर्णन करती हैं कि जीवन की परिस्थितियों में किस प्रकार पहुंचना या उन्हें लेना चाहिये।

आप सीख सकते हो कि किस प्रकार सब व्यवहारिक परिस्थितियों से निपटना है जिसमें ये शामिल है:–

- बहुत प्रकार के लोगों से किस प्रकार व्यवहार करूं, विद्वानों और सज्जनों से, सुस्त और मूर्खों से।
- महान स्वास्थ और सामर्थ से साथ ही कमजोरी और बीमारी से।
- धन सम्पत्ति से और दरिद्रता से और बीच में सब चीज़ों से कैसे व्यवहार किया जाये।

मसीही होकर हम जैवन्त से भी बढ़कर हैं। हमें पूरी तरह बताया गया है, और परमेश्वर के वचन से पूर्ण रूप से आश्वासन दिया गया है और विश्वास के द्वारा, कोई परिस्थिति नहीं, कुछ भी हमें परमेश्वर के प्रेम से हमें अलग नहीं कर सकती (रोमियों 8:37–39) स्पष्ट वर्णन करते हैं: *"परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर है। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं,*

न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहराई और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी"।

जिस क्षण से हम पैदा हुए हैं हम इन सब प्रकार के अनुभवों में खुल गये हैं हमें पहचानने में बढ़ना है और ये अहसास करना है कि ये समय है कि विश्वास को दिखायें, अपना भरोसा परमेश्वर पर रखो, और जो भी आपने किया है उसमें स्थिर रहो (इफिसियों 6:13) **"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है"** (इब्रानियों 11:6)।

संसार के दृष्टिकोण पर झूठी धार्मिक सिद्धान्तों का प्रभाव

जब हमारे जीवन में हमारे परमेश्वर के व्यक्तिगत समझने में गलतियां घुस आयें तो वे व्याकुलता, निराश और असफलता की ओर ले जाती है कि मसीह यीशु में अपनी पूरी दक्षता की पूर्ति करें।

पर जब गलतियां कलीसिया में घुस जाती हैं तो असर चारों ओर होता है और अत्याधिक भयानक है और ये पीढ़ियों में जारी रहेगा।

पास्टरों और अगुवों को परमेश्वर द्वारा धार्मिक विश्वास अध्ययन करने को दिया गया है और कि सत्य को जानें और लोगों को वह सत्य सिखायें। किस प्रकार से कलीसिया त्रुटियों से बची रहेगी? परमेश्वर पास्टरों और अगुवों को जो वे सिखाते हैं उसके लिये जिम्मेवार ठहरायेगा और कि वे क्या प्रचार करते और किस प्रकार जीवन जीते हैं दूसरों को नमूना देने के लिये (यिर्मयाह 23:1,2; यहेजकेल 34:1–10, 2 पतरस 2:1–22; 1 यूहन्ना 2:18ख19; 4:4–6)।

युगों से बहुत से झूठे उपदेशक व्यक्तिगत अनुभवों पर बन गये हैं ना कि बाइबल की धार्मिक सिद्धान्तों पर (सच्चाइयां और शिक्षा पर) उदाहरण के लिये बाइबल निकोलाइयों की धार्मिक

शिक्षा (प्रकाशितवाक्य 2:6,15)। बालाम की शिक्षा (2 पतरस 2:15; यहूदा 11, प्रकाशितवाक्य 2:14) और इजाबेल की शिक्षा (प्रकाशितवाक्य 2:20)। जबकि इन शिक्षाओं के विषय अधिक नहीं लिखा गया है। ये संदर्भ से स्पष्ट है कि इन झूठी शिक्षाओं से बहुत से लोग भटक गये हैं।

सामान्य रूप से जो हम झूठी शिक्षाओं के बारे में जानते हैं वह ये हैं:–

- बाइबल और सत्य के विरुद्ध शिक्षाएं (यशायाह 8:20)।
- साधारणतः व्यक्ति के अनुभवों, स्वप्नों और अनुवादों के आधार पर (यिर्मयाह 23:25–27)।
- मानवीय समझ को आकृषित करती व आग्रह करती है (2 तीमुथियुस 4:3,4)।
- परमेश्वर के प्रगटीकरण से नहीं पर मानव समझ से विकसित की गई (2 तीमुथियुस 3:7)।

अवसरों पर परमेश्वर हम से स्वप्नों और दर्शनों के द्वारा बातें कर सकता है (मत्ती 2:13,19, प्रेरितों के काम 2:17,18) पर यदि वे स्वप्न, दर्शन या दूसरे अनुभव परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं तो हमें बाइबल के प्रति विश्वास योग्य होना चुनना चाहिये। बाइबल के प्रति विश्वास योग्य होने का मतलब जो बाइबल कहती है उससे सहमत होना और जीवन के चुनाव और निर्णय उस आधार पर बनाना जो बाइबल सिखाती है।

याद रखें शैतान अपने आप को "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" के रूप में प्रगट कर सकता है (2 कुरिन्थियों 11:14) और बहुत से इसका अनुसरण करके अपने विनाश का कारण हुए है जो उनके दिमाग और देह ने आग्रह किया। *"सकेत फाटक से प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है"* (मत्ती 7:13)।

धर्मशास्त्र की श्रेष्टता

मसीह के ईमानदार अनुयायी होकर, हम अपने संसारिक दृष्टिकोण द्वारा भटकने से बचने के लिये क्या करें? परमेश्वर ने हमें मसीह यीशु में सब कुछ जीने के लिये उपलब्ध कराया है (2 पतरस 1:3,4)। उसने अपना पवित्र आत्मा हमारे अन्दर बास करने के लिये दे दिया है हमें बदलने व मार्ग दर्शन करने के लिये दिया है (यूहन्ना 14:16,17)।

परमेश्वर ने हमें अपना पवित्र वचन दिया है – बाइबल जिससे हमें सही निर्देशन मिले: *"हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है"* (2 तीमुथियुस 3:16)। आइये, इस प्रकाशमय बाइबल के पद को और अधिक नज़दीक से देखें।

"शिक्षा के लिये लाभदायक है . . ."

"शिक्षा के लिये लाभदायक है" का मतलब है कि धर्मशास्त्र आवश्यक हैं जानने, जीने और परमेश्वर की इच्छा को सिखाने के लिये। वे प्रगट करते हैं कि परमेश्वर कौन है। ये मसीह यीशु के उद्धार के सुसमाचार को भी प्रगट करते हैं जो मानव जाति का प्रभु और उद्धारकर्ता है। धर्मशास्त्र की शिक्षा हमारे जीने और सेवकाई की बुनियाद होनी चाहिये!

बाइबल के सत्य किसी भी विचारधारा, संस्कृति, मूल्यों या जीने की प्रथाओं को जो बाइबल विपरीत हैं बदल देना चाहिये। ये झूठे "सत्य" जो हमने अपने जीवन के अनुभवों से प्राप्त किये हैं उन्हें तिरस्कार करना चाहिये और बाइबल के सत्य से बदल देना चाहिये।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टर और अगुवे होकर हमें समझने के लिये बुलाया गया है और तब बाइबल की बातें सिखाना है। बोध या ज्ञान *"नियम है या सिद्धान्त है जो विशेष प्रकार की कार्यवाही या चरित्र"* के विषय बताते हैं।

उदाहरण के लिये यीशु मसीह मत्ती 22:37–40 में दो ज्ञान की बातें बताते हैं: *"उसने उससे कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं"।*

इस पद में पहला बोध/ज्ञान ये है कि परमेश्वर से प्रेम करना सब कुछ से जो आप में है और दूसरी बात ये है कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें।

इन बोध से हम विचारधारा विकसित करते हैं। विचार धारा एक सामान्य विचार हैं जो बाइबल के ज्ञान से निकलती या आती हैं। मत्ती 22:37–40 की विचारधारा सब कुछ से परमेश्वर से प्रेम करना, वचन तथा कार्यों से और दूसरों से प्रेम करना जिन्हें परमेश्वर ने अपने बिना शर्त के प्रेम ने सृजा है।

बाइबल हमें प्रगट करती है कि हमें जीवन या ईश्वर भक्ति के लिये जानने की आवश्यकता है। पवित्र आत्मा, सत्य का आत्मा के पास हमारे लिये परमेश्वर के वचन को प्रकाशित करने का काम है (यूहन्ना 14:26)। प्रकाशित करना वो है कि छिपे हुए को निकालना और उसे बताना। *"यीशु ने उसको उत्तर दिया कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहूं ने नहीं परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है यह बात तुझ पर प्रगट की है"* (मत्ती 16:17)। *"क्योंकि जब एक ज्योति पाता है ये कभी कभी व्यक्तिगत प्रगटीकरण का संदर्भ देता है* (इफिसियों 1:17)।

ज्योति का प्रकाश पूर्ण बाइबल से हमेशा सहमत होता है। परमेश्वर से कोई नया प्रगटीकरण नहीं है (या कोई और दूसरा साधन) उससे दूसरा जो पहले ही परमेश्वर के वचन में है। तो पास्टरों जैसे आप अपनी शिक्षण तैयार करते हो ये याद रखो कि परमेश्वर के वचन से ज्ञान/बोध, विचारधारा और ज्योतिर्मय आता है।

"निन्दा या भर्तसना के लिये . . ."

धर्मशास्त्र आश्वासन देने के लिये भी दिये गये हैं या मनुष्य को परमेश्वर के सत्य के प्रेम, क्षमा और स्वीकृति के लिये कायल करना है और उनको जो सुसमाचार के सन्देश के सत्य का इंकार करेंगे उन्हें आश्चर्य में डालने के लिये।

हमें पूरी तरह बहस पर निर्भर नहीं होना है या बौद्धिक चर्चा पर कि परमेश्वर के वचन के सत्य को बताना है (2 कुरिन्थियों 10:5; 1 तीमुथियुस 6:4)। परमेश्वर का वचन जीवित है और शक्तिशाली है (इब्रानियों 4:12) और अपने आप में मानव हृदय को भी बदल सकता है।

धर्मशास्त्र हमारे लिये चीज़ों को सही स्थान और इस्तेमाल करने के लिये मार्गदर्शन होना चाहिये; झूठे और गलत दृश्यों को सुधारने के लिये: *"क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परन्तु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में हैं"* (1 कुरिन्थियों 14:33)।

हम परमेश्वर के वचन की सामर्थ पर भरोसा कर सकते हैं। हमें भरोसे से बोलना है जो हमने अध्ययन किया और जाना है: *"पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो, और*

जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो पर नम्रता और भय के साथ" (1 पतरस 3:15)।

पौलुस प्रेरित ने पवित्र आत्मा की सामर्थ को स्वीकार किया और सुसमाचार के सत्य की और परमेश्वर के वचन की पुष्टि करना है:

"और हे भाइयो, जब मैं परमेश्वर का भेद सुनाता हुआ तुम्हारे पास आया, तो वचन या ज्ञान की उत्तमता के साथ नहीं आया। क्योंकि मैंने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं और मैं निर्बलता और भय के साथ और बहुत थरथराता हुआ तुम्हारे साथ रहा। और वचन और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभाने वाली बातें नहीं; परन्तु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था। इसलिये कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर हो" (1 कुरिन्थियों 2:1–5)।

"सही करने के लिये . . ."

धर्मशास्त्र हमारे लिये चीज़ों को सही स्थान और इस्तेमाल करने के लिये मार्गदर्शन होना चाहिये; झूठे और गलत दृश्यों को सुधारने के लिये: *"क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परन्तु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में हैं"* (1 कुरिन्थियों 14:33)।

जो सही और सत्य है उसके लिये बाइबल अन्तिम अधिकार है। आप जिन्हें अगुवाई करते जानना चाहते हैं कि सही/ठीक क्या करना है, उपदेश के लिये और बुद्धि के लिये उसे परमेश्वर के वचन के पास ले जाओ। कोई और दूसरी पुस्तक, शिक्षा, भविष्यवाणी के वचन या सेवकाई के वरदान को पूरी बाइबल में सहमत होना चाहिये इससे पहले कि हम उसे प्राप्त करें।

कोई शिक्षा या भविष्यवाणी जो पहले से परमेश्वर द्वारा प्रगट किये गये वचन से असहमत होते उसे एकदम तिरस्कृत करना चाहिये। झूठे भविष्यद्वक्ता हैं, झूठे धर्म हैं, दुष्टात्माओं की धार्मिक शिक्षा। ये सब संसार में क्रियाशील हैं (मत्ती 7:15–20, 24:4–12; 1 तीमुथियुस 4:1,2; 2 तीमुथियुस 4:3,4)। हमारे पास परमेश्वर का वचन ये दिखाने के लिये है जो सत्य है। हमें इसे निर्देश देने के लिये इस्तेमाल करना चाहिये, परमेश्वर के लोगों को अगुवाई और सुरक्षा देने हमें एक चरवाही करनी है।

अगुवा होकर, कोई भी सुधार जो हम दूसरों में लाते हैं उसे नम्रता के स्वाभाव से और कोमलता की आत्मा से किया जाना चाहिये (गलातियों 6:1; इफिसियों 4:2,3)।

"धार्मिकता में निर्देशन के लिए . . ."

इसलिये कि परमेश्वर पवित्र है, हमें उसके साथ संगति करने के लिये हमें पवित्र होने के लिये बुलाया गया है। इसका मतलब ये है कि हमें आगाह किया जाये कि क्या सही है और परमेश्वर की दृष्टिकोण में सही है और केवल उसी स्तर पर जी रहे हैं।

बाइबल पहले ही से हमें साफ बताती है कि किसे अपनाना है और किसे नहीं: *"हे मनुष्य, वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है, और यहोवा तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है कि तू न्याय से काम करें और कृपा से प्राप्ति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले"* (मीका 6:8, गलातियों 5:19–23 भी देखें)। 🕮

अध्याय 6

बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण को विकसित करना

जो लोग विश्वास करते, क्यों विश्वास करते और वे क्या करते हैं अब हम इसे बेहतर तरीके से समझते हैं। ये शिक्षा, प्रचार करने के महत्वपूर्ण को प्रगट करते हैं और जीवित उदाहरण से सत्य को दिखाते है जैसा बाइबल में पाया जाता है।

हर एक के पास अपने मत हैं

बहुत से लोगों के पास जो मत हैं वे किसी और पर नहीं केवल भावनाओं, या रीति रिवाजों और संसारी लोगों की बुद्धि के आधार पर हैं। ये अक्सर परिणाम होता है। साथी झुण्ड का दबाव, समाज परिवार और यहां तक कि मीडिया का दबाव का परिणाम होता है। व्यवहारिक उदाहरण, सोचने के लिये कुछ मिनिट लो कि आप वास्तव में क्या विश्वास नैतिकता के विषय और अपने दिन के आलोचनात्मक विषय जैसेः

1. अपराधों के लिये मृत्यु दण्ड

2. गर्भपात
3. समलैंगिकता
4. अश्लील साहित्य
5. राजनैतिक पार्टियां
6. सरकार की भूमिका
7. सत्य
8. रिश्तेदारीवाद
9. पाप
10. परमेश्वर
11. कलीसिया

हम सब के पास अपने विचार व मत हैं यहां तक कि मज़बूत भावनायें, इन विषयों के प्रति हैं। वास्तविक प्रश्न है: क्या हमारे मत और भावनाएं बाइबल से सहमत हैं? आप ये भी पूछ सकते हैं: यीशु का सत्य और नैतिकता पर कैसा 'भाव' होगा? आइये कुछ देखें जो उसने सिखाया है:

- *"यह ना समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं"* (मत्ती 5:17)।
- *"जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है"* (मत्ती 7:21)।
- *"इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता केवल वह जो पिता को करते देखता है क्योंकि जिन जिन कामों को वो उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है"* (यूहन्ना 5:19)।

प्रश्न ये नहीं, "क्या हमारे पास संसार का दृष्टिकोण है?" क्योंकि हम सब के पास संसार का दृष्टिकोण है। प्रश्न ये है, हमारे संसार के दृष्टिकोण का आधार क्या है?" हमने अपने मत को कैसे

बनाया और क्यों? क्या हमारे मत अनियमित स्वीकृति, सावधानी से देखें गये विचार, के आधार पर है या विश्वास की पूर्ण बुनियाद पर है?

पूर्ण विश्वासों की बुनियाद

बाइबल आधारित संसार का दृष्टिकोण वह है जो धर्मशास्त्र में दिये गये चरित्र या कार्य पर आधारित है। ये नियम परमेश्वर द्वारा दिये गये हैं, वह जिसने मानव की सृष्टि की और कौन जानता है कि हमारे लिये उत्तम क्या है। पास्टर्स और अगुवे होकर, हमें बाइबल आधारित संसार की दृष्टिकोण साहस से घोषणा करना चाहिये।

बाइबल आधारित संसार का दृष्टिकोण पूर्ण विश्वास की मजबूत बुनियाद पर बनाया गया है। एक मसीही के लिये ये पूर्ण विश्वास में प्रारम्भिक रूप से दस आज्ञाएं और बाइबल के भाव हैं। भाव आज्ञाएं हैं या सिद्धान्त हैं एक सामान्य नियम का इरादा करते हैं या चरित्र पर।

बहुत सी बाइबल आधारित धार्मिक शिक्षा का और भावों को हम अध्ययन कर सकते हैं, आइये हम आवश्यक **दस भावों या धार्मिक सिद्धान्तों** को संक्षिप्त रूप से देखें जो पूर्ण बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण पर होना चाहियेः–

1. **बाइबलः** पुराने नियम और नये नियम बिना त्रुटि के हैं जैसा मूल में दिया गया है (2 पतरस 1:20–21)।
   - बाइबल मौखिक रूप से प्रेरित परमेश्वर द्वारा की गई (स्वांस निकाली गई) और ये उसके पूर्ण चरित्र का प्रगटीकरण है और मानव के उद्धार की इच्छा है (2 तीमुथियुस 3:16,17)।
   - धर्मशास्त्र में दैवीय और केवल मसीही विश्वास और उसके व्यवहार से बनता है (2 तीमुथियुस 3:17)।

2. **<u>एक</u> ही परमेश्वर है** जो सर्वदा सिद्ध है (मत्ती 5:48)।
   - परमेश्वर का अस्तित्व तीन व्यक्तियों में है पिता (फिलिप्पियों 2:11), पुत्र (यूहन्ना 10:30) और पवित्र आत्मा (2 कुरिन्थियों 3:17)। हर एक पूर्ण परमेश्वर है फिर भी ये तीनों व्यक्ति एक हैं (व्यवस्थाविवरण 6:4)।

3. **मसीह यीशु स्वरूप है** (सही प्रतिनिधि या प्रगटीकरण) अदृश्य परमेश्वर के (कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:3) तो ये कहता है कि वह भी परमेश्वर है (यूहन्ना 10:30)।
   - उसने अपने ऊपर मानव स्वाभाव ले लिया (फिलिप्पियों 2:5–8; इब्रानियों 2:9)।
   - वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भ में पड़ा और कुंवारी मरियम से जन्मा (मत्ती 1:20–23; लूका 1:34)।
   - उसने यातना सही और क्रूस पर मर गया (यूहन्ना 19:30)। एक एवज़ में, संसार के पापों के लिये एक बलिदान (इब्रानियों 9:26)।
   - वह शारीरिक (2:32, 33) जहां वह हमारे लिये महायाजक होकर बोझ के साथ प्रार्थना करता है (इब्रानियों 7:25)।
   - वह फिर आयेगा व्यक्तिगत रूप से और देखने के रूप में (लूका 21:27; कुलुस्सियों 3:4) जीवतों और मृतकों का न्याय करने आयेगा (2 तीमुथियुस 4:1)।

4. **पवित्र आत्मा एक दैविय व्यक्ति है,** परमेश्वर (2 कुरिन्थियों 3:17,18)।
   - पवित्र आत्मा बास करने के लिये भेजा गया है (यूहन्ना 14:17)। अगुवाई करने (यूहन्ना 16:13), शिक्षा देने (यूहन्ना 14:26), सामर्थ देने (गलातियों 5:16,17) और मसीह यीशु में हर विश्वासी को बदलने (गलातियों 5:22–25)।

- पवित्र आत्मा संसार के पापों को कायल करता है, धार्मिकता और न्याय के लिये (यूहन्ना 16:8–10)।

5. **मानव** की रचना परमेश्वर ने अपने स्वरूप में और अपनी समानता में की (उत्पत्ति 1:27)।
   - मनुष्य ने परमेश्वर की धार्मिकता के आज्ञाओं के विरुद्ध होना चुन लिया इस प्रकार पाप की दशा में गिर गया (रोमियों 5:12)। ये सब मनुष्यों के लिये सत्य है (रोमियों 3:23)। और जब तक मनुष्य नये सिरे से न जन्में परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता (यूहन्ना 3:3)।
   - उद्धार केवल मसीह पर विश्वास लाने से अनुग्रह के द्वारा है (रोमियों 3:24; इफिसियों 2:8,9)।
   - दुष्ट की सजा और धर्मी का प्रतिफल सर्वदा के लिये है (2 थिस्सलुनीकियों 1:2; 1 तीमुथियुस 1:16)।
   - धर्मी जानेगा और अपने प्रतिफल का अनुभव करेगा, दुष्ट भी जानेगा और अपने अनन्त के दण्ड को जानेगा (मत्ती 35:31–46; 2 पतरस 2:9)।

6. लोगों को **उद्धार** केवल मसीह यीशु के द्वारा दिया गया है (यूहन्ना 3:15–17)।
   - केवल वे जो पश्चाताप करते और उस पर विश्वास करते वे नया जन्म पाते हैं (यूहन्ना 3:3; प्रेरित 2:38) पवित्र आत्मा की (यूहन्ना 3:5)। मसीह में विश्वास करने के अलावा उद्धार और किसी रीति से नहीं हैं, परमेश्वर तक पहुंचने के बहुत से रास्ते नहीं हैं (यूहन्ना 14:6)।
   - वे जिनका जन्म हुआ है वे अनन्त जीवन का वरदान प्राप्त करते हैं (यूहन्ना 3:16) और परमेश्वर के पुत्र कहलाते हैं (रोमियों 8:16)।

7. **शुद्धिकरणः** पवित्रता और विजयी जीवन परमेश्वर का नमूना हैं और कलीसिया के लिये आज्ञा हैं जो मसीह की दुल्हन है (इफिसियों 5:25–27; 1 पतरस 1:13–16)।
   - शुद्धिकरण में ये शामिल हैः 1) पवित्रीकरण/प्रतिष्ठान या हर विश्वासी का पवित्रता के लिये जीवन अलग कर देना और 2) एक के सम्पूर्ण जीवन में अशुद्धता से पूरी शुद्धता (2 कुरिन्थियों 3:18; 2 तीमुथियुस 2:19–21; 1 यूहन्ना 3:2,3)।
   - शुद्धिकरण के क्षेत्र, परमेश्वर के सभी सन्तानों को कामवासना की शुद्धता रखना है, और व्यभिचार, दुष्कामना, लालच, समलैंगिकता या दूसरे लिंग सम्बन्ध या वे काम जिन्हें धर्मशास्त्र की मनाही है (1 कुरिन्थियों 6:18, 1 थिस्सलुनीकियों 4:1–8; इब्रानियों 13:4; लैव्यव्यवस्था 18:1–30)। विवाह एक पुरूष और एक स्त्री को वाचा के अनुसार जीवन भर के लिये जोड़ना है। परमेश्वर के द्वारा ये एक पवित्र व्यवस्था बनाई गई है (मत्ती 19:4–6)।
8. **पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जाना या अगुवाई किये जाना :** ये परमेश्वर की इच्छा हर एक विश्वासी के लिये है (लूका 11:13; 1 कुरिन्थियों 2:12; इफिसियों 5:18)।
   - ये लगातार शुद्धिकरण होने का सबूत है (2 थिस्सलुनीकियों 2:13), पाप से और संसार से अलग होकर (रोमियों 8:12–14) और परमेश्वर की इच्छा में पूर्ण रूप से समर्पित हो (फिलिप्पियों 2:13)।
   - ये पवित्रता से जीने और प्रेम के द्वारा प्रभावशाली सेवा करने की ओर अग्रसर करती है (गलातियों 5:6)।
9. **कलीसिया** दो प्रगटीकरण रखती हैः
   - **समस्त संसार की कलीसिया** – जिसमें वो हैं जो

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं (प्रेरित 2:38–41, 47)। हम उसके लहू के द्वारा छुड़ाये गये हैं (इब्रानियों 9:14) और पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाते हैं (यूहन्ना 3:5)। मसीह देह (कलीसिया) का सिर है (कुलुस्सियों 1:18)। जो आपको आज्ञा दी गई है कि संसार में एक गवाह के रूप में जायें, सब जातियों को सुसमाचार प्रचार करें (मत्ती 28:19)।

- **स्थानीय कलीसिया,** जो मसीह में विश्वासियों की देह है एक स्थानीय मंडली में जो परमेश्वर की आराधना के लिये एक साथ जुड़ गये हैं (यूहन्ना 4:23)। परमेश्वर के वचन के द्वारा बढ़ाना (2 तीमुथियुस 3:14–15)। प्रार्थना (यशायाह 56:7), संगति (प्रेरितों के काम 2:42), सुसमाचार की घोषणा (प्रेरितों के काम 2:47) और बपतिस्में और प्रभु भोज की विधि का पालन करना (लूका 22:7–20) पवित्र आत्मा के वरदान मंडली के भीतर प्रगट होते हैं जिससे संतों की बढ़ौतरी सेवकाई के कार्य के लिये हो (1 कुरिन्थियों 12:4–12)।

10. **पुनरुत्थान** : ये शारीरिक पुनरुत्थान दोनों धर्मी और अधर्मी के लिये होगा। धर्मी का जीवन के लिये और दुष्टों का न्याय के लिये होगा (यूहन्ना 5:28,29, 1 कुरिन्थियों 15:50–58)।

धर्मशास्त्र से ये दस आधारभूत धार्मिक सिद्धान्त ये ठोस संसारिक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिये आधार उपलब्ध कराते हैं, पर बाइबल आधारित संसारिक दृष्टिकोण होते हुए ये सही विश्वास का होना या सही समझ के पार जाना है।

हमें अपने आप में परमेश्वर के साथ सहमति में होना चाहिये, उसकी आत्मा के साथ पूरा सहयोग दिखाना चाहिये और परमेश्वर

की आज्ञा पालन करने व उसकी इच्छा पूरी करने की इच्छा होना चाहिये।

सहमति/राजीनामा

बाइबल ये सिखाती है कि परमेश्वर के साथ चलने में सहमति की आवश्यकता है, *"यदि दो मनुष्य परस्पर सहमत न हों तो क्या वे एक संग चल सकेंगे?"* (आमोस 3:3)।

परमेश्वर के साथ राजीनामें का मतलब हैं बुद्धिमानी या मानसिक स्वीकृति से बढ़कर है, यहां तक कि दुष्टात्माएं भी विश्वास करती और कांपती हैं (याकूब 2:19)। परमेश्वर हमारे विवेकीय राजीनामा को चाहता है जो हमारी आज्ञाकारिता के द्वारा उसकी पुष्टि हो जाती है। ये सब विश्वासियों के लिये सत्य है पर विशेषरूप से पास्टर्स और अगुवों के लिये है – इसलिये कि हम जो सिखाते हैं उसके लिये जिम्मेवार हैं अपने जीवन के उदाहरणों के द्वारा।

राजीनामा का मतलब है, "मत के मामले में सुसंगति में आना, बांटना वही ज्ञान या बोध को" परमेश्वर ने अपने मार्गों को बाइबल के द्वारा बताया है।

ये हमारी जिम्मेवारी है कि उसके वचनों के साथ सहमत होना। परमेश्वर के संसार के प्रति दृष्टिकोण पर सहमत होना ये उससे अधिक स्वीकृत करना है कि वह सही है। सहमति का अर्थ है कि हमने अपने दृष्टिकोण को उसके दृष्टिकोण से बदल दिया है और तब हम अपने जीवन को उसके तरीकों से जीते हैं।

हम बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण से सहमत हो सकते हैं और पूर्ण विश्वास धर्मशास्त्र में पाया जाता है फिर भी ये बहुत अनिश्चित होता है कि हम किस प्रकार से जो हम अपने जीवन में जानते हैं उसे किस प्रकार लागू करते हैं। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि हम एक चीज़ पर विश्वास करते हैं पर दूसरा करते हैं। ऐसा कभी नहीं होना चाहिये।

पास्टर और अगुवा होकर ये अति आवश्यक है कि प्रतिदिन हम जो हैं दूसरों को बाइबल से सिखाते हैं वैसे ही जिये (रोमियों 2:21–24)।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टर एक सुसमाचार के सेवक होकर क्या आप प्रचार कर रहे, शिक्षा दे रहे, उपदेश/समझा रहे और बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण का नमूना दे रहे हो? दुःख है बहुत से लोग अपने व्यक्तिगत मतों को अपने सत्य के रूप में प्रगट कर रहे हैं संसारिक मानववाद और मनुष्यों के दूसरे प्रकार के "रीति रिवाज़"। वे उन विचारों को प्रचार कर रहे हैं जो मानव शरीर से सम्बंधित है पर वह यीशु के नम्र, समर्पित, आज्ञाकारी चेलों के विरुद्ध उठ खड़े होते हैं (1 तीमुथियुस 4:1,2; 2 तीमुथियुस 4:3,4)।

ये याद रखें कि प्रेरित पौलुस कलीसिया को ऐसे सेवकों से सावधान रहने की चितौनी देते हैं जिनका संसार का दृष्टिकोण बाइबल से बाहर है, *"चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अहेर न कर ले जो मनुष्यों के परम्पराई मत और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है पर मसीह के अनुसार नहीं"* (कुलुस्सियों 2:8)।

ये विश्वास और साहस को लेता कि वह लोकप्रिय मत के विरुद्ध मत के विरुद्ध जाये और दृढ़ धारण के पुरुष और महिला बनें ज़ो सत्य का प्रचार करते हैं। एक सेवक होकर या व्यक्तिगत रूप से यदि हम बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण पर खड़े नहीं रहते तो हम सबसे अधिक लोकप्रिय प्रथाओं के द्वारा भटक जायेंगे (इफिसियों 4:14)।

आज की संस्कृति हम पर सहनशील होने का बड़ा दबाव डालती है। ये सहनशीलता अक्सर अपने आप को ऐसी बताती कि "सब चीज़ों की अनुमति" है या ये गलत है, मैं किसी दूसरे को ऐसा करते देख उनका न्याय नहीं करूंगा"।

पर समझौता करना हमेशा गलत है जब इसका मतलब बाइबल आधारित सिद्धान्तों का बलिदान देना है। जब लोग हमें ठोकर खिलायें तो हम धीरजवन्त हो सकते हैं पर हमें उन व्यवहारों या रवैयों पर सहनशील नहीं होना है जो सत्य और परमेश्वर के वचन की पुष्टि नहीं करते।

हमें कभी समझौता नहीं करना चाहिये या परमेश्वर के वचन को अधिक स्वीकृत होने के लिये उसमें मिलावट कर दें। कुछ लोगों के लिये बाइबल और उसके स्तर अपराध होंगे (रोमियों 9:32; 1 पतरस 2:4–8) पर सत्य उन्हें विनाश से बचा सकता है। 🕮

अध्याय 7

बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण का परिवर्तन करने वाला प्रभाव

इस बिन्दू पर हमने स्वर्गीय नागरिकता पर बेहतर समझ प्राप्त की है जबकि अभी भी सीख रहे हैं:

- संसारिक दृष्टिकोण क्या है;
- संसार का दृष्टिकोण कैसे बना;
- अपने स्वयं के संसार के दृष्टिकोण के महत्व को जानना और
- बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता है।

पास्टर और अगुवे होकर ये सीखना महान लाभकारी होगा कि किस प्रकार प्रभावशाली रूप से सिखाना, प्रचार करना और बाइबल आधारित दृष्टिकोण में समा जाना। इसकी आवश्यक चीज़ एक वातावरण तैयार करना जहां पवित्र आत्मा का स्वागत है कि वह नवीनीकरण तथा व्यक्तिगत जीवनों में परिवर्तन का कार्य करें।

बुद्धि का नया हो जाना - हमारे संसार के दृष्टिकोण को बदलना

"और इस संसार के सदृश्य ना बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाये जिससे तुम परमेश्वर की भली और भांति इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।

शुद्धिकरण

हर विश्वासी के लगातार विकास के लिये शुद्धिकरण आवश्यक है, जैसा हमने सीखा है, शुद्धिकरण दोनों हमारे जीवन का परमेश्वर के प्रति समर्पण है और आगे आने वाली नैतिक अशुद्धता से सफाई होना है। अच्छे नैतिक चरित्र की अपेक्षा शुद्धिकरण के लिये और भी बहुत कुछ है।

सच्चा शुद्धिकरण एक प्रक्रिया है जो परमेश्वर के वचन के स्वतंत्र करने वाले सत्य शामिल है। हमारे विश्वास को उसे स्वीकार करना चाहिये और पवित्र आत्मा के काम को एक विश्वासी के जीवन में परिवर्तन लाना है।

मसीह को स्वीकार करने के पहले, जितना हम हैं भी और जो किया वह संसार के स्तर पर पुष्ट किया गया है (हमने पहले ही अध्ययन कर लिया है कि संसारिक संसार का दृष्टिकोण बहुत तरहों से बनाया गया है)।

पर उद्धार के बाद और शुद्धिकरण के चलते हुए कार्य के द्वारा हमारे संसार के दृष्टिकोण बदल सकते हैं। जैसे हमारा संसार का दृष्टिकोण अधिक बाइबल आधारित बनता जाता है, तो हम अधिक विश्वास करते हैं और पूरे परमेश्वर के वचन की आज्ञा पालन करते हैं और बेहतर तरीके से पवित्र आत्मा के कार्य में सहयोग करते हैं।

आइये हम मसीही जीवन को विस्तार पूर्वक उसके महत्वपूर्ण बातों को अध्ययन करें!

संचार के स्तर

हर एक व्यक्ति तीन भागों में बना हुआ है देह, आत्मा और प्राण (1 थिस्सलुनीकियों 5:23)।

"देह" हमारी शारीरिक देह है। हमारी देह पांच इन्द्रियों को इस्तेमाल करती हैं: सुनना, देखना, चखना, सूंघना और छूना – संसार में संचार करने के लिये हम जीते हैं।

"प्राण" हमारी भावनाओं का स्थान है। हमारी इच्छा (चुनने की योग्यता) और हमारा दिमाग (बुद्धि) हमारा व्यक्तित्व हमारे प्राण से आता है। कभी कभी "प्राण" को "मानव का हृदय" भी कहा जाता है। प्राण दूसरे स्तर का संचार उपलब्ध करता है साथ ही लोगों के साथ वातावरण भी बनाता है।

मनुष्य की आत्मा

यद्यपि मनुष्य एक दूसरे के साथ शारीरिक स्तर पर सम्बन्ध बता सकते हैं। हम अपने शारीरिक और बौद्धिक योग्यताओं को पूरी तौर से परमेश्वर की चीज़ों को साथ ले चल सकते हैं। *". . .जो आंख ने नहीं देखी और कान ने नहीं सुना और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिये तैयार की हैं"* (1 कुरिन्थियों 2:9 के साथ में देखें यशायाह 55:8,9; रोमियों 11:33–36) ना हमारी देह ना हमारा प्राण (आंख/कान) (हृदय) पूरी तरह परमेश्वर और उसके मार्गों को समझ सकता है।

पर परमेश्वर ने हर एक व्यक्ति को आत्मा के साथ पैदा किया है। हर व्यक्ति का आत्मा पाप में मरा हुआ है पर उद्धार पर परमेश्वर के आत्मा द्वारा आत्मा जीवित हो जाती है (रोमियों 6:11,13, 1 कुरिन्थियों 15:22; इफिसियों 2:1,5; 1 पतरस 3:18)।

उद्धार के समय भी हर व्यक्ति अपने अन्दर पवित्र आत्मा पाता है (यूहन्ना 3:5–8; प्रेरितों के काम 2:38,39)। पवित्र आत्मा हमें देखने, सुनने और आत्मिक चीजों में जो परमेश्वर द्वारा दी गई सम्मलित करती है।

"परन्तु हमने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम इन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं" (1 कुरिन्थियों 2:12)।

परमेश्वर के साथ संचार मानव बुद्धि की सीमा से ऊपर चला जाता है। ये उसका आत्मा हमारे आत्मा को सिखाता है, *"जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिलकर सुनाते है"* (1 कुरिन्थियों 2:13)। एक मसीही होकर हमें "मसीह का मन (दिमाग)" भी दिया गया है (1 कुरिन्थियों 2:16)। हमें परमेश्वर को समझने में सहायता करने के लिये।

हालिलूय्याह परमेश्वर ने हमें वह सब जो परमेश्वर को जानने में आवश्यक है हमें दिया है, कि प्रतिदिन उससे बातें करें और एक भक्ति का मसीही जीवन जियें (2 पतरस 1:3) पर अक्सर समयों पर हमें सीखने की आवश्यकता है कि किस प्रकार पाना और जो परमेश्वर ने हमें दिया है उसे कैसे इस्तेमाल करना है।

परमेश्वर ने कहा है कि जो आत्मा के चलाये चलते हैं वे परमेश्वर के पुत्र हैं (रोमियों 8:12–17)। उसके पुत्र होकर, उसने हमारे लिये सम्भव किया है कि हम अपने परमेश्वर पिता से बातें कर सकें। पर किसी भी वरदान के लिये जो परमेश्वर से है हमें अक्सर सीखने की आवश्यकता है कि उसे जो उसने दिया है इस्तेमाल करें।

यीशु बयान करते हैं, *"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और वे मेरे पीछे हो लेती हैं"* (यूहन्ना 10:27)। हम में से बहुतों ने छोटी उम्र में सीखा है कि किस प्रकार शारीरिक रीति से और बुद्धि से संचार करें। पर आत्मिक पहलू से परमेश्वर से बातें करना सीखना – उसमें समय लगेगा। हर रूकावट परमेश्वर

से बातें करने में जो हैं उनसे अपने जीवन में निपटना होगा, और हमें आत्मिक संवेदनशीलता में भी बढ़ना होगा।

स्वाभाविक मनुष्य

बाइबल ये प्रगट करती है कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं (रोमियों 3:23)। एक "पतित" मानव की तरह हम सब परमेश्वर के आत्मिक सत्य के प्रति अंधे हैं। व्यक्तिगत रूप से जो मसीह में परमेश्वर के वरदान का तिरस्कार करते हैं और जिनका नया जन्म नहीं है उसे "स्वाभाविक मनुष्य" कहा गया है।

"परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर की आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरिन्थियों 2:14)।

स्वाभाविक मनुष्य केवल अपने मन (दिमाग) से समझ सकता है इसलिये वह प्राप्त नहीं कर सकता या परमेश्वर की आत्मिक चीज़ों को ज्ञान सकता है।

आत्मिक मनुष्य

फिर भी यदि हमारा नया जन्म हो गया है परमेश्वर की आत्मिक चीज़ों को समझने की योग्यता हमारे लिये खुली हुई है। बाइबल आधारित संसार के दृष्टिकोण को विकसित करने की क्षमता सम्भव की गई है, पवित्र आत्मा के हमारे अंदर कार्यों के कारण (1 कुरिन्थियों 6:19)। उसका काम हमारे संसार के दृष्टिकोण को पुनः बनाने में हमारी बुद्धि जो नई हो गई उसका एक भाग है (रोमियों 12:2)।

हमारी बुद्धि के नये हो जाने के लिये हमें जांच करना चाहिये कि जो हम विश्वास करते हैं। हमने जो संसार से सीखा हमें उससे जो परमेश्वर से सीखा मुकाबला करना होगा हमारे बुद्धि के नये

हो जाने की आवश्यकता है (बदलने की) उन क्षेत्रों में जहां अधर्मी संसार का दृष्टिकोण ने स्थान ले लिया है: *"पर तुमने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। बरन तुमने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है उसी में सिखाये भी गये कि तुम अगले चाल चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वाभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहन लो जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है"* (इफिसियों 4:20–24)।

जब हमारा नया जन्म हो जाता है हमारी आत्मा जाग्रित हो जाती है और परमेश्वर के साथ बातचीत करने योग्य हो जाती है। ये संचार दो तरफ का मार्ग है उसमें हम बातें करते और वह सुनता है (भजन 4:3; 1 यूहन्ना 5:14)। बराबरी से महत्वपूर्ण है कि जब परमेश्वर हमसे बातें करता तो हम उसकी सुनने योग्य हैं और इस प्रकार उसके पीछे हो लेते हैं (यूहन्ना 10:27)।

आत्मा के कार्यों का फल

सत्य का आत्मा, पवित्र आत्मा हमारा सहायक है और हर एक विश्वासी में रहता है। पवित्र आत्मा परमेश्वर के सत्य वचन को प्रकाश में लाता है (उसकी समझ लाता है) और हम पर प्रगट करता है कि हमारे जीवनों में सुधार की आवश्यकता है।

ये सुधार हमारी बुद्धि के नये हो जाने की प्रक्रिया का एक भाग है। बुद्धि का नया होना केवल साधारण महान बुद्धिमानी की योग्यता नहीं है पर पहचानने की और परमेश्वर के वचन के सत्य को जानने की योग्यता है।

ये नवीनीकरण की प्रक्रिया का परिमाण हमारा परिवर्तन है: *"प्रभु तो आत्मा है और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता*

है, परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है जिस प्रकार दर्पण में तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है हम उसी तेजस्वी रूप में अंश करके बदलते जाते हैं" (2 कुरिन्थियों 3:17,18)।

जब हमारी बुद्धि नई हो जाती है वह हमारे रवैये और व्यवहार पर असर डालता है जब हम "पुराने मनुष्यत्व" को पहन लेते हैं तो आत्मा के इस कार्य का परिणाम वह फल होगा जो स्पष्ट रूप से हमारे जीवनों में दिखाई दे सकेगाः प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता और संयम हैं (गलातियों 5:22,23)।

जब हम परमेश्वर के नियमों के अनुसार जीते हैं तो हम सत्य में भरे हुए और विजयी मसीही जीवन का अनुभव कर सकते हैं, परमेश्वर जो स्वीकृत करता उसी पर आशीष देता है।

परिवर्तन - बाइबल आधारित संसार का दृष्टिकोण

जैसे हमारी बुद्धि नई हो गई है, हम बदल गये हैं या परिवर्तित हो गये हैं। "परिवर्तन" को इस प्रकार बताया जा सकता है, "एक विशेष बदलाव" दिखने में या चरित्र में, साधारणतः बेहतरी के लिये।

बाइबल हमें बताती है हम मसीह में नई सृष्टि हैं, *"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं देखों वे सब नई हो गई"* (2 कुरिन्थियों 5:17)।

पवित्र आत्मा हर विश्वासी में रहता कि उन्हें सत्य में अगुवाई करें। पवित्र आत्मा को भेजा गया कि वह हम में बास करें (यूहन्ना 14:17)। अगुवाई करें (यूहन्ना 16:13)। शिक्षा दे (यूहन्ना 14:26) और विश्वासी को समर्थ करें (गलातियों 5:16,17)।

पवित्र आत्मा विश्वासी को संसार को देखने में सहायता करता है जैसे यीशु करता है, *"परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आयेगा तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बतायेगा क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और आने वाली*

बातें तुम्हें बतायेगा"। वह मेरी महिमा करेगा क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायेगा। जो कुछ पिता का है वह सब मेरा है इसलिये मैंने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायेगा" (यूहन्ना 16:13–15, ये भी देखें यूहन्ना 14:15–17, 25, 26, 15:26)।

अपने में झगड़ा/लड़ाई

पवित्र आत्मा के व्यक्ति में क्या ही महान वरदान हमें दिया गया है! वह यहां पर लगातार हमारी सहायता के लिये है और इच्छा करता कि हम विजयी मसीही जीवन जियें।

पर पवित्र आत्मा अपना कार्य हमारी इच्छा के विरुद्ध नहीं करेगा। हम में से हर एक को लगातार ये चुनना है कि या तो पवित्र आत्मा की दृढ़ता पर प्रतिक्रिया करें या उसका विरोध करें। हमें चुनना है कि क्या पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलना है या अपनी समझ को ही सीखना है। हमें ये चुनना है या तो परमेश्वर के वचन की आज्ञा पालन करो और परिवर्तित हो जाओ, या विरोध करके जैसे हैं वैसा ही रहें।

कभी कभी ये चुनाव को दिन में कई बार लेने की आवश्यकता है। पवित्र आत्मा की उपस्थिति हमेशा रहती है, हमें बदलने के लिये हमेशा कार्य करती रहती है कि हम अधिक अधिक यीशु के स्वरूप में होते जायें।

ये परिवर्तन की प्रक्रिया हमेशा आसान नहीं है ये झगड़ा उत्पन्न कर सकती या आप में संघर्ष पैदा कर सकती है। हम प्रभु की इच्छा पूरी करना चाहते हैं पर हमारा शरीर भी अपनी इच्छा चाहता है। प्रेरित पौलुस इसे इसे प्रकार रखता है: *"क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है और ये एक दूसरे के विरोधी है, इसलिये कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ"* (गलातियों 5:17)।

नवीनीकरण और समर्थ होना

बाइबल ये प्रगट करती है कि हमारे अन्दर की आत्मा और हमारा शरीर (मनुष्य का प्राण) आपस में संघर्ष में हैं (रोमियों 7:23; 1 पतरस 2:11,12)। दोनों आत्मा और हमारा अपना प्राण हमारे विचारों, कार्यों और चुनाव पर असर डालना चाहते हैं। परमेश्वर की इच्छा है कि हमें अपनी तरह से अपने आत्मा से हमारी अगुवाई करें, शैतान, संसार और हमारा अपना स्वयं का लालच ये सब हमें परमेश्वर के प्रेम से दूर खींचना चाहते हैं।

"पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे, क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो कुछ तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो व्यवस्था के आधीन न रहे" (गलातियों 5:16–18)।

नवीनीकरण और समर्थ होना

बाइबल ये प्रगट करती है कि हमारे अन्दर की आत्मा और हमारा शरीर (मनुष्य का प्राण) आपस में संघर्ष में हैं (रोमियों 7:23; 1 पतरस 2:11,12)। दोनों आत्मा और हमारा अपना प्राण हमारे विचारों, कार्यों और चुनाव पर असर डालना चाहते हैं। परमेश्वर की इच्छा है कि हमें अपनी तरह से अपने आत्मा से हमारी अगुवाई करें, शैतान, संसार और हमारा अपना स्वयं का लालच ये सब हमें परमेश्वर के प्रेम से दूर खींचना चाहते हैं।

"पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे, क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिये कि जो कुछ तुम करना चाहते

हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाये चलते हो तो व्यवस्था के आधीन न रहे" (गलातियों 5:16–18)।

"स्वाभाविक मनुष्य" में (एक जिसका नया जन्म नहीं हुआ है) आत्मा मृतक है, परमेश्वर से अलग है तो उनकी आत्मा में कोई लड़ाई नहीं है क्योंकि आत्मा उनमें बास नहीं करता।

देह और प्राण जो इच्छा होती वही करते हैं जैसा न्यायियों के समय में इस्राएल ने किया जब, *"जिसको जो सूझ पड़ता था वही वह करता था"* (न्यायियों 21:25)।

पर जब हमारा नया जन्म हो जाता है तो पवित्र आत्मा हम में धार्मिकता की ओर प्रभावित करने के लिये कार्य आरम्भ कर देती है। हमारी अपरिपक्वता में हमारा प्राण (और अक्सर हमारी देह) आत्मा का विरोध करेगी। हमारी पुरानी आदतें या इच्छाएं हमें पाप में वापस खींचती हैं। ये आत्मा के द्वारा अगुवाई पाना कठिन हो सकता है। *"हे भाइयो, मैं तुम से इस रीति से बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं"* (1 कुरिन्थियों 3:1)।

ये एक कारण है कि ये इतना महत्वपूर्ण है कि हमारे मन (दिमाग) को परमेश्वर के वचन से नया होना है। जितना अधिक हम जानते हैं और परमेश्वर के तरीकों को समझते हैं, जितना अधिक हम पहचानते हैं उसके विषय और हमारा शरीर क्या है। हर समय हम परमेश्वर के तरीके अपनी शारीरिक इच्छाओं के ऊपर चुनते हैं तो हमारी आत्मा समर्थ होती है! धीमें पर सही तरीके से हमारी आत्मा पवित्र आत्मा के साथ सहमति की इच्छा करेगी हमारी अपनी इच्छा से अधिक।

"और इस संसार के सदृश्य न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाये जिससे तुम

परमेश्वर की भली और भावती और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो" (रोमियों 12:2)।

लगातार बुद्धि का नया हो जाना हमें ताकत देता है और हमें परमेश्वर का वचन चुनने और उस की आज्ञा पालन करने देता है। बदली हुई बुद्धि आसानी से पवित्र आत्मा द्वारा कायल होती और अगुवाई पाती है। हमारी पुरानी आदतें दूर हो जायेंगी और पवित्रता की नई आदते उसका स्थान ले लेंगी।

"पर तुमने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई, बरन तुमने सचमुच उसी की सुनी और जैसा यीशु में सत्य है उसी में सिखाये भी गये कि तुम अपने चाल चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वाभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहन लो जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है" (इफिसियों 4:20–24)।

जैसे नवीनीकरण की प्रक्रिया जारी रहती है, हमारा व्यक्तिगत परिवर्तन और अधिक स्पष्ट हो जाती है, *"एक दूसरे से झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नये मनुष्यत्व को पहन लिया है जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने लिये नया बनता जाता हैं"* (कुलुस्सियों 3:9–10) स्पष्ट है कि हमारा मन और आत्मा अधिक सहमति में आता है और हमारी देह उसके प्रभाव को खो देती है।

ये नवीनीकरण की प्रक्रिया और परिवर्तन को प्रक्रिया है जो उद्धार के समय आरम्भ होती है और उस समय तक पूरी नहीं है जब तक हम अपने अनन्त घर नहीं पहुंच जाते (रोमियों 8:29,30; 1 कुरिन्थियों 13:12; 2 कुरिन्थियों 3:18)।

पास्टर से पास्टर तक

मेरी आशा है कि आप साफ देख सकते हैं, परमेश्वर के वचन को जानने का महत्व और उसकी शिक्षा का जो आपकी कलीसिया में लगातार होती और पूरी तौर से होती है। हम में से हर एक के पास अपने ही संसार के दृष्टिकोण हैं जो बाइबल के अनुसार नहीं हैं। हम में से हर एक को अपनी बुद्धि के नये हो जाने की आवश्यकता है साथ ही जीवन के परिवर्तन की भी आवश्यकता है! ये परमेश्वर के जीवित सत्य वचन के मिलने के साथ होता है और पवित्र आत्मा के चलते रहने वाले कार्य के साथ होता है।

मैं आपको स्मरण दिलाता हूं कि ये नवीनीकरण और परिवर्तन का कार्य जीवन भर की प्रक्रिया है। मुझ से हाल ही में पूछा गया कि ये परिवर्तन में इतना लम्बा समय क्यों लगता है, और ये क्यों कठिन है? परमेश्वर कार्य हमारे अन्दर एकदम क्यों नहीं करता?"

मेरा उत्तर था, ये प्रश्न है जो केवल परमेश्वर उत्तर दे सकता है, उसके विचार हमारे विचारों से ऊंचे हैं। पर मैं ये जानता हूं कि परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञा पालन करें अपने प्रेम की निःस्वार्थ इच्छा से। हमारे चुनाव परमेश्वर के सम्बन्ध के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं। जबकि परिवर्तन एक कठिन यात्रा है, परमेश्वर ने हमें सभी हथियार दिये हैं, सफल होने के लिये सामर्थ और अधिकार"। 🕮

अध्याय 8

नवीनीकरण और परिवर्तन के हथियार

परमेश्वर ने अपनी बुद्धि में हर चीज़ जो हमें आवश्यक है प्रदान की है *"जीवन वा अगुवाई"* के लिये (2 पतरस 1:3)। परमेश्वर ने हमें दिया है: अपने पुत्र को जो उद्धार का अकेला मार्ग है (यूहन्ना 3:16)। उसका पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करने के लिये (यूहन्ना 16:13) और उसका वचन हमें धार्मिकता में निर्देश देने के लिये (भजन 119:105)।

मसीहियों के लिये हमारी इच्छा बुद्धि के नये हो जाने के लिये है जो पवित्र आत्मा की सहायता की खोज करती है। जैसे हमारी बुद्धि नई हो गई है तो हम मसीह के स्वरूप में और अधिक परिवर्तित हो जायेंगे।

पर परमेश्वर इस परिवर्तन की प्रक्रिया में कौन से हथियार इस्तेमाल करता है? आइये, अभी उन में से कुछ को देखें।

1. प्रगटीकरण और जानकारी के लिये बाइबल अध्ययन

व्यक्तिगत परिवर्तन के लिये परमेश्वर के वचन का महत्व को अधिक नहीं आंक सकते हैं। बाइबल मानव जाति के लिये परमेश्वर का पूर्ण प्रगटीकरण है और इसमें कुछ और नहीं जोड़ा या घटाया जा सकता (प्रकाशितवाक्य 22:18,19)।

हम दो तरीके से बाइबल पढ़ सकते और उसका अध्ययन कर सकते हैं पहला **ज्ञान** प्राप्त करना है इसे शब्द लोगों या लिखित वचन से संदर्भ दे सकते हैं शब्द "लोगों" यूनानी शब्द "वचन" के लिये है।

6ज्ञान प्राप्त करने के लिये जो सूचनाएं और तथ्य बाइबल में हैं उन्हें सीखना जैसेः

- बाइबल का भाग (पुराना और नया नियम, भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक, ऐतिहासिक पुस्तकें और काव्य–पुस्तकें)।
- बाइबल की पुस्तकों के नाम
- वितरण या बाइबल के युग
- बाइबल की वाचाएं
- बाइबल की कहानियां और दृष्टांत
- बाइबल के चरित्र व व्यक्तित्व
- कालक्रम और बाइबल का इतिहास

उपरोक्त सूचि की चीज़ों को सीखना हमें सही ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करेगी, बाइबल का सम्मान और समझ में सहायता करेगी। हम परमेश्वर के स्वाभाव के बारे में सीखेंगे उसकी पवित्रता और सम्प्रभुता। हम उसकी प्रतिज्ञाओं और उपलब्धियों से परिचित हो जायेंगे। ऐस समय में हम ये सीखेंगे कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है। हम सीखेंगे कि हमें पवित्र होना है और उसके अभिप्राय के लिये अलग होना है।

जब हम बाइबल इस प्रकार से अध्ययन करते हैं तो हम शब्द "लोगों" (लिखित) का ज्ञान प्राप्त करते हैं और आगामी स्तर के लिये बुनियाद डालते हैं जो **समझ** है।

आत्मिक समझ

परमेश्वर के वचन की समझ प्रगटीकरण के द्वारा आती है। एक दूसरा यूनानी शब्द है "वचन" के लिये वह **"रेहेमा"** है या बोला हुआ वचन। यह धर्मशास्त्र के आत्मिक स्वाभाव का संदर्भ देता है।

परमेश्वर का वचन केवल धार्मिक सुनाई देने वाले शब्दों का इक्ट्ठा नहीं है ये आत्मा से स्वांस किया गया है, जो जीवित, सामर्थी

और आत्मिक है। *"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दो धारी तलवार से भी बहुत चोखा है और जीव, और आत्मा को और गांठ गांठ और गूदे गूदे को अलग करके वार पार छेदता है, और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है"* (इब्रानियों 4:12)।

बाइबल के धार्मिक स्वाभाव होने के कारण पवित्र आत्मा धर्मशास्त्र को हमसे "बातें" करने में इस्तेमाल करता है "आत्मा से आत्मा"! और जब हम बाइबल पढ़ रहे हैं या अध्ययन कर रहे हैं तो धर्मशास्त्र अचानक हमारे समझ के लिये जीवित बन जाता है, कि मानो परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा हमसे सीधे बातें अपने वचन के द्वारा कर रहा है वह विशेष बात जो हम से संबंधित है।

परमेश्वर हम से धर्मशास्त्र के द्वारा बातें करता है जो नये जन्में मसीहियों के लिये आम होना चाहिये, क्योंकि वे आत्मिक हैं और धर्मशास्त्र आत्मिक रूप से प्रेरित किये गये हैं (2 तीमुथियुस 3:16)। धार्मिक शिक्षक ये कहना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा धर्मशास्त्र में "ज्योति" पैदा करता है कि हमें समझ दे जो केवल बुद्धि की नहीं है पर आत्मिक है। ये व्यक्तिगत बन जाती है और अक्सर जीवन परिवर्तन व हमारे लिये सत्य का प्रगटीकरण बन जाता है। एक स्वाभाविक व्यक्ति (एक जिसका नया जन्म नहीं है) वह इस आत्मिक समझ को प्राप्त करने के अयोग्य है (1 कुरिन्थियों 2:13–15)।

वचन की इन भक्ति के समय में "रेहेमा" शब्द जीवन परिवर्तन करने वाला बन जाता है। कोई शंका नहीं कि परमेश्वर ने आपको कुछ अच्छा दिखाया है और आपके लिये कुछ व्यक्तिगत है। आप अहसास करें कि परमेश्वर एक जीवन को प्रभावित करने वाले सत्य को इन धर्मशास्त्रों के द्वारा प्रगट कर रहा है।

याद रखें आपको केवल ज्ञान ही प्राप्त नहीं करना है आपको समझ भी प्राप्त करना है (नीतिवचन 4:7)। ये महत्वपूर्ण है कि आप

जो समझ प्राप्त करते हैं उसके प्रति उत्तर भी दें। इसका अर्थ ओगा कि आप पश्चाताप करें, किसी को क्षमा करें, आदत बदल दें या व्यवहार को, परमेश्वर के प्रेम को ताज़ा स्वीकार करें या और भी दूसरी प्रतिक्रिया करें।

निर्णय करें कि आप केवल ज्ञान से अधिक चाहते हो ("लोगोज़") परमेश्वर के वचन से। अपने हृदय को चैतन्य करो, और प्रार्थना करो और प्रगटीकरण को और समझ को आगे बढ़ाओ (रेहेमा)।

2. प्रार्थना का महत्व

प्रार्थना परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण हथियार है, विशेष करके जब ये समझ लिया गया कि ये आपके और परमेश्वर के बीच वार्ता है। अक्सर हमें प्रार्थना करना सिखाया गया कि अपनी आवश्यकताओं को परमेश्वर को बताओ। हम मांगते हैं पर हम उसके बदले में सुनने में विफल हो जाते हैं। हम उम्मीद नहीं करते कि परमेश्वर हम से बातें करें।

पर प्रार्थना एक तरफा संचार नहीं है। **प्रार्थना** परमेश्वर और विश्वासी के बीच की **वार्ता** है। आप बोलते हैं परमेश्वर सुनता है हर अपनी बारी बोलने में और सुनने में लेता है। परमेश्वर के पास अक्सर हमसे कुछ कहने को होता है यदि हम उसे विश्वास में आराम से सुनेंगे।

जैसा हम धर्मशास्त्र का अध्ययन करते हैं हमें समझ और प्रगटीकरण के लिये प्रार्थना करना चाहिये। जैसे हम पढ़ रहे हैं हमें परमेश्वर से पूछना चाहिये, "प्रभु इसका मतलब क्या है?" हमारा व्यवहार ऐसा होना चाहिये कि पवित्र आत्मा से आशा करें कि वह ज्योति चमकाये, प्रगट करे और अपने सत्य को स्पष्ट करे।

कभी कभी हमें परमेश्वर का वचन स्पष्ट सुनने में रूकावट होती है। हमें पवित्र आत्मा से रूकावटों को प्रगट करने के लिये

कहना चाहिये जिससे हम मन फिरायें, विजय प्राप्त करें और उसके साथ सम्बन्धों में आगे बढ़ें।

3. सच्ची आराधना का महत्व

शब्द आराधना को "परमेश्वर की भक्ति और श्रृद्धा" के रूप में देखा जाता है। आराधना परमेश्वर की बुलाहट को अपने जीवनों में पूर्ति करने का केन्द्र है और सही धार्मिक शिक्षा प्रस्तुत करना है। पर अधिक महत्वपूर्ण ये है, कि आराधना कुछ है जो परमेश्वर हममें से हर एक से चाहता है।

इसके प्रारम्भिक अर्थ में, "आराधना" बाहरी रूप नहीं है पर "आत्मिक आराधना" है। यीशु ने जब वह कुंए के पास स्त्री से बात कर रहा था कहता है, *"परन्तु वह समय आता है बरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढता है"* (यूहन्ना 4:23)।

जब परमेश्वर की आराधना की परिभाषा कभी नहीं बदली है बहुत से आज दूसरे मतलब से ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। उदाहरण के लिये:

क) संगीत की शैली, जैसे "आराधना का संगीत" या

ख) चर्च जाने की गतिविधि ("मैं रविवार को आराधना सभा में जाता हूं")।

ये आराधना के विचार धारा सही/उपयुक्त हैं। फिर भी यदि ये हमारी आराधना की प्राथमिक परिभाषा बन जाती है, तो हम इस प्राथमिक आराधना के अर्थ को बदलने का खतरा माध्यमिक से करते हैं। कभी कभी प्रतिदिन की मनन की जीवन शैली की अपेक्षा आराधना संगीत का अच्छा आनन्द आता है।

आराधना मसीही जीवन का हिस्सा नहीं है ये मसीही जीवन है, *"इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर*

विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओः यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)।

विजयी मसीहत के लिये सच्ची, हृदय स्पर्शी आराधना आवश्यक है। हमें "आत्मा से आत्मा" परमेश्वर से संचार करने की आवश्यकता है, ये उस समय हो सकता है जब हम झुक कर उसके सामने प्रशंसा करते हैं। हमारी बाहरी आराधना को जो अन्दर है सीधे परिणाम स्वरूप आना चाहिये – पूर्ण रूप से समर्पित हृदय परमेश्वर पिता, प्रभु को और राजा को, नहीं तो हमारी आराधना बिना शक्ति के होगी, *"वे भक्ति का भेष तो धरेंगे पर उसकी शक्ति को न मानेंगे"* (2 तीमुथियुस 3:5)।

हम किस प्रकार भिन्नता बाहरी और अन्दर हृदय की आराधना में पहचान सकते हैं? सच्ची आराधना का नाप क्या है?

आत्मिक आराधना सप्ताह में एक बार से अधिक कलीसिया में की जाती हैं। आत्मिक आराधना को हमारे प्रतिदिन का समर्पण हमारे जीवनों में मसीह यीशु की प्रभुत्व में करना चाहिये और हमारी इच्छा उसके आज्ञाकारी होना हैं। सच्ची आत्मिक आराधना का माप 2 कुरिन्थियों 3:18 में पाया जाता हैः *"परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है जिस प्रकार दर्पण में तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं"* (2 कुरिन्थियों 3:18)।

सेवकाई का सबसे महत्वपूर्ण फल परिवर्तित जीवन है। पास्टर और अगुवा होकर हमें एक लगातार वातावरण बनाये रखने की आवश्यकता है जहां लोग परमेश्वर से मिल सकते हैं। परमेश्वर की स्तुति प्रशंसा करने के लिये समय होना चाहिये और तब उस पर लोगों के जीवनों में काम करने के लिये इन्जजार करो। सच्ची आत्मिक आराधना मसीह के प्रभुत्व में पूर्ण समर्पण है और हमारे

प्रतिदिन के जीवन के कार्यों में उसकी उपस्थिति के लिये खुलापन है।

4. कलीसिया के प्रति समर्पण का महत्व

"और प्रेम और भले कामों में उसकाने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करो और एक दूसरे के साथ इक्ट्ठा होना न छोड़ें जैसे कि कितनों की रीति पर है पर एक दूसरे को समझाते रहें और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो" (इब्रानियों 10:24,25)।

स्थानीय चर्च एक इमारत नहीं है, चर्च (कलीसिया) विश्वासियों का झुण्ड है जो एक सिर के आधीन जुड़ा हुआ है वह मसीह यीशु है (1 कुरिन्थियों 12, इफिसियों 1:22–23)।

जब एक कलीसिया की अगुवाई करते हैं तो तीन आवश्यक चीज़ें हैं जिसे उपस्थिति होना चाहियेः

क) कलीसिया बाइबल आधारित होना चाहिये। *"पर पहले ये जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उबारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे"* (2 पतरस 1:20–21)।

बाइबल आधारित कलीसिया को पहचानने के कई तरीके हैं। पूरी शिक्षा पदों और बाइबल के हिस्से से आयेगी। मंडली अपनी बाइबलों को लेकर चलेगी और इस्तेमाल करेगी। पास्टर्स और अगुवे परमेश्वर के वचन के विश्वासयोग्य विद्यार्थी होंगे। कोई ऐसी पुस्तक या माध्यम नहीं हुआ है जो इसका विकल्प हो सकता, या उसमें जोड़ा जा सकता या परमेश्वर के वचन से निकाला जा सकता है। समस्त रूप से आत्मिक रूप से स्वस्थ सभी शिक्षा की बुनियाद परमेश्वर का वचन होगा।

ख) कलीसिया को धार्मिक सिद्धान्तों में मज़बूत होना चाहिये। *"क्योंकि ऐसा समय आयेगा कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुतेरे उपदेश बटोर लेंगे। और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगायेंगे"* (2 तीमुथियुस 4:34)।

कोई भी धार्मिक सिद्धान्त जो सिखाये गये या आदर्श हुए उन्हें अपनी बुनियाद परमेश्वर के वचन पर रखना चाहिये। कलीसिया को अपना "विश्वास वचन" होना चाहिये जो उन धार्मिक सिद्धान्तों की सूचि है जिन पर वे विश्वास करते हैं और बाइबल आधारित संदर्भों द्वारा सहारा पाते हैं।

ग) कलीसिया को विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के काम को पहचानना चाहिये। *"क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मंदिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो"* (1 कुरिन्थियों 6:19)।

किसी भी परीक्षा से सावधान रहो कि कलवरी के क्रूस पर मसीह यीशु द्वारा अनुग्रह के समाप्त किये कार्य में कुछ जोड़ा जाये। इस धोखे से आपको सतर्क करने का सबसे आसान चिन्ह है कि व्यवस्था की बातों से अत्याधिक फन्दे में फंसना – नियमों और व्यवहारों के कानूनों, वस्त्र और बोलने आंतरिक, आत्मिक परिवर्तन की अपेक्षा अधिक जोर दें।

ये बाहरी जोर "कानूनवाद" कहलाता है। ये व्यर्थ बाहरी विकल्प असली आंतरिक परिवर्तन करने वाले पवित्र आत्मा का कार्य हैं। *"क्या तुम ऐसे निबुद्धि हो कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे?"* (गलातियों 3:3)।

परमेश्वर समरूपता की ओर नहीं देख रहा जो केवल बाहरी बदलाव है, इसके बदले परमेश्वर मूल (असली) परिवर्तन की इच्छा

करता है जो अन्दर (हृदय) से बदलाव है। ये अन्दर का बदलाव अक्सर व्यवहार में बदलाव यानी बाहरी दिखावट में भी बदलाव के रूप में परिणाम में होता है (कुलुस्सियों 2)।

हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पवित्र आत्मा उसके नवीनीकरण और परिवर्तन के हथियारों के साथ बाइबल, प्रार्थना, आराधना और कलीसिया इस योग्य है कि शक्तिशाली परिवर्तन के कार्य को पूरा करने योग्य है किसी में भी जो अपने आप को मसीह यीशु के प्रभुत्व में समर्पित करेगा। वह हम पर कभी भी नहीं त्यागेगा यदि हम उसे नहीं त्यागेंगे।

"इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूं पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है जानता हूं और मुझे निश्चय है कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है" (2 तीमुथियुस 1:12)। 🕮

अध्याय 9

कुछ अतिरिक्त सिद्धान्त

जैसा हम बाइबल आधारित/मसीही संसार का दृष्टिकोण को विकसित करते हैं और दूसरों को भी वहीं करने की अगुवाई करते हैं, कुछ खास सिद्धान्त दिमाग में रखने लायक हैं।

1. परमेश्वर के साथ या परमेश्वर के लिये कार्य करना!

दूसरों को उनकी समझ और विश्वास करने में प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। हमें उन्हें परमेश्वर पर और भरोसा उसके वचन पर रखने के लिये उनकी सहायता करना। ये धार्मिक नियमों की पद्यति उत्पन्न करने के द्वारा नहीं प्राप्त कर सकते कि वे उनका पालन करें। बल्कि हमारे प्राथमिक लक्ष्य पास्टर्स और अगुवे होकर दूसरों की मसीह यीशु के साथ असली सम्बंध होने में सहायता करें। ये सही है कि हम भी मसीह के साथ सम्बंध रखें!

एक सम्बंध परमेश्वर के साथ कार्य करने को बताता है। वह हममें कार्य करने की इच्छा रखता है, अपने पुत्रों और पुत्रियों में। हम इस प्रक्रिया में उसका सहयोग अपने व्यक्तिगत जीवनों में पवित्र आत्मा के कार्य के लिये देकर करते हैं, साथ ही कलीसिया में भी। इस बात में हम परमेश्वर के साथ सहभागिता करते हैं (यूहन्ना 15:15)।

इस विरोधाभास में परमेश्वर के लिये कार्य करना एक

स्वामी/कर्मचारी के सम्बन्ध को प्रगट करता है। विश्वासी होकर हम राजा के पुत्र और पुत्रियां हैं। उसके मित्र हैं नौकर नहीं (यूहन्ना 15:9–17)। हम आनन्द से उसकी सेवा करते हैं प्रेम और सम्बंध से बाहर। हमारी नागरिकता स्वर्ग से है और हम अपने राजा के राजदूत हैं!

2. जैसा मनुष्य सोचता है. . .

ये वो नहीं जो आप कहते हो पर वह जो वास्तव में विश्वास करते हो वहीं निश्चय करता कि आप कौन हैं: *"क्योंकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है वैसा वह आप हैं . . ."* (नीतिवचन 23:7)।

जीवन के बहुत सी जांच जो परमेश्वर हम पर आने देता है कि हम अनुभव करें उसका एक प्राथमिक अभिप्राय है: पुष्टि करना या इंकार करना, जो वह हम कहते और हम वास्तव में विश्वास करते हैं कि हम विश्वास करते हैं (यूहन्ना 6:6; व्यवस्थाविवरण 8:2)।

हमारे कार्य हमारे शब्दों से अधिक जोर से बोलते हैं। परमेश्वर उन स्त्री/पुरुषों की तलाश में नहीं हैं जो साधारण रूप से सत्य को जानते हैं पर उनको जो सत्य को करते हैं, *"परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिसने अपना घर बालू पर बनाया और मेह बरसा और बाढ़ें आईं और अंधियां चलीं और उस घर पर टक्करें लगी और वह गिरकर सत्यानाश हो गया"* (मत्ती 7:26–27)।

हमारे कार्य बाइबल आधारित सिद्धान्तों से मेल खाते हुए होना चाहिये। ऐसा कहा गया है कि जैसे मुनष्य सोचता है, वह कार्य विकसित करेगा जैसा वह करता है, वह आदत का विकास करेगा जैसे वह आदत बनाता है तो वह अपना चरित्र बनायेगा, जैसा मनुष्य चरित्र बनाता है वह अपनी मंजिल बनायेगा – हमारी अन्तिम मंजिल "मसीह के स्वरूप मे होगी" (रोमियों 8:29)।

3. "आमीन" या परमेश्वर के साथ सहमत होना

ये जांच करना महत्वपूर्ण है कि जो हम विश्वास करते और तब

पहचानते कि क्या परमेश्वर के वचन बाइबल के साथ सही बैठते या नहीं। वो ही बुनियाद है जिस पर अपना पूर्ण विश्वास बनाते हैं। वो जिसे परमेश्वर स्वीकार करता है, हमें स्वीकार करना चाहिये। जिसे परमेश्वर तिरस्कार करता हमें तिरस्कार करना चाहिये। हमें उसके साथ सहमत होना चाहिये (आमीन) (आमोस 3:3)। ऐसा समय होगा जब हमारा व्यक्तिगत अनुभव या संसार का प्रशिक्षण हमारी समझ के साथ झगड़ा/संघर्ष करेगा जो बाइबल हमसे चाहती है, ये ही समय है जब हमार विश्वास परखा जाता है।

आइये, तब हम प्रेरित पौलुस का रवैया अपनायें:– *"इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूं, पर लजाता नहीं क्योंकि मैं उसे जिसकी मैंने प्रतीति की है जानता हूं और मुझे निश्चय है कि वह मेरी छाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है"* (2 तीमुथियुस 1:12,13)।

4. मसीह के लिये राजदूत

हर विश्वासी के लिये इस धरती पर एक प्राथमिक जिम्मेवारी ये है कि मसीह के लिये एक राजदूत की तरह जिये। हमें ये अधिकार दिया गया है कि हम राजा मसीह यीशु को दूसरों के सामने प्रस्तुत करें (2 कुरिन्थियों 5:20)। इसलिये हमारा व्यक्तिगत परिवर्तन इतना अधिक महत्वपूर्ण है! कि हम मसीह को कैसे सही तरह से प्रस्तुत कर सकते, यदि हमारा विश्वास या जीवन उसके साथ एक मिलान में न हो"। हमें सब समय उसके राजदूत होना है – सेवकाई के समय ही नहीं पर घर पर कार्य स्थल पर स्कूल में या जहां कहीं भी हम हों, जैसा हम उसकी नाईं बन जाते और आत्मा के द्वारा अगुवाई पाने के लिये चेतनामय हैं। हम चारो ओर संसार में उसका अधिक प्रतिनिधित्व करेंगे।

5. सत्य के खोजी

"तेरा वचन सत्य है, उन्हें अपने सत्य से शुद्ध कर" (यूहन्ना 17:17, भजन 119:160)। हमें सत्य के खोजी होना होगा जैसा बाइबल में बनाया गया है।

सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा, एक झूठ आपको बंधन में डाल देगा! *"तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा"* (यूहन्ना 8:32)।

एक आधा सत्य झूठ है। कुछ या तो सत्य है या फिर कुछ नहीं। शैतान इसे समझता है और अक्सर नाश करना चाहता है या सत्य को मोड़ देता है परीक्षा करने के लिये या हमें धोखा देने के लिये हम वो सब जो विश्वास करते हैं और अभ्यास में लाते हैं इसे पूरी तरह बाइबल के साथ मिलना चाहिये।

6. हमारी नागरिकता

याद रखें कि मसीह यीशु में विश्वासी होकर हमारी नागरिकता स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20)। हमारा संसार का दृष्टिकोण स्वर्गीय बातों का होना चाहिये। इसका मतलब है कि जिस संस्कृति में हम रहते हैं या जो रीति–रिवाज़ हैं वे दूसरे स्तर पर हैं इस तथ्य से कि हमारा घर और राष्ट्रीयता/नागरिकता अब स्वर्ग से है।

हम मेक्सिकन, इन्डियन, अफ्रीकन, अमेरिकन, यूरोपियन या किसी दूसरी नागरिकता के नहीं हैं पर प्रथम हम मसीही हैं, हमारा राष्ट्रीय देशभक्ति, विश्वास और रीति रिवाज़ दूसरे दरजे की है ये हमारी मसीही पहचान में।

पास्टर से पास्टर तक

एक बार मैं पास्टरों के झुण्ड को विषय "प्रतिष्ठा" पर शिक्षा दे रहा था। अन्त में मैंने ये बयान किया कि चोरी करना हमेशा गलत है। भले ही उसका आकार जो भी हो या कितनी ही कीमत का हो। एक पास्टर ने टिप्पणी की, "इस देश में यह दस्तूर है कि जब कोई कुछ छोड़ जाता है जैसे हाथ की घड़ी और चला जाता है तो वह किसी के लिये भी उठा लेने के लिये उपलब्ध है। जो भी उठा सकता उसे रख सकता है भले ही वे जानते हैं कि कौन इसे छोड़ गया था"। मैंने उनको थोड़ा धक्का पहुंचाया जब मैंने उत्तर दिया, "कि ये आगे को आपका देश नहीं है और इस देश के रीति रिवाज आपके यहां की तरह नहीं लागू होते। अब आपकी नागरिकता स्वर्ग में है और हम मसीही होकर स्वर्ग के नियमों के

अनुसार जीते हैं। परमेश्वर कहता है, "तुम चोरी न करो" अब ये आपका रीति रिवाज़ है"। पास्टरों ने एकदम वचन के सत्य को पहचाना जब उन्होंने अपने रीति रिवाज़ को परमेश्वर के वचन के स्तर से जांचा।

7. धार्मिक सिद्धान्तों से संस्कृति को अलग करना

जैसे हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो हमें सावधान होना चाहिये कि क्या सांस्कृतिक (स्थानीय) है और क्या धार्मिक सिद्धान्त (समस्त संसार) का है। नये नियम में चार सुसमाचार हैं। हर एक विभिन्न मंडलियों/श्रोताओं के लिये लिखे गये हैं (स्थानीय) पर हर एक सुसमाचार में एक ही संदेश है वह संदेश लिखा हुआ था, फिर भी जिससे कि श्रोतागण उसे प्राप्त कर समझ सकें:

- मत्ती का सुसमाचार एक यहूदी द्वारा दूसरे यहूदियों को बताने के लिये लिखा गया।
- मरकुस का सुसमाचार एक यहूदी द्वारा अन्य जातियों के लिये लिखा गया।
- लूका का सुसमाचार एक अन्यजाति द्वारा दूसरे अन्य जातियों को लिखा गया।
- यूहन्ना का सुसमाचार इब्रानियों की रीति रिवाज़ और मन के लिये लिखा गया।
- हर एक में संचार करने के लिये सावधानी बरती गई कि उन संस्कृतियों को लोग और रीति रिवाजों को समझ सकें (संसार का दृष्टिकोण) पर सुसमाचार का संदेश कभी नहीं बदला गया या समझौता किया गया कि वह संस्कृति में और अधिक स्वीकृत हो।
- रोमियों की पुस्तक रोमियों के लिये उनके विचारों पर लिखी गई थीं।
- इब्रानियों की पुस्तक इब्रानियों की रीति रिवाजों और मन के लिये लिखी गई थी।

पास्टर से पास्टर तक

पास्टर और अगुवे होकर हमें बहुत सावधान रहना चाहिये कि कहीं हम सामन्वयवाद में न गिर जायें। सामन्वयवाद समिश्रण होना/मिल जाना है या दूसरे विश्वासियों के साथ समझौता करना है जिससे कि अधिक रूप से लागू किया जा सके (कम रूकावट) दूसरों के लिये। हमें कभी नहीं बदलना चाहिये और वर्तमान संस्कृति या व्यवहार में सही बैठने के लिये परमेश्वर के वचन के साथ समझौता नहीं करना चाहिये।

उदाहरण के लियेः

ये कहना कि यीशु केवल भविष्यद्वक्ता है या कई देवताओं में से एक है इसलिये कि संस्कृति बहुत से देवताओं में विश्वास करती है, ये धार्मिक सिद्धान्तों में एक गम्भीर समझौता होगा, और इसलिये ये विधर्म है। ये गड़बड़ी और बन्धन की ओर ले जायेगा। एक ही ईश्वर है, एक ही उद्धारकर्ता है और उस सत्य की घोषणा करनी चाहिये।

ये कहना कि कलीसिया में महिलाओं को सिर ढांकना चाहिये (देखें 1 कुरिन्थियों 11:1–16) यह संस्कृति को प्रगट करती है। साधारण रूप से स्थानीय रीति रिवाज परमेश्वर को आदर देना है। ये धार्मिक सिद्धान्त नहीं है।

8. अनजान न रहें

पौलुस प्रेरित कुरिन्थियों की कलीसिया को अपने 12वें अध्याय में प्रेम पूर्वक डांट आत्मिक वरदानों के प्रति अज्ञात न रहें ये देता है (1 कुरिन्थियों 12:1)। ये सिद्धान्त कि "अनजान/अज्ञात न रहो" हमारे संसार के दृष्टिकोण के बहुत से क्षेत्रों में लागू होते हैं। अनजान होना मतलब न जानना या किसी तथ्य या सत्य को जानना।

उदाहरण के लिये, एक क्षेत्र है जहां ये आम संस्कृतिक दस्तूर है कि पति अपनी पत्नियों को मार मीट करते हैं। एक हाल ही की कान्फ्रेन्स में एक पादरी ने इफिसियों 5 से सिखाया कि जिस प्रकार

मसीह ने प्रेम किया आप भी अपनी पत्नियों से प्रेम करो। पास्टर के ऊपर पवित्र आत्मा का कायल करना आया और वे पश्चाताप में रोने लगे। वे ऐसी संस्कृति में पाले गये थे जिसमें पत्नियों को पीटा जाता था और वे वहीं करते जो उनके पिता और दादा करते थे। उन्होंने ये नहीं पहचाना कि ये प्रथा बाइबल आधारित नहीं है, पत्नी के लिये हानिकारक है और इससे परमेश्वर अप्रसन्न होता है।

इन पास्टरों का संसारिक दृष्टिकोण एकदम बदल गया। उनको बाइबल का व्यक्तिगत प्रगटीकरण मिला। परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा के कार्य ने उन्हें संस्कृतिक बन्धनों से स्वतंत्र कर दिया और धार्मिकता की स्वतंत्रता प्रेम में कर दिया हालिलूय्याह!

क्या आप मुर्गी हो या उकाब?

एक बार एक किसान था जिसने बहुत सी मुर्गियां पालीं। एक दिन जैसे वह खेत में होकर जा रहा था उसने एक बड़ा अण्डा पाया। आश्चर्य किया कि किस प्रकार का जानवर है जिसने ये बनाया, वह अपने घर ले गया कि कोई मुर्गी उस पर बैठकर से देगी। एक विशेष मुर्गी ने उस अण्डे को स्वीकार कर लिया हांलाकि वह और दूसरे अण्डों से अलग ही बड़ा था।

समय की प्रक्रिया में मुर्गी के अण्डे सेने लगे – हर अण्डे में से छोटा पीला चूज़ा निकलने लगा। एक अजीब नया अण्डा आखिरी था और उसमें से एक बड़ी मुर्गी, बड़े पांव के साथ मटमैले रंग का निकला। जैसे दूसरी मुर्गियों ने इस बड़े बच्चे को झुण्ड में शामिल होते देखा उन सभों ने सोचा, "कि ये सबसे बदसूरत दिखने वाली मुर्गी है"!

छोटी चिड़िया के लिये जीवन कठिन था। यद्यपि उसने अपने आप को सही बैठाने का प्रयत्न किया वह अजीब मुर्गियों से भिन्न था। उसे दूसरी मुर्गियों के समान चलने में परेशानी थी और उसके लिये उसकी टेढ़ी चोंच से भोजन लेना एक चुनौती थी। अधिक

समय नहीं हुआ जब दूसरे मुर्गी के बच्चे उससे अलग हो गये क्योंकि वह अजीब दिखता था। उसने अपने आप को अकेला तिरस्कृत महसूस किया।

एक दिन जब वह सूर्य की ओर देख रहा था, इस छोटी चिड़िया ने दो सुन्दर चिड़ियों को आकाश में उड़ते देखा। ऐसा लगता मानो वे उसके चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं और मुर्गियों से अलग सी आवाज लगा रहे हैं। उनकी पुकार बड़ी आकृर्षित थी जैसे मानो वे निमंत्रण दे रहे हैं "आओ हमारे साथ उड़ो" वे चिड़िया कई दिन तक वहां सिर के ऊपर उड़ती रहीं और तब लोप हो गईं।

उस समय से वह छोटी चिड़िया उड़ने के लिये सोचने लगी, पर वह जानता था कि मुर्गियां उड़ नहीं सकतीं, मुर्गियां धरती की हैं, स्वर्ग/आकाश की नहीं!

तब एक दिन जब कोई नहीं देख रहा था इस चिड़िया ने अपने पंख फैलाये और फड़फड़ाया, आश्चर्यरूप से वह धरती से ऊपर उठ गया, अनुग्रह से और शक्तिशाली रूप से पर वह ऊपर उड़ने से डरा। "दूसरी मुर्गियां क्या कहेंगी?"

तो वह डर के मारे उड़ने का सपना देखने लगा; वह उन चिड़ियों की तरह आकाश में उड़ना चाहता था और आकाश की चिड़िया बनना चाहता था।

जैसे दिन गुजरते गये वे बड़ी चिड़ियाएं लौटीं। वे फिर सिर के ऊपर चक्कर लगाती रहीं, वे हवा में बहुत ऊंचे पर थीं और अभी भी वे उनके बुलाने की आवाज सुन सकता था "आओ, हमारे साथ उड़ो"। तब कुछ अद्‌भुत इस छोटी चिड़िया के साथ होने लगा, उसने अचानक अपने कांधे भटकाये, अपने पंख फैलाये. . . और उस ताकत से जो उसके अन्दर थी नहीं जानता था वह उड़ने लगा!

हमारी नागरिकता स्वर्ग में है। बाइबल की परिवर्तन करने की शक्ति और कार्य और पवित्र आत्मा की अगुवाई नकारात्मक असर पर विजय पाने के लिये काफी है जो संसार का हमारे संसार के दृष्टिकोण पर है।

अपनी आंखें सूर्य की ओर लगा शीघ्र ही वह उन दोनों चिड़ियों के साथ उड़ने लगा। जैसे वह पहुंचा, उसने पहचाना कि वह उनके समान है। वे सुन्दर, शक्तिशाली और तेजस्वी/राजज्ञी थे। अचानक उस पर प्रगटीकरण आया "मैं मुर्गी नहीं, मैं तो उकाब हूं!" उसकी आत्मा आनन्द से भर गई कि वह कैसे जहां उसका स्थान है पहुंच गया। उसके जीवन में पहली बार उसने सच्चा प्रेम और स्वीकृति पाई।

उनमें से एक परिपक्व उकाब ने कहा, "हमें आश्चर्य हो रहा था कि तुम्हें हमारे साथ मिलने में इतनी देर क्यों लगी"।

छोटे उकाब ने उत्तर दिया, "मुझे मालूम नहीं था कि मैं उकाब हूं" क्योंकि मैं मुर्गियों के बीच पैदा हुआ था और मुर्गियों के बीच में रहा, मैंने सोचा मैं मुर्गी हूं"।

बड़े उकाब ने उत्तर दिया, "तुम मुर्गी की तरह काम करते थे क्योंकि तुमने मुर्गी की तरह सोचा पर अब जब तुम सत्य को जानते हो। सत्य ने तुम्हें स्वतंत्र किया है कि तुम आज़ाद उकाब हो। यही तो करने के लिये आप पैदा हुए हो। तुम्हारा घर मुर्गियों के दड़बे में नहीं है पर यहां आकाश में है, आओ हमारे साथ उड़ो . . . *"परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं वे नया बल प्राप्त करते जायेंगे वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे छोड़ेंगे और श्रमित न होंगे चलेंगे और थकित न होंगे"* (यशायाह 40:31)।

मसीही लाग मुर्गी नहीं उकाब होने के लिये बुलाये गये हैं यद्यपि हम संसार में हैं, हम इस संसार के नहीं हैं। हमारी नागरिकता स्वर्ग में है। बाइबल की परिवर्तन करने की शक्ति और कार्य और पवित्र आत्मा की अगुवाई नकारात्मक असर पर विजय पाने के लिये काफी है जो संसार का हमारे संसार के दृष्टिकोण पर है।

ये सत्य में एक उत्तेजित रोमांच है जो अपने स्वयं को देखना आरम्भ करता है हमारे परिवार, हमारी कलीसियाएं और हमारी सेवकाइयां जैसा उन्हें परमेश्वर देखता है। यही तो वह बाइबल आधारित संसार का दृष्टिकोण उपलब्ध कराता हैः ये पहचानता है कि हमारी नागरिकता स्वर्ग में है, जिस संसार में हम रहते अधिक स्वर्गीय विचारों से और अपना स्थान परमेश्वर के राज्य में पाना और उसी प्रकार करना जैसे हम मसीह के स्वाभाव में उसकी आत्मा के द्वारा बदल गये हैं।

मेरी आपके लिये ये प्रार्थना है किः *"और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है"* (इफिसियों 1:18) आमीन! 🕮